युक्रांद

अप्रेल–मई १९७५

मूल्य : २.५० रु.

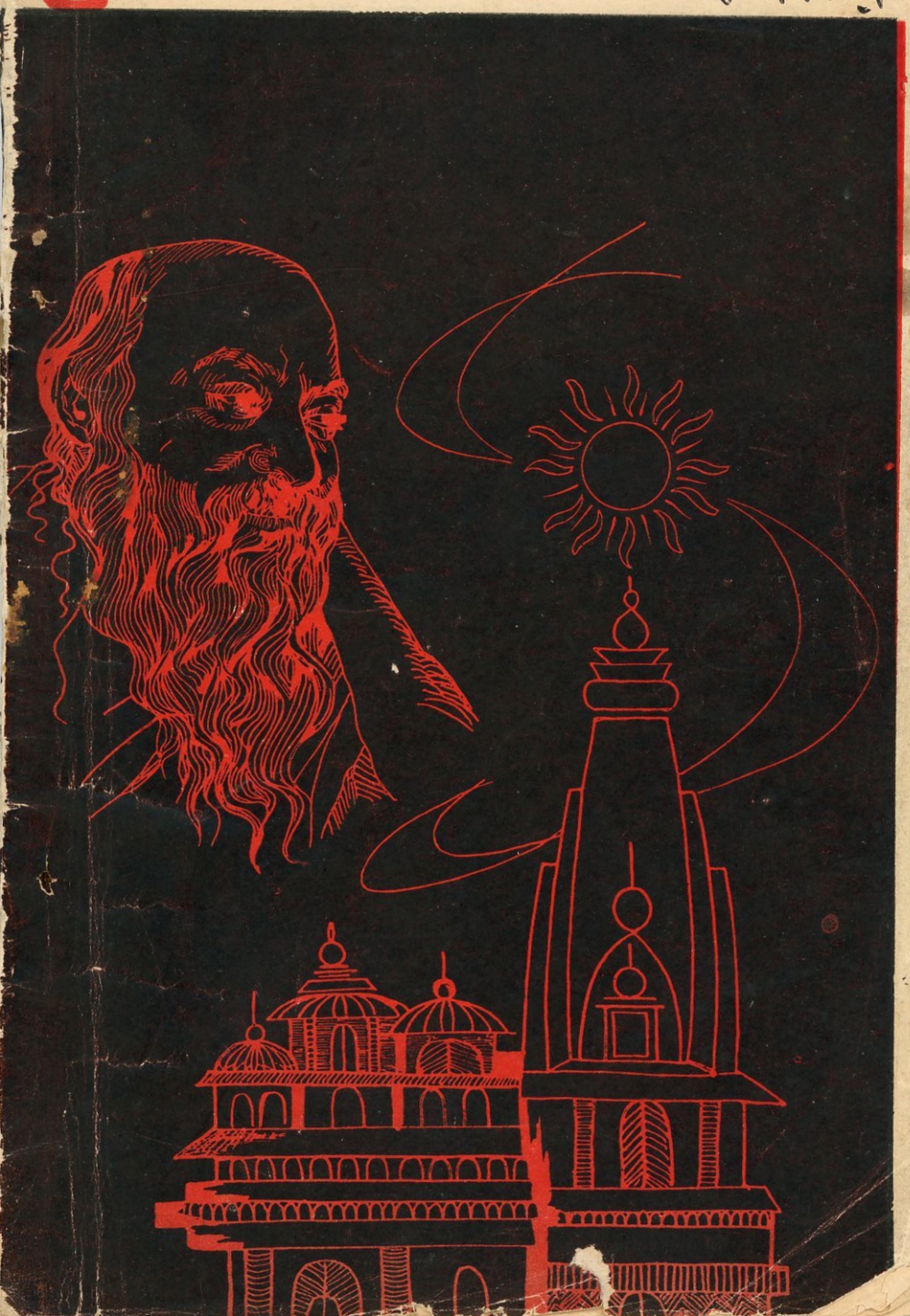

भगवान रजनीश-साहित्य

१	ताओ उपनिषद्	४०-००
२	गीता-दर्शन (अध्याय६)	३०-००
३	महावीर मेरी दृष्टि में	३०-००
४	महावीर वाणी भाग १	३०-००
५	महावीर वाणी भाग २	३०-००
६	जिन खोजा तिन पाइयां	२०-००
७	मैं मृत्यु सिखाता हूं	२०-००
८	इशावास्योपनिषद्	१५-००
९	निर्वाणोपनिषद्	१५-००
१०	गीता-दर्शन अध्याय: ७	१२-००
११	प्रेम है द्वार प्रभु का	९-००
१२	घाट भुलाना बाट बिनु	७-००
१३	नव-संन्यास क्या ?	७-००
१४	समुन्द समाना बुंद में	७-००
१५	सूली ऊपर सेज पिया की	७-००
१६	सत्य की पहली किरण	६-००
१७	मैं कहता आंखन देखी	६-००
१८	क्रांति बीज	६-००
१९	अन्तर्वीणा	६-००
२०	ढाई आखर प्रेम का	६-००
२१	प्रभु की पगडंडियां	६-००
२२	संभावनाओं की आहट	६-००
२३	संभोग से समाधि की ओर	६-००
२४	प्रेम के फूल	५-००
२५	अस्वीकृति में उठा हाथ (भारत-गांधी और मेरी चिंता)	५-००
२६	ज्यों की त्यों धरि दीन्हीं चदरिया	५-००
२७	साधना-पथ	५-००
२८	अन्तर्यात्रा	५-००
२९	सत्य की खोज	५-००
३०	मिट्टी के दिए	५-००
३१	मुल्ला नसरुद्दीन	५-००
३२	गहरे पानी पैठ	७-००
३३	काम-योग धर्म और गांधी	५-००
३५	शून्य के पार	४-००
३६	पथ के प्रदीप	६-००
३७	शांति की खोज	३-५०
३८	मैं कौन हूं	३-००
३९	शून्य की नाव (सत्य का सागर शून्य की नाव)	३-००
४०	नए संकेत	२-००
४१	पथ की खोज (सिंहनाद का नया संस्करण)	२-००
४२	अज्ञात की ओर	२-००
४३	सत्य के अज्ञात सागर का आमंत्रण	२-००
४४	क्रांति की वैज्ञानिक प्रक्रिया	१-५०
४५	ज्योतिष : अद्वैत का विज्ञान	१-५०
४६	ज्योतिष : अर्थात अध्यात्म	१-५०
४७	जनसंख्या विस्फोट : समस्या और समाधान	१-५०
४८	ध्यान एक वैज्ञानिक दृष्टि	१-५०
४९	प्रगतिशील कौन	१-५०
५०	प्रेम और विवाह	१-५०
५१	विद्रोह क्या है ?	१-५०
५२	मेडीसिन और मेडीटेशन	१-२५
५३	सारे फासले मिट गए	१-२५
५४	अमृत क्षण	१-००
५५	अहिंसा दर्शन	१-००
५६	अज्ञात के नए आयाम	१-००
५७	धर्म और राजनीति	१-००
५८	बिखरे फूल	१-००
५९	मन के पार	१-००
६०	युवक और यौन	१-००
६१	कुछ ज्योतिर्मय क्षण	१-००
६२	अवधिगत संन्यास	०-३०
६३	क्रांति की नई दिशा : नई बात (नारी और क्रांति)	०-३०
६४	क्रांति के बीच सबसे बड़ी दीवार (भारत के साधु-सन्त)	०-३५
६५	संस्कृति के निर्माण में सहयोग	०-३०

भगवान रजनीश की सृजनात्मक युग क्रांति दर्शन की मासिक संकलन पत्रिका

युक्रांद

वर्ष – ६ अंक – १०-११

मूल्य एक प्रति २-५० रु.

„ वार्षिक : १५-०० रु.

अप्रेल-मई १९७५

मानसेवी संपादक मंडल :

○ अरविन्दकुमार

○ डॉ. उर्मिला, पी-एच.डी.

○ आलोक पाण्डे

□ स्वामी धर्म सरस्वती, व्यवस्थापक

युक्रांद

अप्रेल-मई

संयुक्तांक

अनुक्रमणिका

प्रवचन : संकलन

: ३ :	आलोचक	बोध कथाओं से
: ४ :	आत्म ज्ञान	उद्बोधनों से
: ५ :	सहज स्वभाव	स्वामी योग चिन्मय
: २६ :	अनमोल वचन	रामनाथ शर्मा
: २७ :	क्या है रहस्य जीवन का	स्वामी नरेन्द्र बोधिसत्व
: ४६ :	अनमोल मोती	राकेशकुमार घोष
: ५३ :	ध्यान पथ शिविर	स्वामी धर्म रक्षित
: ५७ :	जम्हाई क्यों ?	साधु ईश्वर समर्पण
: ६५ :	उद्बोधन	एन० जी० वखारिया
: ७१ :	मिलें मुल्ला नसरुद्दीन से	
: ७५ :	सद्गुरु	स्वामी नरेन्द्र बोधिसत्व

गीत : काव्य

त्यागो ! त्यागो !—स्वामी आनन्द बोधिधर्म : २५ : बस तू ही—जगदीश आर्य : ५२ : रजनीश : एक विश्राम—माधव जैन 'अन्तस' : ५६ : श्री रजनीश के प्रति—स्वामी अगेह भारती : ६४ : बड़ा ही रहम प्यासे पे हुआ है—माधव जैन 'अन्तस' : ७३ : प्यार में... स्वीकार में—स्वामी योग प्रीतम : ७४ :

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक : अरविन्दकुमार, ७९०, राइट-टाउन, जबलपुर.
मुद्रण : अशेष प्रिन्टर्स, ७८१, राइट टाउन, जबलपुर फोन 2957 P.P.

472, Ranjit Tower
Bun
JAMNAGAR ...01

बोध कथाओं से

आलोचक

★

जो जीवन में कुछ भी नहीं कर पाते वे अक्सर आलोचक बन जाते हैं। जीवन-पथ पर चलने में जो असमर्थ हैं, वे राह के किनारे खड़े हो दूसरों पर पत्थर ही फेंकने लगते हैं। यह चित्त की बहुत रुग्ण दशा है। जब किसी की निंदा का विचार मन में उठे तो जानना कि तुम भी उसी ज्वर से ग्रस्त हो रहे हो। स्वस्थ व्यक्ति कभी किसी की निन्दा में संलग्न नहीं होता। और जब दूसरे उसकी निन्दा करते हों तो उन पर दया ही अनुभव करता है। शरीर से बीमार ही नहीं, मन से बीमार भी दया के पात्र हैं।

●

नार्मन विन्सेंट पील ने कहीं लिखा है: मेरे एक मित्र हैं, सुविख्यात समाज-सेवी। कई बार उनकी बहुत निन्दापूर्ण आलोचनायें होती हैं, लेकिन उन्हें कभी किसी ने विचलित होते नहीं देखा। जब मैंने उनसे इसका रहस्य पूछा तो वे मुझसे बोले—जरा अपनी एक अंगुलि मुझे दिखाइये। मैंने चकित भाव से अंगुलि दिखाई। तब वे कहने लगे—देखते हैं! आपकी एक अंगुलि मेरी ओर है तो शेष तीन अंगुलियां आपकी अपनी ही ओर हैं। वस्तुतः, जब भी कोई किसी की ओर एक अंगुली उठाता है तो उसके बिना जाने उसकी ही तीन अंगुलियां स्वयं उसकी ही ओर उठ जाती हैं। अतः जब कोई मेरी ओर दुर्लक्ष्य करता है तो मेरा हृदय उसके प्रति दया से भर जाता है, क्योंकि वह मुझसे कहीं बहुत अधिक अपने आप पर प्रहार करता है।

●

जब कोई तुम्हारी आलोचना करे तो अफलातूं का एक अमृत वचन जरूर याद कर लेना। उसने यह सुनकर कि कुछ लोग उसे बहुत बुरा आदमी बताते हैं, कहा था—मैं इस भांति जीने का ध्यान रखूंगा कि उनके कहने पर कोई विश्वास ही नहीं लायेगा।

**

आत्म-ज्ञान

(भगवान श्री के प्रेरक उद्‌बोधनों में से)

सांख्य कहता है कि ज्ञान है आपके पास, वो आपका स्वभाव है, कोई अर्जन नहीं करना है, वह आप ही हैं। सिर्फ जानना है, पाना नहीं है। होश से भरना है कि मैं कौन हूं। विश्राम पाने कहीं जाना नहीं है। किसी यात्रा पर जहां खड़े है वहीं मिल जायेगा, एक बार पीछे लौट कर देखना है कि मैं कहां हूं। ज्ञान की किसी से भीख नहीं मांगनी है। कोई ज्ञान सिखायेगा नहीं, ज्ञान तो आपके भीतर ही दबा पड़ा है। ऐसे ही जैसे जमीन के नीचे पानी दबा पड़ा है। जरा मिट्‌टी की परतों को अलग करना है, पानी के फव्वारे छूटने लगेंगे। यह हो सकता है कि कहीं सौ फीट पर हो, कहीं पचास फीट पर हो, कहीं दस फीट पर हो और कहीं दो फीट पर हो। बस यह फर्क हो सकता है मिट्‌टी की परतों का। क्योंकि सभी लोगों ने अलग-अलग जन्मों में अलग-अलग मिट्‌टी की परतों को निर्मित कर लिया है। लेकिन एक बात सुनिश्चित है कि ऐसा कोई जमीन का टुकड़ा नहीं है जिसके नीचे पानी न हो। कितना ही गहरा हो, एक बात पर आश्वासन दिया जा सकता है कि पानी दबा है। चट्‌टान भी आ जाये बीच में तो कोई हर्ज नहीं, पानी तो नीचे है ही। बीच की परत को अलग कर देंगे और उसको उपलब्ध हो जायेंगे। ऐसा ही ज्ञान दबा है। भीतर बस भीतर की यात्रा करनी है।

**

सहज स्वभाव : स्वर्ग के लोभ और नरक के भय से मुक्त

☐ भगवान श्री द्वारा २३ जुलाई ७४ को पूना आश्रम में 'सहज समाधि भली' प्रवचन-माला का तीसरा प्रवचन ☐

☐ संकलन : स्वामी कृष्ण गौतम

☐ संपादन : स्वामी योग चिन्मय

मरियम के बेटे ईसा एक गांव से गुजर रहे थे। उन्होंने देखा कि कुछ लोग राह के किनारे एक दीवाल पर बहुत संतापग्रस्त होकर मुंह लटकाए बैठे हैं।

ईसा ने उनसे पूछा : यह हालत कैसे हुई तुम्हारी ?

उन्होंने कहा : नरक के भय से हम ऐसे हो रहे हैं।

थोड़ा आगे बढ़ने पर ईसा ने कुछ और लोगों को देखा, जो राह के किनारे तरह-तरह के आसनों और मुद्राओं में बैठे हैं। और वे भी बहुत-बहुत उदास हैं।

ईसा ने उनसे भी पूछा : तुम्हारी तकलीफ क्या है ?

उन्होंने कहा : स्वर्ग की आकांक्षा ने हमें ऐसा बना दिया है।

उसी गांव में ईसा और आगे बढ़े, फिर कुछ लोग उन्हें मिले। उन्हें देखकर लगा कि जीवन में उन्होंने बहुत कुछ झेला है; लेकिन वे आनन्द-मग्न हैं।

पूछने पर उन्होंने बताया : हमने हकीकत देख ली; इससे और मंजिलें भूल गईं।

जीवन जीने का ढंग तीन ही प्रकार का हो सकता है। या तो तुम भय के कारण जीओ, तब जीवन होगा—एक दुख, एक पीड़ा, एक सन्ताप। वैसे जीवन में आनन्द के फूल खिलने का कोई उपाय नहीं, वैसे जीवन में शांति भी संभव नहीं; वैसा व्यक्ति भयभीत—कांपता ही रहेगा। उसे सन्तुलन बनाना भी कठिन होगा और भयभीत चाहेगा कि पैदा ही न हुआ होता, तो अच्छा था।

दूसरा ढंग है—लोभ : कि तुम महत्वाकांक्षा से जीओ। कुछ पाने की दौड़-वासना, कुछ उपलब्ध कर लेने का स्वप्न तुम्हें चलाये। तब भयभीत आदमी से तो तुम्हारी हालत थोड़ी बेहतर होगी, लेकिन बहुत बेहतर नहीं। थोड़ी बेहतर होगी, क्योंकि तुम्हारे जीवन में थोड़ी-सी आशा की किरण होगी। तुम कभी-कभी मुस्करा सकोगे। लेकिन तुम्हारी मुस्कराहट के पीछे भी दुख ही छिपा होगा। तुम्हारी मुस्कराहट भी झूठी ही होगी : वह भी सच नहीं हो सकती। तुम्हारी हर हंसी आंसुओं को छिपाने का ढंग होगी। क्योंकि लोभ भय का ही उल्टा रूप है।

भय अतीत से बंधा है, लोभ भविष्य से। भय तुम उसका करते हो जो हो गया। लोभ तुम उसका करते हो, जो होना चाहिए। लेकिन भय या लोभ दोनों ही स्थिति में तुम यहां नहीं होते, वर्तमान में नहीं होते। लोभी व्यक्ति भी उत्तेजित रहता है, क्योंकि उसके भी सारे स्वर्ग 'कल' घटने वाले हैं, अभी घटे नहीं। उसके जीवन में भी शांत विश्राम विराम नहीं होता। क्योंकि दौड़ धक्के दिये जाती है। लोभी एक ज्वर में जीता है—एक बुखार में।

एक तीसरा ढंग भी है जीने का, वह थोड़े से लोगों को उपलब्ध होता है, उन लोगों को जो न तो भय से पीड़ित हैं और न लोभ से आकर्षित, जिन्होंने जीवन का सत्य देख लिया। और जीवन का सत्य यहीं और अभी है। न तो अतीत में है और न भविष्य में।

यहां कुछ डरने को नहीं है, क्योंकि कुछ खोने को नहीं है। भय किस बात का? तुम खो क्या सकते हो? कभी तुम सोचते ही नहीं कि खोने को कुछ भी नहीं है, फिर भी तुम इतने भयभीत हो रहे हो। तुम्हारी हालत उस भिखारी जैसी है, जो रात भर जागता है कि कहीं कोई चोरी न कर ले। और है उसके पास कुछ भी नहीं, जिसकी चोरी हो सके। या तुम्हारी हालत उस नंगे आदमी जैसी है, जो स्नान नहीं करता, क्योंकि, वह कहता है कि स्नान कर लूं तो

कपड़े कहां सुखाऊंगा ? और कपड़े उसके पास हैं ही नहीं।

तुम भयभीत किस बात से हो ? तुम्हारे पास कुछ होता, तो डर भी हो सकता था—खो जाने का। तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है। लेकिन जिनके पास कुछ भी नहीं है, वे भी सोचते हैं कि 'कुछ है' और भय है। कम से कम भय के कारण ऐसा भरोसा बना रहता है कि कुछ हमारे पास है।

जिसने सत्य को देख लिया, वह अपनी शून्यता को भी देख लेगा कि मेरे पास कुछ भी नहीं है। न चोरी हो सकती है, न छीन-झपट हो सकती है, न मैं लूटा जा सकता हूं। मेरे पास कुछ नहीं है। मेरा दीवाला निकलने का उपाय नहीं है। मैं व्यर्थ ही भयभीत हूं।

और जिस दिन तुम जान लेते हो कि तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है, उसी दिन तुम यह भी जान लेते हो कि इस जगत में कुछ पाने का रास्ता भी नहीं है। अन्यथा अभी तक तुमने पा ही लिया होता।

कितने ही जन्मों से तुम दौड़ रहे हो—लोभ की आकांक्षा में। भयभीत हो कि कुछ खो न जाय, जो तुम्हारे पास नहीं है। और आकांक्षा कर रहे हो, कुछ पाने की, जो कि तुम्हारे पास कभी भी नहीं होगा, क्योंकि 'तुम्हारे' अतिरिक्त तुम्हारे पास कुछ भी नहीं हो सकता। तुम ही तुम्हारी सम्पदा हो सकते हो। वह तुम हो—इसी वक्त। उसे पाने के लिए कल तक रुकने की कोई जरूरत नहीं है।

भय और लोभ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। भय मानता है कि कुछ है, जो खो न जाय; लोभ मानता है कि कुछ है नहीं, मिल जाय। लेकिन न तुम्हारे पास कुछ खोने है, को और न तुम कुछ पा सकोगे। यह हकीकत है। तुम शून्य हो और शून्य ही रहोगे। शून्यता तुम्हारा स्वभाव है।

जिसने हकीकत जान ली, जिसने हकीकत को देख लिया, वह भय और लोभ दोनों से मुक्त हो जाता है। और शून्य गगन में, कबीर ने कहा है : अमृत की वर्षा होती है।

जिस दिन तुम जान लेते हो कि न कुछ खोने को है, न कुछ पाने को, उस दिन भय भी गया, लोभ भी गया। उस दिन तुम्हारे जीवन में जो थिरक आती है, वह जो शून्य का नृत्य पैदा होता है, वही समाधिस्थ संत, प्रबुद्ध, जिनकी दशा है।

उस दिन तुम नाचते हो, इसलिए नहीं कि तुमने कुछ पा लिया है; उस दिन तुम नाचते हो—कि न कुछ खोने का उपाय है, न कुछ पाने का। इसलिए मैं व्यर्थ ह

चिन्तित था, चिन्ता मेरी भ्रांति थी। उस दिन तुम नाचते हो, ऐसा कहना भी ठीक नहीं, उस दिन शून्य ही नाचता है।

बुद्ध जिस शांति में बैठे हैं—बोधिवृक्ष के नीचे, वह शांति क्या है? लोभ और भय का विसर्जन। इसलिए बुद्ध ने तो यह भी कहा कि तुम मुझसे मत पूछो कि यदि तुम अच्छा करोगे, तो क्या मिलेगा। कुछ भी नहीं मिलेगा। तुम मुझसे यह भी मत पूछो कि अगर हम बुरा करेंगे, तो क्या खो जायेगा? कुछ भी नहीं खो जायेगा।

न तुम्हारे पुण्य से कुछ मिलने वाला है, न तुम्हारे पाप से कुछ खोने वाला है। तुम जैसे हो, तुम वैसे ही रहोगे। इस बात को थोड़ा ठीक से समझ लें। इस कहानी का उल्लेख ही नहीं किया—ईसा के जीवन में। यह बड़े मजे की बात है। ईसा को मानने वालों ने इस कहानी का उल्लेख ही नहीं किया...ईसा के जीवन में। यह तो मुसलमानों ने, सूफियों ने इस कहानी का उल्लेख किया है। क्यों ईसा के माननेवालों ने यह कहानी छोड़ दी होगी?

यह कहानी बड़ी खतरनाक है; क्योंकि इसका मतलब है कि न स्वर्ग का लोभ अर्थपूर्ण है, न नरक का भय। अगर ये सच है, तो सारी ईसाईयत के आधार गिर जायेंगे। क्योंकि ईसाइयत नरक के भय और स्वर्ग के लोभ पर ही खड़ी है। डराया जा रहा है कि अगर तुमने बुरा किया, तो नरक में सड़ोगे।

और ईसाइयत का नरक बड़ा खतरनाक है। ऐसा नरक किसी का भी नहीं। हिन्दुओं का, मुसलमानों का—सबका नरक है, लेकिन ईसाइयों के नरक से बचना। कहीं भी चले जायें, इतना खतरा नहीं है। क्योंकि ईसाइयों का नरक इटरनल है, शाश्वत है।

हिन्दुओं का नरक तो गणित का हिसाब है। तुमने जितना पाप किया है, उतना दुख। लेकिन ईसाईयत का नरक तुम्हारे पाप के अनुपात में नहीं है। तुमने कितना पाप किया है, यह सवाल नहीं है; तुमने पाप किया, कि तुम अनन्त काल तक नरक में सड़ोगे।

ईसाइयों का जो ईश्वर है, वह कोई न्यायाधीश नहीं मालूम होता। वह तुमसे प्रतिकार लेगा। तुमने पाप किया, तुम उसके शत्रु हो गये। अब यह सवाल न्याय का नहीं है कि तुम्हें कितना दंड दिया जाये। अब तुम सड़ाये जाओगे नरक में।

एक बड़ी अनूठी यहूदी कथा है। एक यहूदी फकीर से किसी ने पूछा कि क्या एक ही नरक से काम न चल

सकता था। क्योंकि यहूदियों ने सात नरक सोचे। जैनों के भी सात नरक हैं। यहूदी फकीर ने कहा, "नहीं, एक से काम नहीं चल सकता था।" उस आदमी ने कहा, "कष्ट ही देना है, तो एक में ही इन्तजाम हो सकता था। सात-सात की क्या जरूरत थी?" उस फकीर ने कहा, "ऐसा है कि अगर एक ही नरक हो, तो कुछ दिन कष्ट पाने के बाद तुम उसके आदी हो जाओगे। फिर उसमें कष्ट न मालूम पड़ेगा; आदत बन जायेगी। दूसरे नर्क में तुम्हें भेजा जायेगा। वहां नये तरह के दुख होंगे; पुरानी आदत टूटेगी; फिर तुम कष्ट पाओगे।"

इसलिए सात नरक हैं, ताकि अदल-बदल की जा सके और तुम कहीं भी आदी होकर दुख को झेलने में समर्थ न हो जाओ। जैसे ही आदत बनी, वैसे ही नरक बदला।

परमात्मा प्रतिकार लेता मालूम पड़ता है—यहूदी, ईसाइयों का। तुमने क्या और कितना पाप किया है, इस हिसाब से कष्ट नहीं दिया जा रहा है। तुमने इन्कार किया, तुम विरोधी थे, तुम परमात्मा के पीछे न चले या तुमने परमात्मा के पैगम्बर को न माना—इसे शत्रुता बनाई जा रही है।

ईसाइयों ने यह कहानी छोड़ ही दी। जीसस के जीवन में जो भी कहानियां हैं, उनमें यही सबसे ज्यादा प्यारी है। लेकिन इसका उन्होंने उल्लेख नहीं किया है। क्योंकि अगर उल्लेख हो, तो ईसाइयत का आधार गिर जाता।

वह कहानी खतरनाक और क्रांतिकारी है। ये यही कर रही है कि तुम अगर स्वर्ग के लोभ से भी पीड़ित हो, तो तुम संसारी हो। अगर तुम इसलिए दान कर रहे हो कि स्वर्ग में इसका प्रतिफल मिलेगा, तो तुम दुकानदार हो। तुम सौदा कर रहे हो। अगर तुम इसलिए वैश्या के द्वार से आंख बन्द करके निकल जाते हो कि नरक जाना पड़ेगा, तो तुम वैश्या के घर जा ही चुके। अगर तुम इसलिए हत्या नहीं करते हो कि तुम सड़ाये जाओगे नरक की कढ़ाओं में, तो तुमने हत्या कर ही दी। हत्या से तुम्हें विरोध नहीं, परिणाम से तुम भयभीत हो। तुम धार्मिक आदमी नहीं हो; तुम व्यवसायी हो। तुम्हारे सोचने का ढंग चालाकी का है—सरलता का नहीं।

अगर तुम्हें पक्का पता चल जाय कि कोई नरक नहीं है, तो अचानक तुम पाओगे कि तुम्हारे पैर वैश्या के घर की तरफ बढ़ने लगे। अगर तुम्हें कहीं यह पता चल जाय कि वैश्या-

गामियों को स्वर्ग मिल रहा है—विधान में परिवर्तन हो गया है, कानून बदल गया है, विरोधी दल सत्ता में आ गया है—तो तुम्हें अपने बनाये हुए मंदिरों को वेश्यालयों में बदलने में कितनी देर लगेगी। क्षण भी नहीं लगेगा।

अगर तुम भय के कारण धार्मिक हो, तो तुम्हारी धार्मिकता वास्तविक नहीं है। अगर तुम लोभ के कारण धार्मिक हो, तो भी तुम्हारी धार्मिकता वास्तविक नहीं है।

धार्मिक आदमी तो वह है कि अगर उसकी सरलता के कारण उसे यदि नरक भी मिलता हो, तो वह नरक स्वीकार करेगा, लेकिन सरलता को नहीं छोड़ सकता। धार्मिक आदमी वह है कि अगर उसके भलेपन के कारण उसे अनन्तकाल तक कष्ट भोगना पड़ेगा, तो कष्ट भोगने को राजी होगा, लेकिन भलेपन को नहीं छोड़ेगा। तब भलेपन का गुण, तब भलेपन की इन्टेन्जिक वेल्यु उसका भीतरी मूल्य प्रकट होता है।

किसी ने एडमन्ड बर्क को पूछा कि तुम न कभी चर्च जाते हो, न तुम्हें कभी प्रार्थना करते किसी ने देखा। तुम भयभीत नहीं हो? भविष्य के लिए चिंतित नहीं हो? बर्क ने कहा, "जो भी भला है, वह मैं कर रहा हूं। अगर भले का परिणाम भला होगा, तो ठीक है। अगर भले का परिणाम बुरा होगा, तो ठीक है। अगर भले का परिणाम बुरा होगा, तो भी ठीक है। क्योंकि परिणाम की चिन्ता मैं नहीं कर रहा हूं। मुझे भला करने में इतना आनंद आ रहा है कि अब और किसी परिणाम की कोई जरूरत ही नहीं है। यह काफी है।"

धार्मिक व्यक्ति के लिए साधन ही साध्य हो जाता है, यात्रा ही मंजिल हो जाती है। चलना ही इतना सुखद है कि पहुंचने की चिन्ता कौन करता है? यह रास्ता ही इतना प्यारा है कि मंजिल के सपने कौन देखता है? और तब ऐसे व्यक्ति के लिए यहीं जगह मंजिल हो गई। क्योंकि मंजिल का मतलब क्या है?—जहां विश्राम हो सके। मंजिल का मतलब क्या है?—जहां तुम आराम कर सको। ऐसा यात्री यहीं आराम कर रहा है। इसके कदम-कदम पर मंजिल है, इसको कहीं पहुंचना नहीं है, यह पहुंचा ही हुआ है।

लेकिन अधार्मिक चित्त हमेशा लोभ और भय की भाषा में सोचता है।

चर्च, मंदिर, मस्जिद तुम्हारे भय का शोषण करते हैं, तुम्हारे लोभ का शोषण करते हैं, इसलिए

उनका भी कोई सम्बन्ध धर्म से नहीं है। धर्म का एक भी मंदिर पृथ्वी पर नहीं है। कोई चर्च धर्म का नहीं है, क्योंकि तुम दुकानदार हो, सब चर्च तुम्हारे हैं, सब मंदिर तुम्हारे हैं। तुमने उन्हें बनाया है; पुजारियों ने उन्हें बनाया है और उन सब की आधारशिला लोभ या भय है।

अंग्रेजी में एक शब्द है : गाड-फियरिंग, हिन्दी में भी शब्द है : ईश्वर भीरू। यह बेहूदा शब्द है। अगर ईश्वर से भी डरना पड़े, तो फिर तुम निर्भय कहां हो सकोगे। अगर ईश्वर का भी भय रखना पड़े, तो निर्भय होने का उपाय न रहा? तो 'इस' संसार में भी तुम भयभीत रहोगे, 'उस' संसार में भी, क्योंकि ईश्वर सब जगह है। फिर तुम निर्भय कब हो सकोगे? और जब तक तुम निर्भय न हो जाओ, तब तक जीवन का रस, जीवन का झरना कैसे फूटेगा? जब तक तुम अभय न हो जाओ, तब तक तुम्हारी आत्मा का पूरा खिलाव, तुम्हारी आत्मा में फूल कैसे खिलेंगे?

नहीं, धार्मिक आदमी ईश्वर से डरता नहीं। डरने का कोई सवाल ही नहीं है। और ध्यान रहे जिससे तुम डरते हो, उससे तुम प्रेम कैसे करोगे? जिससे तुम डरते हो, उससे तुम घृणा कर सकते हो, प्रेम नहीं। तुम्हारी प्रार्थना अगर भय के कारण है, तो तुम्हारे हृदय की गहराई में ईश्वर के प्रति नफरत होगी। क्योंकि जो भी तुम्हें डराता है, वह दुश्मन है, वह मित्र नहीं है।

जिससे हम प्रेम करते हैं, उससे हम बिलकुल नहीं डरते हैं। यही तो प्रेम का लक्षण है। जिससे हम प्रेम करते हैं, उसका भय खो जाता है; उससे रत्ती भर भय नहीं होता। उसके सामने हम नग्न हो सकते हैं, उसके सामने हम अपने हृदय को पूरा खोल सकते हैं, उसके सामने कोई चीज गुप्त रखने की जरूरत नहीं है। वह हमारा इतना अपना है कि अब छिपाने का कोई सवाल ही नहीं है। लेकिन धार्मिक पुरोहित, मंदिर, पुजारी वे समझते हैं कि ईश्वर का भय रखो।

ऐसा धार्मिक आदमी खोजना कठिन है, जो अभय को उपलब्ध हो। और ऐसा धार्मिक आदमी अगर हो, तो वह मंदिर की तलाश में नहीं आयेगा। वह जहां है, वहीं मंदिर है।

जो मंदिर की तलाश में आते हैं, वे तो दुकानदार हैं; वे तो हिसाब लगा रहे हैं। और पुजारी उनसे कहता है कि 'डरो'। ईश्वर से भय खाओ।' पुजारी उनको समझाता है कि ध्यान रखो, तुम कितने ही अकेले

हो, लेकिन ईश्वर तुम्हें देख रहा है। एकान्त में भी पाप मत करना, क्योंकि उसकी नजरें तुम्हारे पीछे लगी हैं। ईश्वर जैसे एक कासमिक जासूस है; जो सब तरफ से तुम्हारे पाप-पुण्य लिखे जा रहे हैं। और आखिर में तुम्हें हिसाब चुकाना पड़ेगा।

यह जीवन को देखने की दुकानदार की नजर है। और दुकानदार की नजर से ज्यादा गलत नजर दूसरी नहीं होती। दुकानदार की भी कोई नजर होती है? उसकी भी कोई दृष्टि होती है? वह सदा इकट्ठा करना—धन, पूंजी खो न जाय, उसकी व्यवस्था करना—इसी में लगा रहता है, वह जीवन को खो देता है—सिक्कों में। फिर इन्हीं सिक्कों का विस्तार कर लेता है। पुण्य एक सिक्का है, जो स्वर्ग में भी चलता है; वह प्रामिसरी नोट है। ऊपर जो बैंक है—स्वर्ग में, वह भी उसे स्वीकार करती है। वह इकट्ठे करता है—पुण्य के सिक्के। वह पाप से डरता है।

इसलिए नरकों की ऐसी तस्वीरें खींची गई हैं, जिनसे तुम घबड़ाओ। स्वर्ग के बड़े मनमोहक चित्र छापे गये हैं, जिनसे तुम्हारी वासना जगे। यह बड़ी हैरानी की बात है।

सब धर्म कहते हैं कि वासना से मुक्त होना है; लेकिन उनसे पूछो, 'तुम्हारे स्वर्ग में मिलेगा क्या?' तो उनकी सारी हीन दशा प्रकट हो जाती है। स्वर्ग में वे उन्हीं बातों को तुम्हें देने का वायदा करते हैं, जिनको वे तुमसे कहते हैं कि यहां छोड़ो। यह बड़ी अजीब बात है।

यहां कहते हैं: स्त्री को मत देखो और स्वर्ग में कहते हैं: अप्सरायें हैं। यहां वे कहते हैं: स्त्री से बचो। मिलेगा क्या? फल क्या है? फल यही है कि तुम्हें अप्सरायें मिलेंगी। स्त्रियां तो कुछ भी नहीं है। अप्सराओं के मुकाबले। अप्सराओं की उम्र सोलह साल पर रुक जाती है, उससे आगे नहीं बढ़ती। स्त्रियां भी कोशिश तो करती हैं—सोलह साल पर रुकने की, परन्तु कोशिश सफल नहीं होती।

मैंने सुना है: एक ट्रेन में तीन स्त्रियां एक बेन्च पर बैठ कर बात कर रही थीं। एक स्त्री जो करीब साठ साल की होगी, वह अपनी उम्र चालीस साल बता रही थी। उसकी हिम्मत देखकर दूसरी, जो करीब चालीस की होगी, उसने अपनी उम्र तीस साल बताई। तीसरी ने जिसकी उम्र तीस साल ही थी, उन दोनों की हिम्मत देख कर अपनी उम्र सोलह साल बताई। मुल्ला नसरुद्दीन ऊपर बर्थ पर बैठा सब सुन रहा था।

आखिर उसकी सीमा के, बरदाश्त के बाहर हो गयी बात। वह एकदम छलांग लगा कर नीचे कूद पड़ा। उन स्त्रियों ने कहा, 'अरे! तुम कहां से आ पड़े?' उसने कहा, 'मैं अभी-अभी पैदा हुआ हूं। तुम्हारी बातें सुन कर मेरी हिम्मत भी बढ़ गयी।'

कुछ स्त्रियां कोशिश तो करती हैं सदा षोडषी बने रहने की, सफल नहीं हो पाती हैं। अप्सरायें सफल हो गई हैं, वे हमेशा सोलह साल की हैं; उनकी उम्र यहां-वहां नहीं होती उनके पास स्वर्ण कायाएं हैं, जिनसे पसीना नहीं बहता। जो-जो तुम स्त्री में यहां चाहते हो और मिलता नहीं—वह सब ऊपर स्वर्ग में आयोजित है।

इस्लाम ने तो व्यवस्था की है, शराब के चश्मों की। यहां शराब छोड़ने को इस्लाम कहता है। शराब यहां गुनाह है। फल क्या होगा? फल यह है कि स्वर्ग में चश्मे बह रहे हैं—शराब के। पीओ भी मत—नहाओ—तैरो।

जिन दिनों इस्लाम पैदा हुआ, जिन दिनों इस्लाम की मिथ निर्मित हो रही थी, उन दिनों अरब, ईरान—उन मुल्कों में होमोसेक्सुआलिटी (समलैंगिक यौन सम्बन्ध) बहुत जोरों से थी, अतिशय थी। जवान लड़कों को खरीदा और बेचा जाता था—संभोग के लिए। बड़ी हैरानी की बात है—इस्लाम की बहिस्त में उसका भी इन्तजाम है। हूरें तो वहां होंगी ही, गिलमें भी होंगे—खूबसूरत लड़के, जवान लड़के भी होंगे।

किस तरह की धार्मिक दृष्टि है? शराब के चश्मे होंगे? यहां तुम संत हो—अगर शराब छोड़ोगे। पर मिलेगा क्या? एक बोतल छूटेगी और झरना मिलेगा। साधारण स्त्री छूटेगी—जिसके बदन से पसीना भी आता है, जो कभी बूढ़ी भी होती है, कभी बीमार भी पड़ती है, अन्ततः कुरूप हो जाती है, जिसका सौन्दर्य क्षण भर का है और धोखा है। पास जाओ, तो नष्ट हो जाता है। उसे छोड़कर बदले में अप्सरायें मिलेंगी।

तो स्वर्ग में सारी व्यवस्था हमने की हैं—मनुष्य के लोभ की सभी इच्छाएं पूरी करने की।

हिन्दू और भी ज्यादा कुशल हैं। होना भी चाहिए, क्योंकि वह सब से पुरानी दुकान है। वह सनातन है। उन्होंने फुटकर बातें नहीं की हैं। उन्होंने स्वर्ग में कल्प-वृक्ष का इन्तजाम कर दिया है। उन्होंने सोचा कि एक-एक वासना का कहां हिसाब रखेंगे? अनन्त लोभ हैं, अनन्त वासनाएं है। तो स्वर्ग में कल्प-वृक्ष हैं। उनके नीचे बैठो, तुम्हारे मन में यहां वासना उठी नहीं कि वहां पूरी हो जाती है,

समय का व्यवधान नहीं है। एक क्षण भी नहीं खोता बीच में।

संसार की सबसे बड़ी पीड़ा समय है। इसलिए हिन्दुओं ने उसको काट दिया—मोक्ष में। सबसे बड़ी पीड़ा समय है।

एक खूबसूरत स्त्री रास्ते पर दिखाई पड़ती है—वासना उठती है। काश! तुम इसी वक्त उसे पूरी कर लेते। लेकिन यह नहीं हो सकता। समय लगेगा। खोज करनी पड़ेगी, रास्ता बनाना पड़ेगा, व्यवधान हटाने पड़ेंगे। वह किसी की पत्नी होगी, किसी की बेटी होगी। लम्बी यात्रा होगी।

एक महल तुम देखते हो, तुम उसमें रहना चाहते हो, लेकिन रह नहीं सकते। द्वार पर द्वारपाल खड़ा है। बड़ी कशमकश करनी पड़ेगी—धन कमाना पड़ेगा, चोरी-बेईमानी लूट-खसौट करनी पड़ेगी, तब तुम आशा कर सकते हो, वह भी पक्का नहीं है। बहुत समय बीतेगा, तब तुम कहीं महल में पहुंच पाओगे। करीब-करीब ऐसा होता है कि जब तक तुम महल में पहुंचते हो, तब तक तुम इतने थक गये होते हो—महल में पहुंचने की यात्रा में ही—कि महल तुम्हारी कब्र ही बनता है। तुम कुछ मांग नहीं पाते। समय चूस लेता है। किसी दिन इस स्त्री को तुम पा भी लोगे तो तब, जब तक तुम हड्डी-हड्डी हो गये होओगे, स्त्री भी हड्डी-हड्डी हो गयी होगी।

तो हिन्दुओं ने समय को काट ही दिया है, स्वर्ग में, क्योंकि समय संसार की सबसे बड़ी पीड़ा है।

इसी वक्त चाहता है मन, लेकिन देर लगती है। देर में सब बासा हो जाता है। कल्पवृक्ष के नीचे समय नहीं लगता। कल्पवृक्ष के नीचे इधर उठी वासना, उधर पूरी हुई। तुमने चाहा—कि फला। उसमें रत्ती भर का भी अन्तराल नहीं है, इन्टरवल नहीं है।

मैंने सुना है। एक बार एक आदमी भूल से कल्पवृक्ष के नीचे पहुंच गया। उसे कुछ पता नहीं था कि वह कहां है। बड़ी भूख लगी थी, थका-मांदा था, विश्राम करने के लिए रुक गया था कल्पवृक्ष के नीचे। उसे लगा कि इस समय और कहीं से भोजन मिल जाता...ऐसा मन में ख्याल उठा, एकदम हैरान हुआ—थाल चारों तरफ उतर गये। भूख इतनी ज्यादा थी कि सोचने की सुविधा भी न थी। जल्दी उसने भोजन किया। भोजन करके उसे लगा—लेकिन अब पानी कौन देगा? इतना ख्याल भर उठा कि चारों तरफ पानी की सुराहियां आ गईं।

अब पेट भी भर गया था, पानी

भी पी लिया, तो विचार उठने शुरू हुए। वह थोड़ा डरा कि मामला क्या है ? कोई भूत-प्रेत तो नहीं है ? चारों तरफ भूत-प्रेत खड़े हो गये। उसने कहा, 'अब गये, मारे गये।' यह कहते ही वह मारा गया। क्षण भर का व्यवधान स्वर्ग में नहीं है।

हिन्दुओं ने विस्तार की बातें नहीं कीं। वह पुरानी अनुभवी बात है। उसने कहा। एक-एक वासनाओं का कहां हिसाब रखोगे ? अनन्त वासनाएं हैं, किस-किस को तय करोगे ? शराब का चश्मा भी बहा दोगे, उससे भी फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि किसी को व्हिस्की चाहिए, किसी को ब्रांडी चाहिए और किसी को कुछ और चाहिए। हजार तरह की शराबें हैं। किस-किस का तय करोगे ?

हिन्दुओं ने व्यवस्था वैज्ञानिक की। उन्होंने कल्पवृक्ष निर्मित किया है। उसके नीचे तुम बैठे कि सब इच्छाएं तत्क्षण पूरी हो जायेंगी—समय का कोई अवरोध न होगा।

इस लोभ से न मालूम कितने लोग धार्मिक होते हैं।

और बहुत लोग हैं, जिनको लोभ से प्रभावित नहीं किया जा सकता। जो बहुत चालाक हैं; वे कहेंगे कि देखेंगे। भविष्य अभी कहां है। अभी तो हाथ की आधी रोटी ही ठीक है, उसे भविष्य की पूरी रोटी के लिए कौन छोड़े। अभी जो हाथ में शराब की बोतल है, इसको तो पी लें। झरना जब होगा, तब झरने की भी लेंगे। जब झरना होगी, तब देखेंगे। अभी बहुत दूर है, पता नहीं, हो भी या न हो।

और फिर उमर खय्याम ने कहा है कि अगर वहां झरना है, तो यहां बोतल से दोस्ती रखना, नहीं तो आदत ही टूट गई, तो झरने का क्या करोगे ? थोड़ा स्वाद बनाये रखना; नहीं तो झरना भी होगा सामने, तो क्या करोगे ? ऋषि-मुनि की तरह वहां बैठ जाओगे। होगा क्या ? थोड़ा स्वाद बनाये रखना। स्त्री में रस कायम रखना। नहीं तो जब तक अप्सरायें आयेंगी, तब तक तुम्हारा रस सूख चुका होगा। हरे रहना, तुममें पत्ते निकलते रहें, नहीं तो जब वर्षा के दिन आयेंगे, तब तक अगर जड़ें ही सूख गईं, तो फिर हरे कैसे हो पाओगे ? इसलिए जड़ों को फैलाये रखना। तो उमर खय्याम ने कहा है कि यहां हम उसी का अभ्यास कर रहे हैं—थोड़ी मात्रा में, जो परमात्मा वहां देगा। अभ्यास जारी रखना।

वह जो चालाक है, वह इस बात में नहीं पड़ेगा। और चालाक तो कहेगा : अभी जो हाथ में है, उसे

निपटा लें। कल का कल देखेंगे। उसको डराने के लिए भय चाहिए। उसको लुभाने के लिए लोभ काफी नहीं है।

चालाक डरता है—भय से। उसे तो खूब डर पैदा कर दिया जाय, जो कि नरकों के द्वारा पैदा किया गया है। आग जल रही है कढाइयां चढ़ी हैं, तेल उबल रहा है। तुम फेंके जा रहे हो, निकाले जा रहे हो। और मजा यह है कि तुम फेंके जाओगे, पर मरोगे नहीं। क्योंकि अगर मर गये तो शान्ति मिल जायेगी। इसलिए नरक में मौत नहीं होती ध्यान रखना।

यहां मौत होती है, नरक में मौत नहीं होती। क्योंकि मौत शान्ति है, नरक में जा कर तुमको पता चलेगा। वहां जिन्दगी इतनी कठिन है कि मौत का सहारा तुम खोजना चाहोगे। लेकिन नरक में कोई आत्म-हत्या नहीं कर सकता। वह होती ही नहीं है। पहाड़ से गिरो हड्डी-पसली टूट जायेगी, मरोगे नहीं। आग में जलाये जाओगे; जल जाओगे, झुलस जाओगे, सड़ जाओगे, पर मरोगे नहीं। छेद किए जायेंगे—शरीर में। कीड़े-मकोड़े छेदों से निकलेंगे, गुजरेंगे, लेकिन मरेंगे नहीं। बड़े वीभत्स चित्र नरक के खींचे गये हैं।

जो चालाक आदमी है, वह अगर स्वर्ग से लोभित न हो, तो उसके लिए डर है कि वह कंप जाय और थोड़ा सोचने लगे कि पैर सम्हाल के रखो, कहीं चूक गये तो...।

हाथ में जो शराब की बोतल है, उसे छुड़ाने के दो उपाय हैं। एक, अगर ज्यादा पी गये और डगमगा गये, तो यह नरक है—यह भय तुम्हें रोकेगा। और आगे स्वर्ग है, अगर छोड़ दिया अपनी मौज से, तो वहां स्वर्ग में शराब के चश्में बह रहे हैं।

स्वर्ग और नरक—लोभ और भय के बीच में आदमी को कसा गया है। इसलिए तुम मंदिर में सिर झुकाते हो—गौर से देखना—कभी लोभ के कारण, कभी भय के कारण। साधु को नमस्कार करते हो—कभी भय के कारण, कभी लोभ के कारण।

एक दिन मुल्ला नसरुद्दीन एक वृक्ष पर चढ़ रहा था। बेर पक गये थे। बड़ा लम्बा वृक्ष था। चढ़ने के पहले उसने कहा, कि 'परमात्मा, जरा ध्यान रखना। अगर ठीक से बेरों तक पहुंच गया तो आज चार आने मस्जिद में चढाऊंगा।' वह आधे वृक्ष पर पहुंच गया, तो उसने कहा, "इतने से बेरों के लिए चार आने ज्यादा हैं, यह तो तुम भी मानोगे। चार आने इतने से बेरों के लिए! और मैंने श्रम किया और चार आने

तुम्हें चढ़ेंगे ? और कई भिखमंगे मजा लेंगे उन चार आनों का। दो आने ठीक रहेंगे।" लेकिन जब वह करीब-करीब बेरों के पास पहुंच गया, तो उसने कहा—साफ कह देना ही ठीक है। ये बेर एक आने से ज्यादा के नहीं हैं। जब वह बेर तोड़ ही रहा था, तो उसने सोचा कि मैं भी क्यों फिजूल की बातों में पड़ा हूं। जब कोई पूछ ही नहीं रहा है, कोई मांग ही नहीं रहा है, तो मैं अपने हाथ से ही क्यों फंसा जा रहा हूं। तत्क्षण डाल टूटी और वह नीचे गिरा। हड्डी-पसली टूट गई। नीचे उसने कहा — हद्द हो गई ! जरा तो धैर्य रखते। तुम्हें कुछ चढ़ा ही देता। इतनी जल्दी भी क्या थी ?

तुम कभी भय से, कभी लोभ से झुक रहे हो, और जब तक तुम भय और लोभ से झुक रहे हो, तब तक तुम मंदिर के द्वार पर नहीं पहुंचे।

ईसाइयों ने यह कहानी उल्लेख नहीं की, क्योंकि इस कहानी को उल्लेख करने के बाद रोम का साम्राज्य खड़ा नहीं हो सकता, पोप का साम्राज्य गिर जायेगा। पुरोहित जीता ही भय और लोभ पर है। और ईसाइयों के पास सबसे ज्यादा बड़ा पुरोहितों का वर्ग है। तुम जान कर हैरान होओगे—दस लाख ईसाई पुरोहित हैं—केथालिक सिर्फ। फिर प्रोटैस्टेन्ट अलग। और फिर अनेक छोटे-मोटे सम्प्रदाय हैं, वे अलग। दस लाख दीक्षित पुरोहित केथालिक्स के हैं। और जो रोज बढ़ते जाते हैं। हजारों कालेज हैं पृथ्वी पर, जो सिर्फ पुरोहितों को तैयार करते हैं। लाखों चर्च हैं। जितना बड़ा साम्राज्य पोप का है, वस्तुतः किसी का भी नहीं है। और यह सारा साम्राज्य भय और लोभ पर खड़ा है।

इस कहानी को समझने की कोशिश करें।

इस कहानी का ईसा से सम्बन्ध है—ईसाइयत से नहीं और यह ध्यान रहे कि किसी धर्म का सम्बन्ध धर्म से नहीं रह जाता। धर्म का जो मूल उद्गम होता है, उसका तो सम्बन्ध होता है—कृष्ण का सम्बन्ध है, महावीर का सम्बन्ध है—जैन, हिन्दू, बौद्ध, ईसाई—इनका कोई सम्बन्ध धर्म से नहीं है। ये दूकानें हैं। ये तुम्हारे बाजार के ही हिस्से हैं। ये तुम्हीं ने अपनी तृप्ति के लिए पैदा किए हैं। ये उसी अर्थशास्त्र के नियम का अनुसरण करते हैं, जिसमें कहा गया है कि अगर बाजार में मांग हो तो कोई न कोई पूर्ति करने वाला पैदा हो जायेगा। इफ देयर इज डिमान्ड, देअर विल बी सप्लाई। तुम भयभीत हो, तुम लोभ से भरे हुए हो—कोई न कोई सप्लाई करने

को तैयार हो जाता है। कोई तुम्हें स्वर्ग पकड़ा देता है, कोई तुम्हें नरक पकड़ा देता है। लेकिन जीसस, कृष्ण, बुद्ध, राम, महावीर तुमसे नरक और स्वर्ग दोनों छीन लेना चाहते हैं। वे तुम्हें निर्भय—वे तुम्हें निर्लोभ करना चाहते हैं। क्योंकि जिस दिन न भय होगा, न लोभ, उसी दिन तुम्हारे जीवन में परम प्रकाश होगा।

'मरियम के बेटे ईसा एक गांव से गुजर रहे थे। उन्होंने देखा कि कुछ लोग राह के किनारे दीवार पर बहुत सन्तापग्रस्त होकर मुंह लटकाये बैठे हैं। ईसा ने उनसे पूछा, यह हालत कैसे हुई है तुम्हारी? इतने मुंह क्यों लटके हुए हैं? ऐसी उदासी क्या? ऐसा क्या दुख तुम्हारे ऊपर बरस गया है।'

जाकर देखो तुम मंदिरों में, मस्जिदों में, गिरजाघरों में—मुंह लटकाये लोग तुम्हें मिल जायेंगे। हंसता हुआ आदमी तुम पाओगे ही नहीं वहां। और कोई हंस देगा चर्च में, तो लोग कहेंगे कि कोई नासमझ आ गया। अगर कोई हंस देगा चर्च में, तो लोग कहेंगे: 'निकलो, बाहर हो जाओ; यह चर्च है। यहां हंसना गुनाह है।' अगर मंदिर में तुम हंसोगे तो लोग समझेंगे कि तुमने अपमान किया है। वहां रोना नियम है। वहां उदासी सबूत है कि तुम धार्मिक हो। तुम जितने मरे-मराये वहां बैठो, लोग मानेंगे कि हां, तुम उतने ही पहुंच गये हो।

मगर ईसा ने पूछा, 'तुम मुंह लटकाये बैठे हो—सन्तापग्रस्त, यह हालत तुम्हारी हुई कैसे? किसने तुम्हें इस दुःख में डाल दिया?" उन्होंने कहा, "नरक के भय से ऐसे हो गये हैं।" हम डरे हुए हैं। नरक करीब है।

ध्यान रहे, भारत में तो अनेक जन्मों की सुविधा है। यहां जन्म, और जन्म, और जन्म—लम्बी यात्रा है। ईसाई, यहूदी और मुसलमान एक ही जन्म को मानते हैं। इसलिए भय भी बड़ा भयंकर हो जाता है। इसलिए हर मौत आखिरी मौत है। फिर उसके बाद कुछ करने का उपाय नहीं है। जो कुछ भी कर सको अभी कर लो और वही फिर निर्णायक सिद्ध होगा। तो जितना मुसलमान डर सकता है, उतना हिन्दू नहीं डरेगा; क्योंकि हिन्दू कहेगा, जल्दी कुछ है नहीं। अभी पाप करते हैं, अगले जन्म में फिर पुण्य कर लेंगे। हिसाब-किताब बराबर हो जायेगा। और फिर कभी भी गंगा जाकर स्नान कर सकते हैं ऐसा कोई डर नहीं है। जन्मों - जन्मों का लम्बा मामला है। कोई हिसाब एक दिन में तो चुकता हो नहीं रहा है।

श्रौर फिर हिन्दुश्रों के पास कोई जजमेन्ट, कोई कयामत, कोई श्राखिरी निर्णय का दिन नहीं है। वे कहते हैं कि यह जीवन एक अन्तहीन यात्रा है। इसमें कभी आखिरी दिन नहीं है, जिसमें तुम्हारा निर्णय किया जायेगा। लेकिन मुसलमान श्रौर ईसाई आखिरी दिन मानते हैं। वे मानते हैं कि कब्र से उठाये जाश्रोगे। श्रौर एक ही जीवन है। इसलिए जो तुमने किया, वह श्राखिरी हो गया। फिर उसको बदलने का उपाय नहीं है। फिर लौट कर तुम यह नहीं कह सकते कि 'माफ करो। भूल हो गई। अब कभी ऐसा न करेंगे।' जो किया, वह पत्थर की लकीर हो गई। उसे मिटाने का फिर कोई मार्ग नहीं है। इसलिए भय जैसा मुसलमान में पैदा हो सकता है, ईसाई में—वैसा हिन्दू में पैदा नहीं हो सकता है।

'नरक के भय से हम ऐसे हो गये हैं' कहा उन्होंने। ईसा ने सुना श्रौर श्रागे बढ़ गये। श्रागे बढ़ने पर उन्होंने फिर कुछ लोगों को देखा, जो एक राह के किनारे तरह-तरह के श्रासनों श्रौर मुद्राश्रों में बैठे हैं। प्रकार-प्रकार की विधियां कर रहे हैं श्रौर बहुत-बहुत उदास हैं। ईसा ने पूछा—तुम्हारी तकलीफ क्या है? उन्होंने कहा—स्वर्ग की आकांक्षा ने हमें ऐसा बना दिया है।

जैन हैं, उनके मन्दिरों स्थानकों में जाकर देखो तो पहली तरह के लोग मिलेंगे, जो भयभीत हैं। इसलिए जैन मुनि का चेहरा देख कर भय की प्रतिमा याद आती है। कंपा हुश्रा है; हर चीज पाप है। हर चीज से भयभीत है। पानी पिये तो डर; सांस ले तो भय; रात प्यास लग जाय तो नरक; यह न खाये, वह न खाये, यह न पहने, ऐसा न उठे, वैसा न बैठे—एकदम भयभीत है। चारों तरफ नरक है श्रौर बीच में श्रपने को किसी तरह सम्हाल कर खड़ा है। पांव कंपते हैं; कभी नींद श्राती है, कभी झपकी लगती है, तो डर लगता है। कभी भी गिरा तो नरक है।

पहली तरह के लोग तुम्हें जैन मंदिरों में मिल जायेंगे—भय से भयभीत। दूसरी तरह के लोग तुम्हें हिन्दुश्रों के श्राश्रमों में मिलेंगे। कोई शीर्षासन कर रहा है, कोई उल्टी-सीधी मुद्रायें बना रहा है, कोई नाक बन्द किए है, कोई कान रूंधे है, किसी ने भोजन छोड़ दिया है, कोई खड़ा ही हुश्रा है।

एक श्रादमी को मैंने देखा, वह दस साल से खड़ा ही हुश्रा है। उनका नाम 'खड़े श्री बाबा' हो गया है। वे बैठते ही नहीं। वे तब तक न बैठेंगे जब तक स्वर्ग उन्हें उपलब्ध न हो

जाये। उन्होंने कसम खा ली है। उनसे पूछो—खड़े श्री बाबा ! यह गति तुम्हारी किसने की ? किसने तुमसे कहा खड़े रहो ? भगवान ने पैर झुकने के लिए, बैठने के लिए बनाये हैं, लेकिन यह निर्णय तुमने कैसे लिया ? तो वे कहेंगे—यह तकलीफ ? स्वर्ग की आकांक्षा ने हमें ऐसा बना दिया है। स्वर्ग कोई मुफ्त में तो मिलेगा नहीं। दाम चुकाना पड़ेगा। अर्जित करना होगा स्वर्ग। वे अर्जित करने में परेशान हैं।

ईसा उसी गांव में और आगे बढ़े। और ध्यान रखना, वह तुम्हारा ही गांव है। किसी और गांव की बात नहीं है। हर गांव वही गांव है। पूरी पृथ्वी वही गांव है और वहां तीन तरह के लोग हैं। और फिर कुछ लोग उन्हें मिले। उन्हें देख कर लगा कि जीवन में उन्होंने बहुत कुछ झेला है। अनुभव किया है। जीवन में उनके आई है—एक प्रौढ़ता—एक निखार। जैसा सोना आग से निकलता है और शुद्ध हो जाता है—ऐसी चमक है। सोने पर खबर है कि आग से गुजरा है। संताप उन्होंने भी झेले हैं, दुख उन्होंने भी पाये हैं। लेकिन दुख और संताप उन्हें मुरझा नहीं गये। दुख और सन्ताप उन्हें अनुभवी बना गये हैं। उन्होंने बाल अपने धूप में नहीं पकाये, जीवन की प्रक्रिया से वे पके हैं। बहुत कुछ झेला है उन्होंने, लेकिन वे आनन्दमग्न हैं। दुख आये हैं, तूफान उठे हैं, आंधियां आई हैं। वासनाएं उन्होंने झेली हैं; सुख-दुख के परिणाम उन्होंने भोगे हैं। रास्ते के कष्ट देखे हैं—पैर पर कांटे हैं, कांटे उन्हें भी गड़े हैं। फूल की सुगन्ध उन्होंने भी ली है, लेकिन वे आनन्द मग्न हैं। जीवन उन्हें परिपक्व कर गया है। जीवन उन्हें इंटिग्रेट कर गया है। वे भीतर जैसे एक हो गये हैं। जीवन ने उन्हें केन्द्रित किया है। वे जीवन से हार नहीं गये हैं, वे जैसे जीत गये हैं। वे आनन्दमग्न हैं।

पूछने पर उन्होंने बताया—हमने हकीकत देख ली, हमने सत्य देख लिया। इससे और मंजिलें भूल गईं। जिसने हकीकत देख ली, उसे सभी कुछ भूल जाता है।

क्या हकीकत है ? क्या सत्य है ? सत्य है कि न तो भय करने को कुछ है, न तो लोभ करने को कुछ है। सत्य है कि जो भी मैं हो सकता हूं, मैं हूं।

तुम जैसे हो, परिपूर्ण हो। तुम जैसे हो, पूरे हो। रत्ती भर भी तुम्हारे सुधार की कोई जरूरत नहीं है। और तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है, जो छीना जा सके। या तुम्हारे पास तो कुछ भी है, उसे छीनने का कोई मार्ग नहीं है। वह तुम्हारा

स्वभाव है। जैसे आग से कोई गर्मी नहीं छीन सकता, वैसे तुमसे कोई तुम्हारा स्वभाव नहीं छीन सकता। जैसे पानी नीचे की तरफ बहता है—कोई उससे नीचे की तरफ बहना नहीं छीन सकता है—वैसे ही तुम जो भी हो, वह तुमसे छीना नहीं जा सकता है। और न तुममें कुछ जोड़ा जा सकता है। यह हकीकत है। यह हकीकत बड़ी कठिन है।

इसका मतलब हुआ कि तुम जैसे हो, बस, ऐसा होना ही तुम्हारी नियति है। यही तुम्हारी डेस्टिनी है। 'हमने हकीकत देख ली', उन्होंने कहा, 'और सब मंजिलें भूल गयीं।' अब न हम स्वर्ग जाना चाहते हैं, न हम नरक से बचना चाहते हैं। न तो अब हमें कहीं पहुंचना है और न हमें अब कुछ छोड़ना है। इस अनुभव से हम आनन्दित हैं।

तुम भी तब तक आनन्दित न हो पाओगे, जब तक तुम्हें कुछ छोड़ना है। जब तक तुम्हें किसी जगह से बचना है, तब तक भय रहेगा और भय सिकोड़ेगा। जब तक तुम्हें कुछ पाना है, तब तक वासना रहेगी और लोभ तुम्हें दौड़ायेगा।

जिस दिन तुम्हें न कुछ पाना है, न कुछ खोना है—न कोई स्वर्ग है, न कोई नरक है; न तुम परमात्मा से कह रहे हो कि बचाओ, न तुम परमात्मा से मांग रहे हो कुछ—सब मंजिलें खो गईं, उस दिन—बस उस दिन ही तुम्हारे जीवन में पहली दफा आनन्द की वर्षा होगी।

जब कोई मंजिल न होगी, तो बस, शून्य जैसे हो जाओगे। तब तुम क्या हो? तुम तब एक कोरे आकाश की भांति हो। आकाश न तो कहीं जाता और न आता। हवाएं कहीं आती हैं, कहीं जाती हैं। वृक्ष उगते हैं, गिरते हैं। मनुष्य पैदा होता है, मरता है। वासनाएं लगती हैं, पकती हैं, झरती हैं—आकाश वहीं का वहीं है; न कहीं आता है, न कहीं जाता है। क्योंकि आकाश शून्य है।

ज्ञानियों ने आत्मा को अन्तर आकाश कहा है—भीतर का आकाश। जैसे आकाश बाहर है, ऐसा ही आकाश भीतर है। वही आकाश तुम हो। जिसने उसे देख लिया, उसने हकीकत देख ली। और जिसने उसे देख लिया, वह नाच उठा। फिर उसकी बांसुरी के स्वर कभी बन्द नहीं होते। फिर उसके पैरों की पायल बजती ही रहती है। फिर एक अहर्निश नाद है। फिर सनातन संगीत है। फिर ओंकार की धुन गूंजती ही रहती है। फिर क्षण भर भी इस सत्य से कोई विलगाव नहीं है।

तुम टूट गये हो सत्य से; क्योंकि तुम देख रहे हो या तो उसे, जिससे

तुम डरे हो—शत्रु या कि तुम्हारी आंखें खोज रही हैं—उसे, जिससे तुम लोभित हो—मित्र। जो शत्रु को देख रहा है, वह स्वयं को न देख सकेगा। जो मित्र को देख रहा है, वह भी स्वयं को न देख सकेगा। और जिसे स्वयं को देखना हो, उसे शत्रु-मित्र सभी को भूल जाना जरूरी है, ताकि वह निश्चित भाव से अपने को देख सके।

जिसने 'अपने को' देखा उसने हकीकत देखी।

जीसस तुम्हारे गांव से गुजरे हैं। तुममें से ही कुछ को उन्होंने बैठे देखा है—दीवार पर, जो संतापग्रस्त हैं, क्योंकि नरक से डरे हुए हैं। तुम्हारे ही गांव में उन्होंने कुछ लोगों को बैठे देखा है, दूसरे मकान के आंगन में, जो उल्टे-सीधे उपाय कर रहे हैं।

कभी सोचो तुम तो बहुत बातें, हंसी मजाक की लगेंगी कि कोई एक नाक से सांस लेकर सोच रहा है कि ब्रह्मज्ञान हो जायेगा। ब्रह्मज्ञान इतना सस्ता? तुम्हारी एक नाक से सांस लेने पर निर्भर है? तुम बच्चे हो? तुम बच्चों से भी गई-बीती बातें कर रहे हो। बच्चे भी हंसेंगे कि एस नाक से सांस लेने पर कहीं ब्रह्मज्ञान होता है। तो दो नाक से लेने पर तो दोहरा होगा। कि तुम सिर के बल खड़े हो, इससे क्या समाधि लग जायेगी। काश, इतना आसान होता, तो सारी पृथ्वी कभी के सिर के बल खड़ी हो गई होती। और जब पैर के बल खड़े होने से समाधि न लगी, तो सिर के बल खड़े होने से समाधि कैसे लग जायेगी? नहीं, लेकिन क्लिष्ट, कठिन को करने में ही रस आता है। क्योंकि कठिन, जो दूसरे नहीं कर रहे हैं, उसे करके तुम्हारे अहंकार को तृप्ति मिलती है।

तुम कहते हो : 'देखो, मेरी तरफ, मैं सिर के बल खड़ा हूं। तुम नहीं खड़े हो सकते हो' घंटों लोग सिर के बल खड़े हैं; उससे कोई मोक्ष नहीं मिलता, केवल सिर के भीतर के सूक्ष्म तन्तु टूट जाते हैं। इसलिए तुम लम्बे शीर्षासन करने वालों में बुद्धिमान लोग न पा सकोगे। तुम्हारे लंबे शीर्षासन करने वालों में से एक को भी नोबल प्राईज मिलती नहीं : मिल सकती नहीं। उनमें से एक भी कोई बड़ा वैज्ञानिक नहीं होता; न कोई पिकासो पैदा होता है, न कोई आइन्स्टीन पैदा हो सकता। कितने दिन से तुम शीर्षासन कर रहे हो? पर शीर्षासन करने वालों में तुम्हें मंद-बुद्धि वाले लोग मिलेंगे। यह स्वाभाविक भी है। क्योंकि वैज्ञानिक कहते हैं कि अगर खून बहुत ज्यादा

जायेगा मस्तिष्क में, तो जो सूक्ष्म तन्तु हैं, वे टूट जायेंगे; उतने बड़े ऊर्जा के बाढ़ को वे झेल नहीं सकते। और जितने सूक्ष्म तन्तु होते हैं, उतनी प्रज्ञा विकसित होती है। जानवर इसीलिए तो बुद्धि में पिछड़ गए हैं; क्योंकि उनके सिर में तुमसे ज्यादा खून जा रहा है—इसलिए सूक्ष्म तन्तु विकसित नहीं हो पाते।

तुमने अगर कभी पागलखाने में जाकर देखा हो, तो जो इडिएट्स हैं, जो बिलकुल मंद-बुद्धि हैं, वे सदा सिर को झुकाये मिलेंगे। दोनों पैरों के बीच में सिर को झुकाकर बैठे मिलेंगे। सिर को सीधा किए नहीं मिलेंगे। इडिएट के बैठने का ढंग ही वही है। वह एक खास आसन है उसका। उस आसन में तुम भी बैठो तो शायद तुम्हें ऐसी भ्रांति पैदा हो कि मन शान्त हो रहा है। मन शांत नहीं हो रहा है, केवल बुद्धि खो रही है, मंद हो रही है।

उलटे-सीधे साधन करने से परमात्मा नहीं मिलता है सच पूछो तो परमात्मा को मिलने के लिए कोई भी उपाय करना जरूरी नहीं है क्योंकि वह तो मिला ही हुआ है। तुम्हारे हृदय की धड़कन है वह। सांस की सांस है वह। तुम्हारे भीतर से वही देखता है, वही सुनता है। तुम्हारे भीतर वही चलता है, वही सोता है। पर यह तो तुम्हें तभी दिखाई पड़ेगा, जब न भय हो और न लोभ।

कहा उन्होंने, "हमने हकीकत देख ली। इससे और मंजिलें भूल गईं। तुम भी हकीकत देख लोगे तो मंजिलें भूल जायेंगी—एक, और या मंजिलों को भूल जाओगे, तो तुम हकीकत देख लोगे। ये दोनों एक ही चीज के दो पहलू हैं। कहां से शुरू करोगे? दोनों तरफ से शुरू हो सकती है—बात।

हकीकत देख लो : क्या है तुम्हारे पास खोने को? क्यों डरते हो? नरक में भी तुम्हें कौन-सा कष्ट दिया जा सकता है, जो तुम नहीं पा रहे हो? क्या भय है नरक का? और एक बोतल से जब सुख न मिला, तो चश्मे से कैसे सुख मिल जायेगा? और क्षण भर जो सुन्दर थी स्त्री, जब वह आनन्द न दे सकी और उसने काफी दुख दिया, तो अप्सराओं से सावधान रहना। क्षण भर के लिए जो सुन्दर थी, वह इतना कष्ट दे गई, तो गणित साफ है। जो सदा सोलह साल की रहेगी, वह फांसी बन जायेगी। इससे तो बचने का भी उपाय था, उससे बचने का भी उपाय न होगा। इससे तुम भाग भी सकते थे, उससे तुम भागोगे कहां?

जब इस जगत में सुख सुख सिद्ध

न हुए, तो स्वर्ग के महासुख भी सुख सिद्ध न होंगे। अगर सुख में दुख पाया, तो महासुख में महादुख पाओगे।

ठीक से देखोगे तो हकीकत साफ है। सत्य पर पर्दा नहीं है, सिर्फ तुम्हारे आंखों पर पर्दा है। सत्य तो उघड़ा हुआ है, सिर्फ तुम आखें बन्द किए बैठे हो। खोलो आंखें और या फिर अगर तुम्हें यह हकीकत देखनी कठिन मालूम पड़ती हो, कष्टपूर्ण मालूम पड़ती हो, तो फिर तुम्हारे लिए, दो ही रास्ते रह जाते हैं। या तो पहली दीवार पर बैठे लोग—उनमें तुम सम्मिलित हो जाओ। (बहुत से लोग सम्मिलित हो गये हैं।) या फिर दूसरे आंगन में बैठे हुए लोग—उसमें सम्मिलित हो जाओ; उसमें भी बहुत से लोग सम्मिलित हो गये हैं। वह आसान है। लेकिन आसान से ही कोई सत्य तक पहुंच जाता है ऐसा मत समझ लेना।

नरक से डरना आसान है। स्वर्ग से लोभित होना आसान है। हकीकत को जानना कठिन है। पर जो हकीकत को जानता है, वही मुक्त होता है।

●

युक्रांद सहायता निधि के अन्तर्गत प्रकाशित

गीता अध्याय ११

(भगवान श्री कृष्ण का विराट स्वरूप दर्शन)

मूल्य : २२ रु०

अपना आदेश वी० पी० पी० द्वारा देकर हमें सेवा का अवसर दें।

☐ आकर्षक कमीशन एवं पोस्टेज फ्री व्यवस्था ☐

अरविन्द कुमार, 'युक्रांद' सहायता निधि, ७९० राइट-टाउन, जबलपुर

त्यागो ! . . . त्यागो !

(भगवत् प्रेरणा पर आधारित दिव्य गीत)

○

त्यागो उदासी गम्भीर चेहरे, त्यागो यह नकली गम्भीरता ।
त्यागो तुम्हारे दम्भ के चेहरे, त्यागो अपनी सब कृपणता ।

त्यागो सब झूठे मुखौटे, त्यागो अपने अहम् की जड़ता ।
चाहते हो यदि सुख घनेरे, तो छोड़ो सब यह कृत्रिमता ।

प्रकृति से जीना सीखो, विस्तृत नभ से साधो अभिन्नता ।
सागर की गहराइयों में झांक कर, कर लो साक्षात् तुम शून्यता ।

झाड़-पात और फूल-फल से, पक्षीगण और तितलियों से ।
भी बन सकते हैं हम गहन, यदि साध लें उनसे तनमयता ।

त्याग करके यह सब घेरे, बना लो भीतर में सघनता ।
जाकर के सीमाओं से परे, मिटा लो अपनी रुग्णता ।

बाह्य के हमारे बनावटी घेरे, देते भले हमें प्रसन्नता ।
परन्तु इसके बीज हैं गहरे, जो नहीं आने देते जागरण ।

छोड़ोगे मुखौटे के आवरण, तब ही जागृत होगी वह चेतना ।
उठा कर के अब खोटे डेरे, काश ! करें हम सत् की चिन्तना ।

□ *स्वामी आनंद बोधि धर्म*
शिवाजी नगर, पांचगणी

अनमोल वचन

★

- निर्वासना के लिए 'समझ' (प्रज्ञा) काफी है।

  चाक के चलने का राज, ठहरी हुई कील में होता है।
- किसी पर भी कुछ, थोपना बड़ी से बड़ी 'हिंसा' है।
- हम दूसरे में वही देखते है जो हमारे भीतर होता है।
- जीवन विपरीत स्वरों के बीच एक सामंजस्य है।
- दुख का जो दंश है वह दुख में नहीं, वह हमारी अस्वीकृति में है।
- समर्पण की पूर्णता ही समाधि है।
- स्वयं का विसर्जन ही समर्पण है।
- संसार की सारी व्यस्तता पलायन हैं स्वयं को स्वयं से, स्वयं के द्वारा।
- प्रेम 'असुरक्षा' में छलांग है, वह अज्ञात के हाथों में स्वयं का समर्पण है।
- संसार को लीला मात्र जानना संन्यास है।
- धर्म तो प्रयोग है, मात्र आस्था नहीं।
  धर्म तो अनुभव है, मात्र विश्वास नहीं।।
- समझ बहुत छोटी है और जीवन विराट है। और यदि बुद्धि के भिक्षा-पात्र में सागर न समाये तो कुसूर सागर का तो नहीं है न ?
- मनुष्य पशु और परमात्मा के बीच डोलता हुआ अस्तित्व है।

□ संकलन—*रामनाथ शर्मा*
ताला, जि०—सतना (म. प्र.)

क्या है रहस्य जीवन का ?

△ भगवान श्री द्वारा पूना में 'बिन बाती बिन तेल' प्रवचन-माला के अन्तर्गत दिया गया, ग्यारहवां प्रवचन, दिनांक १-७-१९७४। ▽

□ संकलन : स्वामी मरेन्द्र बोधिसत्व
पूना

प्रश्नकर्त्ता :

भगवान, किसी सौदागर के पास एक हिन्दुस्तानी पक्षी था, उसे उसने पिंजड़े में बन्द रखा था, जब वह सौदागर दुबारा भारत जाने लगा तब उसने पक्षी से पूछा कि तुम्हारे देश से तुम्हारे लिये क्या लाऊं। पक्षी ने कहा लाना कुछ नहीं केवल हिंदुस्तान के किसी जंगल में जाना और वहाँ के आजाद परिन्दों से मेरी कैद का हाल बता देना। सौदागर ने वही किया। लेकिन जैसे ही वह बोला कि एक जंगली पक्षी मूर्छित हो कर जमीन पर आ गिरा। सौदागर ने सोचा कि मेरे कारण यह पक्षी मर गया। जब वह देश लौटा तब उसके पक्षी ने अपने देश की खबर उससे पूछी। सौदागर ने कहा, खबर बुरी है, तुम्हारा एक रिस्तेदार पक्षी, तुम्हारा हाल सुनकर मेरे पांव पर गिरकर मर गया। यह सुनते ही सौदागर का पक्षी मूर्छित हो गया और पिंजरे की पेंदी में लुढक कर गिर गया। सौदागर ने सोचा कि कुटुम्बी की मृत्यु की खबर से यह भी मर गया है और उसने उसे पिंजड़े से निकाल दिया, तुरन्त ही वह पक्षी जी उठा और स्वतन्त्र आकाश में उड़ गया।

भगवान, कृपया इस कहानी का अर्थ समझावें।

भगवान श्री :

मृत्यु ही जीवन को पाने का द्वार है और जो मरने को राजी है वही मुक्त हो सकता है, जिसकी तैयारी है मिटने की उसे स्वतन्त्रता का आकाश मिल जायेगा, इससे कम में सौदा नहीं होगा और इससे कम में जो सौदा करना चाहता है वह धोखे में पड़ेगा, वह धोखा अपने को ही दे रहा है। परमात्मा को पाना हो और परमात्मा यानी मुक्ति, परमात्मा यानी मोक्ष, परमात्मा यानी परम स्वतन्त्रता, तो तम बचे हुये उसे न पा सकोगे, तुम खो जाओ तो ही वह मिलेगा, तुम मिट जाओ तो ही वह मिलन घट सकता है, यही है राज इस छोटी सी कहानी का।

सूफियों ने इसका बड़ा प्रयोग किया है, बड़ी गहरी सूफियों की पकड़ है और जीवन की परम रहस्य की कुन्जियां उन्होंने छोटी छोटी कहानियों में रख दी हैं। शास्त्र जहां चूक जाते हैं वहां, वहां कहानियां नहीं चूकतीं, बड़े बड़े सिद्धांतों के तीर लक्ष्य पर नहीं पहुंच पाते, छोटी-छोटी कहानियां हृदय में छिद जाती हैं। इस कहानी को समझने की कोशिश करें। यह कहानी मनुष्य की परतन्त्रता और मनुष्य की स्वतन्त्रता की कहानी है। इसके एक एक चरण को खोलें जैसे कोई प्याज की पर्तों को उघाड़ता है ऐसे हम इस कहानी को उघाड़ें। ख्याल किया होगा प्याज की पर्तों को उघाड़ता ही जाये तो आखिर में शून्य हाथ आता है, एक पर्त उघाड़ी दूसरी पर्त आ जाती है, दूसरी उघड़ती है तीसरी पर्त आती है लेकिन अगर उघाड़ता ही जाये तो अन्त में शून्य हाथ लगता है, वही शून्य महामुक्ति है, महामोक्ष। इस कहानी की भी एक-एक पर्त हम उघाड़ें ताकि इसके भीतर छिपा हुआ शून्य हमारे हाथ में लग जाये। उस शून्य को इस कहानी में आकाश कहा है और शून्य में उड़ जाने की स्थिति को मुक्ति, स्वतन्त्रता कहा है। कहानी का पहला चरण, एक पक्षी बंदी है, अपने देश से बाहर, विदेश में है, ऐसा ही मनुष्य है, हम जहां भी हैं विदेश में हैं यह हमारा घर नहीं, जहां हम ठहरे हैं वह धर्मशाला हो सकती है, अतिथि गृह हो सकता है वहाँ हम मित्रों के बीच हों, या शत्रुओं के बीच हों, वहां हमारा स्वागत हो रहा है या जबरदस्ती हम टिके पड़े हों एक बोझ की तरह। लेकिन यह घर हमारा नहीं है, हम परदेश में हैं और इसीलिए बेचैन हैं, जब तक घर न मिल जाये तुम्हें तब तक बेचैनी जारी रहेगी, घर की खोज ही धर्म है। अमरीका का एक बहुत विचारशील व्यक्ति हुआ कुलिज, वह अमरीका का प्रेसीडेंट हो गया था, विचारशील लोग मुश्किल से ही कभी ऐसे पदों पर पहुंच पाते हैं कभी-कभी, लेकिन दुर्घटना घट जाती है। कुलिज अपनी आदत के अनुसार रोज व्हाईट हाऊस के आस-पास, जो कि प्रेसीडेंट का भवन है, घूमने निकलता था। एक दिन एक अजनबी उसे रास्ते पर सुबह सुबह मिला वह अजनबी यह नहीं पहचान पाया कि यह कुलिज हैं जो इस समय राष्ट्रपति हैं और न ही पहचान पाया सुबह के धुंधलके में कि पास में जो खड़ा हुआ विशाल भवन है यह राष्ट्रपति का निवास है 'व्हाईट हाउस' है। उसने चलते चलते पूछा कि आप कौन हैं ? तो कुलिज ने कहा यह तो मुझे भी पता नहीं, इसकी तलाश में चल रहा

हूं अभी उत्तर पाया नहीं, अजनबी ने सोचा होगा झक्की मालूम होता है, छुटकारा पाने के लिये उसने पूछा और यहां जो सफेद मकान है यहां कौन रहता है ? तो कुलिज हंसा और कहा यहां कोई रहता नहीं बस लोग आते हैं और जाते हैं 'पीपल कम एन्ड गो, नो बडी लिवज हिअर'।

जहां हम हैं वहां लोग आते हैं और जाते हैं रहता वहां कोई भी नहीं, यह घर नहीं यह पड़ाव है, यह मंजिल नहीं है, यहां क्षण भर को हम विश्राम करने रुके हों तो ठीक और अगर हम ने यह समझ लिया हो कि यह घर है तो हम भटक गये। झाड़ के नीचे कोई यात्री रुक गया हो छाया में थोड़ी देर यात्रा के कष्ट को बचाने को समझ में आता है लेकिन छाया में रम जाये और भूल ही जाये कि किस तरफ चला था, क्या खोजने चला था, वहीं घर बना ले तो भटक गया। संसार एक पड़ाव है और पड़ाव पर कभी शान्ति नहीं हो सकती, थोड़ी देर विश्राम हो सकता है लेकिन आनन्द नहीं हो सकता। और विश्राम का तो इतना ही अर्थ है कि फिर हम श्रम करने को तैयार हुये, फिर यात्रा के लिये पैर तैयार हैं। विश्राम का और कोई अर्थ नहीं है, विश्राम तो बीच की एक कड़ी है वह कोई लक्ष्य नहीं है, वह कोई सिद्धांत नहीं है, कोई बड़ी यात्रा चल रही है और उस बड़ी यात्रा में हम अपने घर से भटक गये हैं और जहाँ भी अपने को पाते हैं बेघर पाते हैं।

पक्षी बन्द है विदेश में, जहां उस का अपना कोई भी नहीं, वह अकेला है, यहां तुम्हारा कौन अपना है? यहाँ तुम भी अकेले हो लेकिन पक्षी इतना चालाक न था जितने चालाक तुम हो, पक्षी सीधा सादा था, तुम चालाक हो जहां तुम्हारा कोई भी नहीं है वहाँ भी तुमने नाते रिस्ते बना लिये हैं, जहां घर नहीं है, धर्मशाला को तुमने घर समझ लिया है और जहां कोई तुम्हारा अपना नहीं है तुमने नाते-रिश्ते बना लिये हैं। तुमने इन्तजाम ऐसा कर लिया है जैसे तुम अपने घर में ही हो, यह कोई पड़ाव नहीं है, तुम अपनों के ही बीच हो, तुम किसी विदेश में नहीं हो। क्या हैं हमारे नाते-रिस्ते और हमारे सम्बन्ध ? जीसस ने एक बड़े कठोर वचन का प्रयोग किया है। उस कठोर वचन के कारण जीसस की बड़ी आलोचना की गई। बर्ट्रेंड रसेल ने जीसस की आलोचना में उसका बहुत प्रयोग किया है और कोई भी ऊपर से देखेगा तो लगता है रसेल ठीक है जीसस गलत हैं।

कहानी है कि जीसस एक भीड़ में घिरे एक बाजार में खड़े हैं और एक आदमी ने भीड़ के भीतर कहा कि

जीसस भीड़ के बाहर तुम्हारी मां तुमसे मिलने की प्रतीक्षा कर रही है तो जीसस ने कहा कौन किसकी मां ? कौन किसका पिता है ? उस स्त्री को कहो, ' टेल दैट वुमन, नो बडी इज माई मदर, नो बडी इज माई फादर' उस स्त्री को, उस औरत को कहो कि न मेरी कोई मां है और न कोई मेरा पिता, यह शब्द जरा कठोर मालूम पड़ते हैं, जीसस के ओठों पर तो और भी असंगत मालूम पड़ते हैं क्योंकि जो कहता है प्रेम ही परमात्मा है और जिसने प्रेम का सार समझा है और जिसने सेवा को आधार बनाया धर्म का, जिसके धर्म की सारी की सारी नींव विनम्रता पर खड़ी है वह आदमी यह कहता है कि कौन मेरी मां ? कौन मेरा पिता ? और तुमसे मैं कहता हूं भीड़ से जीसस ने कहा जब तक तुम अपनी मां के खिलाफ हो जाओ और अपने पिता के दुश्मन न हो जाओ तब तक तुम मेरे नहीं हो। शब्दों में जो भटक जाये वह रसेल से राजी हो जाएंगे, रसेल का तर्क सीधा साफ है कि यह आदमी दुष्ट प्रकृति का है, जो अपनी मां को कह रहा है 'इस औरत को' और इसकी प्रेम की बातें सब बातें हैं, इसकी विनम्रता अहंकार का ही एक रूप मालूम पड़ती है, जो शब्दों में खो जायेगा वह ऐसा ही समझेगा। लेकिन जीसस कठोर तो नहीं हो सकते, जीसस किसी प्रयोजन से यह कह रहे हैं, जीसस का प्रयोजन यह है कि वह तुम्हें बताना चाहते हैं कि तुम अजनबी हो और यहां तुम्हारा कोई भी नहीं न तुम्हारी मां है न पिता, पिता और अगर तुम किसी स्त्री से पैदा हुये तो यह सिर्फ संयोग की बात है इसको तुम संबंध मत समझो, यह सिर्फ संयोग है तुम किसी और स्त्री से पैदा हो सकते थे, न तुमने इस स्त्री को मां की तरह चुना, न इस स्त्री ने तुम्हें बेटे की तरह चुना, यह एक संयोग है। न तो इस स्त्री को पता था कि तुम बेटे की तरह आ रहे हो, न तुम्हें पता है कि तुम इस स्त्री को मां बना रहे हो, अंधेरे में जैसे दो आदमी मिल जाएं और टकरा जाएं, रास्ते पर प्रकाश न हो और कोई साथी हो ले, थोड़ी देर यात्रा साथ चले, बस ऐसी यह यात्रा है, सब अन्धेरे में है, सब संयोग है, कौन तुम्हारा मित्र है? किसको तुम अपना मित्र कहते हो ? क्योंकि सभी अपने स्वार्थ के लिए जी रहे हैं, जिसको तुम मित्र कहते हो वह भी अपने स्वार्थ के लिए तुमसे जुड़ा है और तुम भी अपने स्वार्थ के लिये उससे जुड़े हो।

अगर मित्र वक्त पर काम न आये तो तुम मित्रता तोड़ दोगे, बुद्धिमान लोग कहते हैं मित्र तो वही जो वक्त पर काम आये लेकिन क्यों ?

वक्त पर काम आने का मतलब है कि जब मेरे स्वार्थ की जरूरत हो तब वह सेवा करे लेकिन दूसरा भी यही सोचता है कि जब तुम वक्त पर काम आओ तब मित्र हो। लेकिन तुम काम में लाना चाहते हो दूसरे को यह कैसी मित्रता है ? तुम दूसरे का शोषण करना चाहते हो यह कैसा संबंध है, सब सम्बन्ध स्वार्थ के हैं। पिता बेटे के कंधे पर हाथ रखे है, बेटा पिता के चरणों में झुका है सब सम्बन्ध स्वार्थ के हैं और जहां स्वार्थ महत्वपूर्ण हो वहां संबंध कैसे ? लेकिन मन चाहता है, अकेले होने में डरता है इसलिये मन चाहता है कि कोई संगी साथी हो, संगी साथी हमारे मन की कल्पना है क्योंकि अकेले हम भयभीत हो जायेंगे, सब से बड़ा भय है अकेला हो जाना कि मैं बिल्कुल अकेला हूं। तो हम विवाह करते हैं किसी स्त्री को पत्नी कहते हैं, किसी पुरुष को पति कहते हैं, किसी को मित्र बनाते हैं, थोड़ा-सा एक आस-पास संसार खड़ा करते हैं, उस संसार में हमें लगता है कि अपने लोग हैं, यह अपना घर है। लेकिन जो भी थोड़ा-सा जागेगा वह पायेगा कि इस संसार में बे-घरबार होना नियति है, यहां घर धोखा है, हम यहां बेघर हैं। बुद्ध ने अपने भिक्षुओं को अनेक नाम दिये उनमें एक नाम है 'अग्रही'—जिसका कोई घर नहीं। इसका यह मतलब नहीं है कि वह किसी घर में किसी छप्पर के नीचे न रुकेगा। वैसे तो बुद्ध को भी कभी वर्षा होती है तो छप्पर के नीचे रुकना पड़ता है, कभी धूप होती है तो छप्पर के नीचे सोना पड़ता है, मतलब यह है कि जिसकी यह भ्रांति मिट गई कि इस संसार में मेरा कोई घर है, पड़ाव है, सराय है लोग आते हैं और जाते हैं लेकिन यहां कोई ठहरता नहीं। तुम नहीं थे तो बहुत लोग यहां थे, तुम नहीं होगे बहुत लोग यहां रहेंगे, यह भीड़ चलती ही रहती है, यह बाजार भरा ही रहता है, तुम हटे नहीं कि कोई दूसरा तुम्हारी जगह को भर देता है। तुम गये नहीं कि कोई दूसरा तुम्हारे घर को अपना घर समझ लेता है।

एक सम्राट हुआ एब्राहिम, फिर पीछे वह फकीर हो गया, कीमती फकीर हो गया, बड़े सूफियों में उसका नाम है, रात सोया था तो उसे लगा कि ऊपर छप्पर पर कोई चल रहा है, तो उसने चिल्ला के पूछा कि कौन नासमझ कौन है चोर लुटेरा ? छप्पर पर क्या कर रहे हो, पर उस आदमी ने कहा कि तुम्हारे छप्पर से मुझे कुछ लेना देना नहीं। मेरा ऊंट खो गया है, मैं उसको खोज रहा हूं लेकिन महल के छप्पर पर कहीं ऊंट खोते हैं ? एब्राहिम समझा

यह आदमी पागल है लेकिन फिर भी उस आदमी की आवाज में कुछ बल था और जब उसने कहा कि सो जाओ तुम्हारे छप्पर से मुझे कुछ लेना देना नहीं, मैं अपना ऊंट खोज रहा हूं, तो उसकी आवाज में कुछ बात ही और थी, वह आवाज भीतर तक चली गई और रात भर एब्राहिम सो न सका और सोचता रहा यह आदमी पागल है या उसका कोई प्रयोजन है।

सुबह उसने गांव में आदमी भेजे कि उस आदमी को खोजो जो रात छप्पर पर ऊंट खोज रहा था, उससे मैं मिलना चाहता हूं लेकिन उसका मिलना मुश्किल था। उसका कोई नाम पता नहीं, लेकिन दोपहर में जब दरबार भरा था, एब्राहिम सिंहासन पर बैठा था तब उसके पहरेदार आये और उन्होंने कहा कि एक आदमी बड़ा उपद्रव मचा रहा है और बड़ा बलशाली आदमी है, उसकी आंखों में चमक है और जब वह कड़क के कुछ कहता है तो छाती धकधका जाती है। एब्राहिम ने पूछा—वह कहता क्या है? पहरेदार ने कहा वह कहता है कि इस धर्मशाला में मुझे कुछ दिन रुकना है और हमने उसे समझाया कि यह राजा का महल है कोई धर्मशाला नहीं है, उसका निवास है, कोई सराय नहीं, सराय बाजार में है तू वहां जाकर रुक जा तो वह कहता है मैं उससे मिलना चाहता हूं जो इसको अपना निवास कहता है। एब्राहिम ने कहा उसको छोड़ो मत उसे जल्दी भीतर लाओ, यह वही आदमी होना चाहिए जो रात छप्पर पर ऊंट खोज रहा था। वह आदमी भीतर लाया गया तो एब्राहिम ने कहा यह क्या बद्तमीजी है? तुम मेरे निवास को सराय कहते हो? उस आदमी ने कहा बद्तमीजी तुम्हारी है क्योंकि पहले भी मैं आया था तब एक दूसरा आदमी यह बद्तमीजी कह रहा था, तुम नहीं थे तब इस सिंहासन पर एक दूसरा आदमी था, तब कहता था यह मेरा मकान है. उसके पहले भी मैं आया था तब मैंने एक तीसरे आदमी को पाया था और मैं तुम्हें भरोसा दिलाता हूं मैं जब दुबारा आऊंगा तुम यहां नहीं पाये जाओगे, कोई और दावा करेगा—मैं किसकी मानूं? एब्राहिम ने कहा कि वह मेरे पिता थे और जब तुम उसके पहले आये थे तब वे मेरे पितामह थे। वह फकीर पूछने लगा कि अब वह कहां हैं, जिनका यह निवास है। यह घर तो यहां का यहां है, वे कहां हैं? एब्राहिम ने कहा वह तो जा चुके लेकिन तब उसकी हिम्मत टूट गई। उस फकीर ने कहा—यहां लोग आते

हैं, जाते हैं, ठहरते हैं इसको तुम निवास क्यों कहते हो ? मैं इस सराय में कुछ दिन रुकना चाहता हूं। एब्राहिम बड़ी हिम्मत का आदमी रहा होगा, वह उठा और उसने कहा कि अगर यह सराय है तो तुम यहां रुको, मैं यहीं से जाना चाहता हूं, बात तुम्हारी ठीक लगती है, मेरा भी घर न रहा यह, अब मैं घर की तलाश करूंगा और जब तक घर न मिल जाये तब तक लौटने का कोई उपाय नहीं। एब्राहिम बड़ा फकीर हो गया, सिद्ध हुआ, उसने घर अपना पा लिया एक दिन। लेकिन वह घर यहां नहीं है जहां तुम्हारी आंखें तलाशती हैं। वह घर वहां है जहां तुम्हारी आंखें मुड़ती ही नहीं। यह तो परदेश है जहां तुम देख रहे हो, सुन रहे हो। लेकिन जहां से तुम देख रहे हो, जहां से तुम सुन रहे हो वहीं तुम्हारा स्वदेश है, वह पक्षी परदेश में था लेकिन जब भी कोई परदेश में होगा तो परतन्त्र होगा। स्वदेश में न हो तो स्वतन्त्र कैसे हो सकते हो ? जब तुम स्वयं में नहीं हो तो स्वतन्त्रता का क्या अर्थ हो सकता है ? जब तुम विदेशियों से घिरे हो, विजातियों से घिरे हो तब तुम गुलाम रहोगे, अपने ही घर में आदमी निश्चित होकर मुक्त हो सकता है, उस घर में जहां से न तो आना होता है, न जाना होता है, जहां तुम सदा ही रहे हो, जहां तुम सदा ही रहोगे, जो सनातन है, जो अनादि और अनन्त है।

तुम उस पक्षी की हालत में हो, वह पक्षी तुम्हारा प्रतिनिधि है। पक्षी का मालिक जा रहा था पक्षी के देश को, उस पक्षी से पूछा उसने कि कुछ तुम्हारे सगे संबंधियों को कोई खबर देनी हो, तुम्हारे मित्र, प्रियजनों को कोई संदेशा पहुंचाना हो, कोई चिट्ठी-पत्री तो कह दो मैं जा रहा हूं। यहां दूसरी बात समझ लें— मालिक हो जा सकता है, परतन्त्र कहां जाये ? कैसे खोजे ? मालिक ही खोज सकता है इसलिये हिन्दुओं ने खोजियों को स्वामी कहा है, स्वामी का अर्थ मालिक, संन्यासी को स्वामी का नाम दिया है, जिसकी कम से कम इतनी मालकियत तो है कि वह खोज पर जायेगा, तुम्हारी इतनी भी मालकियत नहीं कि तुम खोज पर निकलो, तुम पिंजड़े में बन्द हो, तुम तो किसी से कहोगे कि तुम जा रहे हो तो कुछ खबर ले जाना या कुछ खबर ले आना, तुम खुद नहीं जा सकते तुम्हारे पंख तो बन्द हो गये। इसलिये तुम्हें गुरुओं के पास जाना पड़ता है, किसी मालिक को खोजना पड़ता है जो स्वदेश की खबर दे। इसलिए बिना गुरू के तुम्हारा काम

न चल सकेगा। यह पक्षी तो पिंजरे में बन्द ही रह जाता लेकिन मालिक इसका जा रहा है, मालिक जा सकता है, तो जब तक तुम किसी अर्थों में मालिक नहीं बनते तुम भी न जा सकोगे। इसलिये साधना का पहला सूत्र है थोड़ी मालकियत उपलब्ध करना। मालकियत का मतलब यह है कि तुम्हारा मन तुम्हें न चलाये, तुम मन की छाया बन के न रहो वरन् तुम मन के मालिक हो जाओ और मन तुम्हारे पीछे चले। जब तुम मन से कहो शान्त हो जाओ, तो मन शान्त हो जाये, जब तुम मन से कहो विचार करो तो मन विचार करे, जब तुम कहो निर्विचार हो जाओ तो मन तत्क्षण निर्विचार हो जाये। मन तुम्हारी आज्ञा माने तो तुम मालिक, इसलिये ध्यान साधना का पहला सूत्र है क्योंकि ध्यान से धीरे-धीरे तुम्हारी मालकियत उभरेगी अन्यथा तुम पिंजड़े में ही बन्द रहोगे। मन तुम्हारा पिंजड़ा है और तुम भूल ही गये हो, मन की मानते-मानते तुम बिल्कुल ही भूल गये हो कि तुम मालिक हो, तुम आदेश दे सकते हो और मन मानेगा।

एक झेन फकीर लिंची बोल रहा था। एक जिद्दी आदमी, एक उपद्रवी आदमी बीच में खड़ा हो गया और उसने कहा कि तुमने लोगों को भरमा रखा है, तुमने लोगों को मालूम होता है सम्मोहित कर है, हिप्नोटाइज कर लिया है। यह तुम्हारे शिष्य, जो तुम्हें चारों तरफ से घेरे हैं, तुम जो भी कहते हो यह वही करते हैं, तुम मुझे मनवाओ, तुम मुझे आज्ञा देके देखो तब समझूं कि तुम गुरु हो। लिंची ने कहा मैं जरा कम सुनता हूं, तुम इधर आओ, वह आदमी आगे आया, वह आके बाएं खड़ा हो गया, लिंची ने कहा बायां कान तो मेरा बिलकुल बेकार है तुम दाएं आओ, वह आदमी दाएं आया, उसने कहा कि भूल हो गई। लिंची ने कहा, दायां खराब है, बायां आओ बायां तो बिलकुल ठीक है तुम बायें आओ, वह बायें आया। लिंची ने कहा बैठो क्योंकि खड़े खड़े क्या बात होगी? वह आदमी बैठा, लिंची ने कहा मैं अपना व्याख्यान शुरू करूं यह आदमी बड़ा आज्ञाकारी है, जो भी मैं कहता हूं वही करता है। तू तो बिल्कुल अनुयायी होने के योग्य है, लिंची ने कहा तू तो परम शिष्य हो जायेगा। तुम मन को जब तक बाएं बिठा सको, दाएं न हटा सको तब तक तुम मालिक नहीं हो सकते और मन बड़ा जिद्दी है। सच तो यह है कि तुम जो भी मन को कहो उससे उल्टा मन तत्क्षण करके दिखलाता है क्योंकि

मन की मालकियत खोटी अगर तुम्हारी मान ले, तुम कहो बैठो तो मन खड़ा हो जाता है ताकि तुम्हें साफ हो जाये कि यह भूल दुबारा मत करना, तुम बिना मना न पाओगे मैं मानने वाला नहीं, यह बहुत पुरानी आदत हो गई है। जैसे किसी गुलाम को मालिक, धीरे...ध रे...धीरे .. धीरे...र्ध रे भूल ही गया हो कि वह गुलाम है। और मोह से इतना भर गया हो कि गुलाम जो कहता है मालिक मानने लगा हो और अब तो गुलाम को समझाना मुश्किल है, अनेक जन्मों में तुमने मालिक को गुलाम बन जाने दिया लेकिन इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता। तुम एक दफा ठीक से आवाज दोगे अगर तुमने पूरे प्राणों से आवाज दी, गुलाम वहीं के वहीं चिटक के खड़ा हो जाये। क्योंकि आखिर गुलाम गुलाम है, तुम मालिक हो। मालकियत खोई नहीं जा सकती आदत वश तुम भूल सकते हो लेकिन मालिक जायेगा, गुलाम कहां जायेगा, गुलाम की कोई यात्रा नहीं है, मालिक जा रहा था स्वदेश पक्षी के तो उस मालिक ने पूछा कि कोई खबर, कोई संदेश तुझे ले जाना है तेरे संबंधियों के लिये, निश्चित संबंधी स्वदेश में ही हो सकते हैं। यहां तो संबंध नाम मात्र का है, यहां तो संबंध झूठे हैं।

जो मित्र था आज, कल शत्रु हो सकता है। पश्चिम के चाणक्य 'मेरिवली' ने एक किताब लिखी है 'दी प्रिन्स' उसमें उसने राजकुमारों और सम्राटों को जो सलाहें दी हैं, उसमें एक सलाह यह भी है कि अपने मित्र को वह मत कहना जो तुम अपने शत्रु को नहीं कहना चाहते क्योंकि जो आज मित्र है कल शत्रु हो जाता है और तुम अपने शत्रु के संबंध में भी वह बात मत कहना जो तुम अपने मित्र के संबंध में न कहना चाहोगे क्योंकि जो आज शत्रु है कल मित्र हो सकता है। इस संसार में नाते रिस्ते ऐसे बदल रहे हैं जैसे हवा में कंपते वृक्ष के पत्ते, कब दिशा बदल लेते हैं हवा पर निर्भर है खुद की कोई दिशा नहीं है। जो आज पत्नी है कल तलाक दे सकती है, शत्रु हो सकती है, जो आज बेटा है कल हत्या कर सकता है, हत्यारा हो सकता है। यहां कौन तुम्हारा ? परदेश में कोई किसी का हो भी नहीं सकता। यहां सभी संबंध छाया जैसे हैं, जैसे दो आदमी खड़े हों और उन दोनों की छायाएं मिल रही हैं, वह कोई संबंध है ? वह आदमी हटे कि छायाएं हट जाएंगी, छायाओं का कोई मिलन थोड़े ही होता है ? प्लेटो ने यूनान के बहुत बड़े विचारक ने कहा है कि यह जगत छाया की तरह

है, असली जगत कहीं और है। यह जगत प्रतिबिंब है। जैसे कोई नदी के किनारे खड़ा है, पानी में प्रतिबिम्ब बनता है ऐसे ही इस जगत में प्रतिबिम्ब बन रहे हैं। वह प्रतिबिम्ब आपस में मिलते भी हैं लेकिन उनका मिलना वास्तविक नहीं क्योंकि छायाएं हैं। ऊपर इस जगत के विपरीत कोई और जगत भी है, उस जगत में ही मिलना होता है। इस जगत में तो नाम मात्र का खेल है, यहां तो लोग खेल, खेल रहे हैं, यहां तो दोस्ती एक खेल का नाम है, दुश्मनी दूसरे खेल का नाम है। और यहां बदलने में क्षण नहीं लगता, यहां सभी चीजें परिवर्तनशील हैं। डेराक्युलोटे ने कहा है कि एक चीज को छोड़कर सभी चीजें बदलती हैं, और वह, एक चीज परिवर्तन है। वह यहां नहीं बदलता, बाकी सब बदल जाता है तो उसके न बदलने के क्या मतलब हैं? परिवर्तन सिर्फ स्थिर मालूम होता है, बाकी सब चीजें अस्थिर हैं। मालिक ने पूछा कि जा रहा हूं तेरे देश कोई खबर तो नहीं ले जानी है?

पक्षी निश्चित बुद्धिमान रहा होगा उसने खबर नहीं भेजी, उसने कहा बजाए खबर ले जाने के सिर्फ मेरी दशा वहां बता देना, बड़ा बुद्धिमान रहा होगा। तुमसे अगर कोई कहे कि जा रहा हूं मैं तुम्हारे देश कोई खबर ले जानी है? तुम लम्बी चिट्ठी लिख के रख दोगे। उसने बड़ी सार की बात कही और क्या खबर है? इतनी ही खबर है कि मैं यहां बन्द हूं, पिंजड़े से घिर गया, खुला आकाश छिन गया, पंख व्यर्थ हुये जा रहे हैं। उड़ना भूलता जा हूं। जिन्दगी एक दुःख और बोझ है? इतनी खबर वहां दे देना। चले जाना जंगल में और जहां मेरे मित्र परिचित हैं, जहां मेरे सगे संबंधी है, जोर से चिल्ला के कह देना कि ऐसी-ऐसी घटना घटी है, तुम्हारा साथी बन्द है विदेश में। पक्षी ने बड़ी होशियारी की, यह खबर उसने भेजी कि शायद कोई पक्षी जानता हो स्वतंत्र होने का राज, शायद किसी को तरकीब पता हो, शायद कोई पहले परतंत्र रह चुका हो और देश वापिस लौट सका हो, शायद कोई इस मुसीबत से गुजर चुका हो और उसके हाथ में कुंजी हो। शायद कोई गुरु मिल जाये, गुरु का इतना ही अर्थ है जो कभी परतंत्र था और अब स्वतन्त्र है। जो छायाओं के जगत से वास्तविकता के जगत में पहुंच गया, जिसकी सरायें हट गईं और जिसका घर आ गया। लेकिन वही तुम्हारा गुरु हो सकता है। एक बहुत मजे की बात है परमात्मा सीधा

तुम्हारा गुरु नहीं हो सकता क्योंकि उसने कभी कोई परतंत्रता नहीं जानी। इसलिये स्वतंत्रता की कुंजियां तुम्हें उसके पास न मिलेंगी। परमात्मा तुम्हें मिल जाये और तुम उससे पूछो भी तो वह तुम्हारी स्थिति न समझ सकेगा। तुम उससे कितना भी कहो मैं परतंत्र हूं, बड़ी मुश्किल में हूं, कोई तरकीब बताओ, परमात्मा तुम्हें कोई तरकीब न बता सकेगा क्योंकि परमात्मा किसी सराय में कभी ठहरा नहीं। वह घर में ही है। इसलिये यह धारणा सभी धर्मों ने पैदा की कि परमात्मा खुद जवाब नहीं दे सकता।

तो परमात्मा का बेटा जीसस पैदा होता है, यह सिर्फ कहानी है लेकिन जीसस के पैदा होने का अर्थ है पहले जीसस मनुष्य बनते हैं, पहले वह परतंत्रता से गुजरते हैं, पिंजड़े में कैद होते हैं, तभी स्वतंत्रता खोजी जा सकती है। हिन्दुओं की अवतार की धारणा है, परमात्मा सीधा उत्तर क्यों नहीं देता? क्या जरूरत है राम, कृष्ण की? आत्मा से सीधा सवाल क्यों नहीं आता? जैन कहते हैं तीर्थंकर से सवाल का जवाब आयेगा, बौद्ध कहते हैं बुद्ध उत्तर देंगे, अस्तित्व उत्तर क्यों नहीं देता? पूछो आकाश से उत्तर क्यों नहीं देता? आकाश उत्तर नहीं दे सकता क्योंकि आकाश कभी पिंजड़े में बंद नहीं रहा उत्तर वही दे सकता है जो तुम्हारी मुसीबत समझ रहा हो। चाबी उसी के पास हो सकती है जो मुसीबत में भी रहा हो और बाहर भी हो गया हो। उस कैदी को पूछो जेल के बाहर निकलने का राज जो छलांग लगा के निकल गया, जो बाहर ही हैं उनसे जेल के बाहर निकलने का राज न पता लगा सकोगे। इसलिये गुरजियेफ कहता था उस कैदी की तलाश करो जो किसी तरह जेल के बाहर निकल गया है, वही तुम्हारा गुरु है। जो जेल के बाहर है वह मिल भी जाये तो तुम्हारे किसी काम का नहीं है। क्या बतायेंगे तुम्हें क्योंकि उन्हें पता ही नहीं जेल क्या है? उन्हें पता नहीं कि कितने मजबूत पत्थरों की दीवालें हैं, उन्हें पता नहीं कि कहां से निकलने का उपाय हो सकता है। जो निकल गया है कारागृह के उसे पकड़ो, वही तुम्हारा गुरू है, तो उस पक्षी ने कहा कि तुम जंगल में जाकर चिल्ला देना कि मेरी ऐसी दशा है। और कुछ कहना नहीं है और कुछ कहने को भी नहीं है, सोचा उसने कि अगर कोई जानता होगा राज तो किसी न किसी तरह खबर आ जायेगी। गया यह आदमी जंगल में जाके वहां उसने देखा कि उस पक्षी के जाति बिरादरी के लोग वृक्षों पर

बैठे थे, चिल्लाकर उसने कहा कि सुनो तुम्हारी जाति का, तुम्हारे जगत का एक पक्षी, तुम जैसा एक पक्षी कारागृह में बन्द है, पिंजड़े में बन्द है, उसने अपने दुःख की पीड़ा की खबर भेजी है, यह सुनते ही एक पक्षी तत्क्षण वृक्ष से नीचे गिर पड़ा, मर गया। आदमी तो बड़ा दुःखी हुआ कि यह भी मैं कैसी खबर लाया आप सबों को, क्या इतनी पीड़ा हो गई इस सगे संबंधी को, वह शायद पति रहा हो, पत्नि रहा हो, इतनी पीड़ा कि खबर पाके कि अपना कोई बंद है, यह भी मर ही गया, धक्का लग गया। आदमी भी बेचैन हो गया फिर अब तो कुछ किया नहीं जा सकता, घटना घट गई थी, वह वापिस लौटा, उदासी से उसने जाके पक्षी को कहा कि जब मैंने तेरी खबर दी और जब मैंने तेरे दुःख की कथा कही तो बड़े दुःख का समाचार है कि एक पक्षी तत्क्षण वृक्ष से नीचे गिर के मर गया, मुझे बड़ी पीड़ा हुई लेकिन जब यह कह रहा था देखा उसका खुद का पक्षी पिंजड़े में गिर के मर गया। यह तो कुंजी थी जो गुरू ने भेजी थी और गुरू शब्दों से नहीं दे सकता था, आचरण से ही दे सकता है, शब्द क्या देंगे? गुरू आचरण से दे सकता है, गुरू ने व्यवहार करके कुंजी दे दी, बड़ा होशियार पक्षी रहा होगा, बड़ी मजबूत कारागृह से छूटा होगा और यही तरीका उसने अख्त्यार की होगी जो तरकीब उसने भेजी। मर गया होगा पिंजड़े में और जब कोई मर जाता है तो मरे हुये को तो कोई कैद नहीं करता, जिन्दा तो कैद किया जा सकता है, मरे को तो कोई कैद नहीं करता इसलिये लाओत्से ने कहा है मरे हुये की भांति हो जाओ फिर तुम्हें कोई कैद न करेगा। इसलिये उपनिषद कहते हैं जीते जी मुर्दा हो जाओ फिर तुम्हें कोई बांधेगा नहीं, क्योंकि मुर्दे को तो लोग जलाने ले जाते हैं, बांधता कौन है? बांधते तो तुम्हें इसलिये हैं कि जिन्दा हो और लाओत्से ने कहा है कि तुम जितने ज्यादा जिन्दा दिखाई पड़ोगे उतने ज्यादा मुसीबत में पड़ोगे, क्योंकि उतने ज्यादा लोग तुम्हें बांधेंगे, तुम जितने ज्यादा सुन्दर हो, उतनी झंझट में पड़ोगे, उतने ज्यादा लोग तुम्हें बांधेंगे, तुम जितने ज्यादा बुद्धिमान हो उतना तुमने मुसीबत को निमंत्रण दिया क्योंकि उतने ज्यादा लोग तुम्हें बांधेंगे। तुम मुर्दा हो जाओ, न बुद्धि है, न रूप है, कुछ भी नहीं है, तुम ना कुछ हो फिर कोई तुम्हें नहीं बांधेगा। लाओत्से और उसका अनुयायी च्वांगत्से ऐसी बहुत सी कहानियों में रस लेते हैं।

एक जंगल से लाओत्से गुजर रहा है, वहां सारे वृक्ष काटे जा रहे हैं सिर्फ एक वृक्ष नहीं काटा जा रहा है, वृक्ष बड़ा है हजार बैलगाड़ियां उसके नीचे रुक जायें ऐसी उसकी छाया है। लाओत्से ने कहा कि इस वृक्ष से जाकर पूछो कि तेरा राज क्या है? सब जब कट गये तू कैसे बचा?

शिष्यों ने कहा वृक्ष क्या जबाव देगा? लाओत्से ने कहा फिर भी तुम पूछो पता लगाओ, इन मजदूरों से पूछो जो दूसरे वृक्षों को काटे जा रहे हैं, जंगल साफ किया जा रहा है। शिष्य गये, उन्होंने मजदूरों से पूछा, उन्होंने कहा वह वृक्ष किसी काम का नहीं, बिलकुल ऐसा बेकाम वृक्ष दुनिया में खोजना मुश्किल है। उसके पत्ते जानवर चरते नहीं, उसकी शाखाएं ऐसी टेढ़ी मेढ़ी हैं उनसे कुछ भी नहीं बनाया जा सकता और उसकी शाखाओं को अगर जलाओ तो ऐसा भयंकर धुआं उठता है कि घर में रहना मुश्किल हो जाये। इसलिये उसको जलाया भी नहीं जा सकता, न उसका तुम ईंधन बना सकते हो न फर्नीचर, न पत्ते वृक्ष के किसी के खाने के काम आते हैं। ऐसा बेकार वृक्ष पृथ्वी पर है ही नहीं, इसलिये बचा है। लाओत्से ने कहा समझ लो अगर तुम्हें भी बचना हो तो बिल्कुल बेकार हो जाओ, यह वृक्ष के पास कुंजी है इससे सीख लो, सब जब काटे जा रहे हैं तब देखो यह आकाश में कैसा फैल रहा है उन्मुक्त, इसे कोई भय नही, जो सीधे थे वह सबसे पहले काट दिये गये, जो सुन्दर थे, सुडौल थे, उनका फर्नीचर बन चुका है, जो धनी थे और अकड़े थे आकाश में अब उनको कहीं भी खोजना आसान नहीं है। तुम इस वृक्ष की भांति होते रहो, होओ, तभी तुम्हारा जीवन फूलेगा, खिलेगा। लाओत्से गांव से गुजरा, उस गांव में लोग पकड़े जा रहे हैं क्योंकि राज्य युद्ध में उलझा था और हर जवान, शक्तिशाली आदमी को पकड़ा जा रहा था सिर्फ एक आदमी जो कुबड़ा था वह भर छोड़ दिया गया था। लाओत्से ने कहा इस कुबड़े से पूछो तेरे बचने की क्या तरकीब क्या है? उस कुबड़े ने कहा चूंकि मैं कुबड़ा हूं मैं किसी काम का नहीं, मेरी कमर झुकी है। लाओत्से ने कहा सीख लो अगर कमर सीधी रखी, काटे जाओगे बकरों की तरह युद्ध के मैदान पर। यह कुबड़ा बच गया है, यह किसी काम का नहीं है, बेकाम है।

लेकिन बेकाम तो तभी तुम पूरी तरह हो पाओगे जब तुम मुर्दे की भांति हो, नहीं तो थोड़ा न बहुत काम रहेगा, थोड़ा न बहुत काम बचेगा ही, कुबड़ा भी किसी न किसी

काम में लगाया जा सकता है और यह बेकार वृक्ष का भी कोई न कोई उपयोग खोजा जा सकता है, पड़ोसियों को सताने के लिये धुआं करना हो कि मच्छर भगाने हों, कोई न कोई रास्ता खोजा जा सकता है—इस वृक्ष का, जब तक तुम हो तब तक कुछ खतरा है। लेकिन जब तुम नहीं हो तो कोई खतरा नहीं, तब उस खतरे के बाहर हुए। यह पंछी पिंजड़े में रह चुका होगा और मर के बाहर हुआ, मरने में इसने कुन्जी पाई, जब तक न मरा तब तक बंद रहा, जिंदगी छोड़ दी पिंजड़ा छूट गया, यह मुक्त हो गया। संन्यास की परिभाषा है संसार में मृतवत हो जाना, फिर तुम्हें कोई पकड़ेगा नहीं, फिर कोई तुम्हें बांधेगा नहीं, कौन मुर्दे को बांध रहा है, मुर्दे को लोग घड़ी भर घर में नहीं रखते। यहां मरा नहीं कि वहां उसको उठाने की तैयारी करते हैं, जल्दी लकड़ी बांधी जाने लगती है, अर्थी तैयार होने लगती है, घर के लोग तो लोग, पास-पड़ोस के लोग जो कभी किसी काम नहीं आए वह जल्दी बांस वगैरह इकट्ठा करके तैयारी करने लगते हैं। क्योंकि घर के लोग रोने धोने में लगे हैं, जल्दी करनी है, तुम बंधे और चले। यह पक्षी जानता था कुंजी लेकिन इस कुंजी को वह कैसे पहुंचाये ? क्योंकि पहचान वाले के हाथ कुंजी विकृत हो सकती है। माध्यम कुंजी नष्ट कर सकता है, शब्द माध्यम है, आचरण 'इमिजिएट' है, सीधा है। अगर यह शब्दों से कहता तो यह आदमी के हाथ यह शब्द पड़ जाते फिर यह शब्दों में से कितना छोड़ता, कितना बचाता, कैसी व्याख्या करता, मुश्किल था। क्या खबर पहुंचती कहना मुश्किल है, शास्त्रों से जो खबर गुरुओं ने पहुंचाई वह तुम तक पहुंची नहीं। यह आदमी अगर सुन के ले जाता तो शास्त्र बन जाता, यह संदेश पहुंच नहीं सकता था इसलिये गुरुओं ने दो तरह से संदेश भेजा है।

एक तो शास्त्रों से भेजा है जो नहीं पहुंचा, वह कोशिश असफल रही, दूसरा संदेश दिया है आचरण से, अपने होने से, अपने होने के ढंग से—लेकिन वह होने का ढंग तो तभी पहुंच सकता है जब गुरु मौजूद हो इसलिये जब तक जीवित गुरु मिले तब तक शास्त्रों में भटकना ही मत। जब जीवित गुरु न मिल सके तभी शास्त्रों में भटकना, जीवित गुरु के सामने शास्त्र दो कौड़ी का है। वह न हो तो शास्त्र का कोई उपयोग है। तब फिर टटोलना, अंधेरे में खोजना लेकिन जिन्दा अगर ले जाने को तैयार हो तब धर्म की किताबें पढ़ने

मत बैठे रहना क्योंकि तुम चूक रहे हो। माध्यम से खबर भेजी जाय तो विकृत हो जाती है, वह पक्षी गिर पड़ा वृक्ष से, यह आदमी अब इसमें कुछ भी बदल ना सका, आचरण सीधी चोट करता है। यह आदमी अवाक रह गया, उस अवाक क्षण में इसके विचार भी चुप हो गये होंगे जब पक्षी मर के गिरा, एक क्षण को वह ध्यानस्थ हो गया होगा, पक्षी बड़ा ही होशियार था, उसने इस माध्यम का ठीक उपयोग किया। एक क्षण को जब पक्षी मर के वृक्ष से गिरा होगा तो इसके विचार रुक गये होंगे क्योंकि घटना इतनी आकस्मिक थी। पक्षी कुछ कहता है तो इस आदमी के विचार चलते रहते, यह सुनता लेकिन इसके विचार उसमें मिश्रित हो जाते, शुद्ध बात ही न पहुंच पाती, शुद्ध कुंजी न पहुंच पाती। कुंजी अगर जरा भी तिरछ' हो जाये तो ताले नहीं खोलती। कुंजी तो ताला तभी खोलती है— वैसी ही पहुंचे जैसी दी गई, उसमें रत्ती भर भेद नहीं चाहिये क्योंकि ताला बड़ा सूक्ष्म है। पक्षी गिरा, यह आदमी अवाक रह गया, इसका धक्का भी लगा कि यह मैंने कौनसी बात कही, कैसा अपसगुन अपने हाथ लिया, इसके मृत्यु का जिम्मा मेरा हुआ, मैं हत्यारा बना अकारण, वापिस लौटा, पर इसे ख्याल भी न आया कि इसके माध्यम से एक कुंजी भेजी जा रही है, इसे पता भी न चला, पता चलने का कोई कारण भी नहीं था क्योंकि न कुछ कहा गया था न कुछ सुना गया था, शब्द कहे होते तो यह सन्देश समझता, आचरण भेजा जा रहा था, यह उसे ख्यालों में भी न आया, यह कल्पना में भी न उठा, तुम्हारी कल्पना में भी न उठता। अगर उसको ख्याल में आ जाता तो शायद वह खुद भी मुक्त होने की कुंजी पा जाता, तो अक्सर ऐसा भी होता है, ऐसा बहुत बार हुआ है। महावीर के गणधर, उनके शिष्य जिनके माध्यम से उन्होंने कुंजियां फैलाईं लेकिन उनमें उनका खास शिष्य गौतम अन्त समय तक भी अज्ञानी रहा और वह सबसे कुशल था संदेशवाहक, महावीर जो संदेश उससे भेजते वह शुद्ध पहुंच जाता लेकिन अपनी कुंजी, अपने ताले को वह नहीं खोज पाया। यही इस आदमी के साथ हुआ। ऐसा बहुत बार हुआ। रामकृष्ण ने विवेकानन्द के हाथ कुंजी भेजी। सारी दुनिया में, कुछ लोगों ने उस कुंजी से ताले खोले लेकिन विवेकानन्द नहीं खोल पाये अपना ताला, उन्हें पता ही नहीं चला कि क्या हो रहा है। उस आदमी को स्मरण ही न रहा, अनु-

मान भी न रहा, विचार भी न उठा कि कुछ उसके द्वारा भेजा जा रहा है। भेजनेवाला इतना कुशल है अगर कुंजी कह कर दी जाये तो उसमें फर्क पड़ जाएंगे। अगर कुंजी कह कर दी जाये कि सम्हाल के रखना तो यह आदमी उसे खो भी सकता है, क्योंकि जब तुम किसी चीज को बहुत सम्हालते हो तो खोने का डर पैदा हो जाता है, जब तुम किसी हीरे को तिजोरी में रखते हो तो चोरी हो जाता है। इसलिये जो बहुत बुद्धिमान हैं वे हीरे को कचरे की टोकरी में रख देते हैं वहां से कभी चोरी नहीं जाता, कचरे की टोकरी में कौन फिकर करता है।

यह आया वापिस, पक्षी प्रतीक्षा कर रहा था इसने कहा कि बड़ी अनूठी बात हो गई भरोसा नहीं आता, दुखद घटना घटी है, तेरा कोई प्रेमी, तेरा कोई सम्बन्धी, अपना कोई निकट का रिस्तेदार, जब मैंने जंगल में जाके कहा कि तुम्हारा एक साथी ऐसा ऐसा पिंजड़े में बन्द है, पिंजड़े में है, परतन्त्र है, सुनते ही इतना दुःखी हो गया कि दुःख में उसका प्राणान्त हो गया। वह गिरा और मर गया लेकिन जब वह यह कहने में संलग्न था तभी उसने देखा कि उसका खुद का पक्षी पिंजड़े में गिर के मर गया, पिंजड़े की तलेटी में पड़ा है निष्प्राण, फिर भी वह न समझ पाया, वह आप अक्सर नहीं समझ पाते, पंडित शास्त्रों को ढोते हैं सदियों तक और समझ नहीं पाते, पंडित एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संदेश पहुंचा देते हैं, और उनके ताले बन्द होते हैं, वे कारागृह में रह जाते हैं। फिर भी नहीं समझ पाया, तब भी उसने यही समझा कि यह बात ही कुछ गड़बड़ है, यह कहना ही उचित नहीं हुआ, इसका सगा संबंधी वहां मर गया और उसकी मरने की खबर सुनते ही यह यहां मर गया। यह बात मुझे उठानी ही नहीं थी लेकिन जब पिंजड़े में पक्षी मर गया तो खोलने के सिवाय कोई उपाय न था, पिंजड़ा उसने खोल दिया, खोलते ही वह हैरान हुआ, पक्षी तड़फड़ाया, आकाश की तरफ उड़ गया। यह स्वतन्त्रता का राज था, पक्षी समझ गया कि क्या है उपाय, पक्षी को नहीं बांधा हुआ है यह वह समझ गया, पक्षी के जीवन को बांधा हुआ है। यह जो पिंजड़ा है यह पक्षी के जीवंतता के लिए है, पक्षी के लिए नहीं है। पक्षी अगर मर जाये तो यह पिंजड़ा खत्म हो जाता है, जिसने दरवाजा बन्द किया वह खुद ही खोल देगा, यही सूत्र है, इस पिंजड़े से जहां तुम हो, इस परतन्त्रता में जहां तुम बन्द हो इन जंजीरों में तुम घिरे

हो, यह जंजीरें तुम्हारी जीवंतता के लिए हैं, तुम निष्प्राण हो लो, इसी क्षण जिनने तुम्हें बांधा होगा वह तुम्हारा द्वार खोल देंगे, फिर खुला आकाश तुम्हारा है। मृतवत हो रहो अगर परम जीवन पाना है इसलिये जीसस कहते हैं, जो बचायेगा अपने जीवन को—वह खो देगा, जो खोने को राजी है उसका जीवन बच जायेगा। अगर तुम बचाओगे तुम पिंजड़े में रहोगे, तुम अपने ही हाथ लुटा दो, पिंजड़ा बेकार हो जाता है।

मृतवत हो जाने का क्या अर्थ हो सकता है? मृतवत हो जाने का अर्थ है तुम्हारी कोई वासना न हो तुम्हारी कोई चाह न हो क्योंकि चाह जीवन का पर्याय है वासना जीवन का पर्याय है। जब तक तुम मांगते हो, चाहते हो तब तक तुम जीवित हो। मुर्दा में और तुम में फर्क क्या है, क्योंकि मुर्दा कुछ मांगता नहीं, उसकी कोई चाह नहीं, मुर्दे और तुम में फर्क क्या है कि मुर्दा जहां है वहीं रहता है, तुम यात्रा करते रहते हो, तुम्हारी आकांक्षा तुम्हें भविष्य में दौड़ाती है, मुर्दा वर्तमान में है। तुम भविष्य में हो। बस यही फर्क है साथ चलने, न चलने से किसी के। जीवन और मुर्दा होने का सवाल नहीं है। जिस व्यक्ति की वासना मिट गई, वह मृतवत हो गया। इसलिये जो लोग जीवन के पक्षपाती हैं, जैसे नीत्से, नीत्से ने कहा है कि भारतीयों की बात भूल के भी मत सुनना, बुद्ध और महावीरों से दूर रहना, क्योंकि यह खतरनाक लोग हैं। वह कहता है कि अगर तुमने इनकी बात मानी तो तुम मृतवत हो जाओगे तुम मर जाओगे और जीवन है जीवन के लिये। अगर तुम्हें जीना है तो मेरी सुनो। नीत्से कहता है, फैलाओ अपनी वासना को जितनी फैला सको, बढ़ाओ अपनी आकांक्षाओं को जितनी बढ़ा सको। तुम्हारी महत्वाकांक्षा क्षितिज को छू ले और उसके भी पार निकल जाये, तुम रुकना मत अपनी वासना में तो ही तुम जी सकोगे। वह भी ठीक कह रहा है, क्योंकि वह दूसरा पहलू है अगर जीना है तो महत्वाकांक्षाओं को फैलाओ लेकिन जितनी बड़ी महत्वाकांक्षा होती है उतना ही छोटा पिंजड़ा हो जाता है। इसलिये सम्राट जिस बुरी तरह कैद होता है, भिखारी उस बुरी तरह कैद नहीं होता। सम्राट का महल अपने हाथ से ही बनाया हुआ कारागृह है। सम्राट के महल और कारागृह में इतना ही फर्क है कि कारागृह में हम सिपाही को खड़ा करते हैं ताकि भीतर का आदमी बाहर न जाये, सम्राट के महल में सिपाही को खड़ा करते हैं ताकि

बाहर का आदमी भीतर न चला जाये, बाकी सिपाही खड़ा है और कारागृह बराबर है। फर्क इतना है खुद का बनाया कारागृह है इसलिये सम्राट को समझ में नहीं आता कि मैं गुलाम हूं, कारागृह जब दूसरे बनाते हैं तब हमें समझ में आता है तुम गुलाम हो, जब तुम खुद ही बनाते हो तो मेहनत भी करते हो, गुलाम भी हो जाते हो।

पिंजड़े तुम खुद ही ढालते हो, तुम्हारी महत्वाकांक्षाएं तुम्हारे पिंजड़े बन जाती हैं। नीत्से भी ठीक कहता है, वह दूसरा पहलू है। वह बात तो ठीक ही कह रहा है, बुद्ध के विपरीत नहीं है बात। अगर समझो तो ठीक वही है। नीत्से कह रहा है अगर तुम जीवन की चाह रखते हो तो बढ़ाओ आकांक्षाओं को, महत्वाकांक्षा को और तनाव से घबड़ाओ मत, तनाव जीवन का हिस्सा है। अशांति से बैचेन मत हो क्योंकि अशांति के बिना तुम मर जाओगे, जीवन अशांति है। शांति की कामना मत करो क्योंकि शांति तो केवल मरे हुये को मिल सकती है, जब तक जी रहे हो तब तक कैसे तुम शांत होओगे और नीत्से कहता है जितनी बड़ी तुम्हारी महत्वाकांक्षा उतनी जीवन की ऊर्जा तुम्हारे भीतर बहेगी, तुम मृत्यु की मानो ही मत, तुम शाश्वत जीवन को चाहो, 'फार एवर.....,फार एवर' जो सदा चलता रहे, ऐसे जीवन की आकांक्षा करो, मृत्यु को मानो ही मत। इसलिये तुम्हारे जीवन के लिये अगर दूसरों को मिटाना पड़े तो भय मत करो, मिटाओ क्योंकि जीवन सदा दूसरे के जीवन पर जीता है। नीत्से की बात मान के हिटलर पैदा हुआ, वह नीत्से का शिष्य था तो उसने लाखों लोग काट डाले, दूसरे को मिटाओ क्योंकि यह तुम्हारे जीवन का ढंग है। बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है, बड़ा वृक्ष छोटे वृक्ष को सुखा देता है, जमीन से सारा पानी खींच लेता है, छोटा वृक्ष सूख जाता है, बड़ा हो, छोटे को सुखाओ और डरो मत, दुर्बल को मिटाओ ताकि तुम सफल हो जाओ। यह एक दृष्टि है जिसको चाहे हम बौद्धिक रूप से स्वीकार करें न करें हम सब व्यवहार करते हैं, यही हमारा आचरण है। बुद्ध और महावीर या सूफी फकीर कहते हैं कि यह तुम्हारा आचरण ही तुम्हारा कारागृह है, तुम दुःखी ही रहोगे, तुम्हारी वासनाएं तुम्हारे चारों तरफ जंजीर बन जाएंगी, तुम जितना चाहोगे उतना ही बंधोगे। एक और भी जीवन है अचाह का। लेकिन उस जीवन की कला मरना सीखना है इसलिये सब धर्म मृत्यु की कला है, कैसे तुम मिटो। लेकिन

ध्यान रहे मिट के भी तुम मिटोगे नहीं, तुम्हारा व्यर्थ है वही मिटेगा, तुम उसी दिये को बुझा सकते हो जो तेल बाती वाला है, जो दिया बिन बाती बिन तेल जल रहा है उसे तुम बुझा भी न सकोगे, तुम उसी को मिटा सकोगे जो तुम नहीं हो, तुम जो हो उसे तो मिटाया ही नहीं जा सकता।

इसलिये धर्म कहता है—मरो तो वही मरेगा जो मरणधर्मा है मरा ही हुआ है लेकिन तुम्हारे भीतर जो शाश्वत जीवन है वह तो मरेगा नहीं। पक्षी तो सिर्फ मरने का बहाना कर रहा था, उसके भीतर असली तो मरा नहीं था, नहीं तो होता कौन ? पक्षी भी मर के बहाना कर रहा था, अभिनय कर रहा है सिर्फ मृतवत पड़ा था, मृत था तो नहीं। यह तो टेकनिक था, यह तो विधि थी; लेकिन विधि कारागृह के मालिक को धोखा दे गयी, विधि ने काम किया, उसने दरवाजा खोल दिया। जीवन की धारा तो भीतर बह रही थी वह तो कभी मिटती नहीं, वह तो अकारण है, वह तो सदा है, उसका कोई अन्त और प्रारम्भ नहीं, वह धारा उड़ गई आकाश में, तुम जब भी मरने का बहाना करोगे तब तुम्हारे भीतर जो मरा हुआ है वही, तुम्हारे भीतर जो जीवन की धारा है वह नहीं मरती इसलिये संन्यास मृतवत होने की कला है। 'मृतवत', ध्यान रखना तुम मरे नहीं होते हो, मृतवत हो जाते हो, तुम्हारे भीतर जो जग रहा है, जी रहा है, वह तो जीता है और भी प्रगाढ़ता से जीता है क्योंकि तुम्हारे शरीर का धुंआ उसमें नहीं होता, ज्योति निर्धूम जलती है और जैसे ही एक बार लोगों ने समझा कि तुम मृतवत हो, तुम कारागृह के बाहर हो, खुला आकाश तुम्हारा है।

यह सूफियों की कुंजी है, यह समस्त सूफियों की कुंजी है, वह सूफी कहीं भी पैदा हुये हों। महावीर संन्यस्थ होना चाहते थे, मां ने कहा बात मत उठाना मेरे सामने, जब तक मैं जिन्दा हूं तब तक इस बात से मुझे बड़ा दुख होगा, मैं मर जाऊंगी, महावीर चुप हो गये। मां चल बसी, पिता भी चल बसे, मरघट से लौटते वक्त महावीर ने अपने बड़े भाई को कहा कि अब आज्ञा दे दो कि मैं संन्यासी हो जाऊं, यहां मां और पिता के लिये रुका था कि उनको दुःख न हो, भाई ने कहा कि तू भी बेहद पगला है, अभी हम घर भी नहीं लौटे, मां को दफना के आ रहे हैं, मुझ पर इतना बड़ा दुःख टूटा और तू संन्यास लेना चाहता है, यह बात मत उठा। महावीर चुप हो गये दो साल बीत गये। लेकिन घर

के लोगों को धीरे धीरे भूल ही गया कि महावीर घर में है, वे मृतवत हो रहे, उठते, चलते, बैठते लेकिन न किसी का विरोध, न किसी के मार्ग में आना, न कोई सलाह देते. जैसे थे ही नहीं, जैसे हवा का एक झोका हो गये, आया और गया। किसी को पता भी न चलता, घर के लोगों को कई दिन बीत जाते और ख्याल न आता कि महावीर क्या कर रहे हैं और कहां हैं? आखिर घर के लोग इकट्ठे हुये और कहा हम इस आदमी को व्यर्थ ही रोके हैं यह तो जा चुका। पिंजरा हम बेकार ही बन्द करे हैं, यह तो मर चुका, घर के लोग इकट्ठे हुये, बड़े भाई ने प्रार्थना की कि तुम जाओ क्योंकि हम तुम्हें रोक न सके, तुम्हारा इस भांति होना न होना बराबर है, हम क्यों पाप के भागीदार बनें? तुम हो ही नहीं इस घर में, यह महल तुम्हें भूल ही गया, तुम कब आते हो छाया की तरह, तुम कब जाते हो कुछ पता नहीं चलता। झेन फकीर कहते हैं संन्यासी ऐसा हो जाता है जैसे वृक्ष की छाया। वृक्ष डोलता है तो छाया भी डोलती है लेकिन छाया के डोलने से जमीन पर गिरी धूल में कोई गहन बाधा नहीं पड़ती। छाया डोलती है लेकिन धूल हिलती भी नहीं, धूल को पता भी नहीं चलता कोई ऊपर बुहारी मार रहा है, लेकिन छाया की कोई बुहारी है? महावीर छाया की भांति हो गये मृतवत। सूफी कहानी ठीक ही कहती है घर के लोग इकट्ठे हुये और उन्होंने कहा तुम जाओ भी, उन्होंने पिंजड़ा खोल दिया कि जो मृतवत हो चुका है उसे हम क्या रोकेंगे? अब रोकने को कुछ बचा नहीं, जिसकी वासना जा चुकी उसे हम कैसे रोकेंगे? उसके लिये घर ही जंगल हो गया, उसके लिये महल एकांत हो गया, वहां कोई न रहा, तुम भीड़ में हो क्योंकि तुम्हारी वासना है, तुम्हारी चाह ही तुम्हारी भीड़ है, तुम घर में बंधे हो क्योंकि तुम्हारी महत्वाकांक्षा है, महत्वाकांक्षा ही तुम्हारा घर है। जिस दिन तुम मृतवत हो, इसको सूत्र समझो, इस भांति जिओ जैसे तुम हो ही नहीं। फिर देखो क्या घटता है, धीरे धीरे लोग तुम्हें भूल जायेंगे, तुम्हें डर लगता है कि लोग जानें, इसलिये तुम हर हालत कोशिश करते हो उनको पता चलता रहे कि तुम हो। घर तुम जाते हो तो जोर से कदम रखते हो, सामान गिराते हो, आवाज करते हो ताकि पता चलता रहे कि तुम हो। बेटा कहता है जरा मैं बाहर खेल आऊं, कोई हर्ज नहीं है कि वह बाहर खेल आये, तुमसे नहीं पूछता, पूछने की भी कोई

जरूरत नहीं। लेकिन तुम कहते हो 'नहीं', नहीं से पता चलता है कि तुम हो, हां कहोगे तो किसको पता चले? संन्यासी अपने को हटा लेता है दूसरों के मार्ग से, वह शोर गुल नहीं करता, वह किसी को बाधा नहीं देता, वह छाया की भांति हो जाता है, डोलता जरूर है लेकिन धूल हिलती नहीं। ऐसा हो जाने का नाम संन्यास है, और वही कुंजी है संसार के बाहर जाने की, तुम संन्यस्थ हुये कि, जिन्हें तुमको कारागृह में बांधा है वे द्वार खोल देंगे और वे द्वार अभी भी बन्द किये हैं तो उसका मतलब इतना है अभी तुम संन्यस्थ नहीं हुये, तुम मरके गिरे नहीं, तुम अभी भी बैठे हो, जागे हैं, जीवन से भरे, इच्छा से भरे बैठो हो और आखिरी बात समझ लेना अगर तुम्हारे मन में मुक्त होने की इच्छा भी रह गई तो भी यह पिंजड़ा खुलेगा नहीं, अगर वह पक्षी सोचता, जैसा कि तुम सोचेगे, तुम्हारा मन सोचेगा, अगर वह पक्षी सोचता कि यह मेरा मालिक इतनी करुणा से भर गया है, उस पक्षी के मरने से कि शायद अब मुझे मुक्त कर दें और वह आंखें टक टकी लगाये मालिक की तरफ देखता, क्या तुम आशा करते हो यह मालिक उसका पिंजड़ा खोलता ?

यह पिंजड़ा खुलने वाला नहीं था, यह चाहे कितनी ही करुणा से भर गये हों, यह सब करुणा ऊपर ऊपर है, करुणा इतनी नहीं है कि पिंजड़ा खोल देता, यह तो उसने सोचा भी न था कि पिंजड़ा जाके खोलता है, यह ख्याल भी न आया अगर इतनी भी वासना इसमें बचती तो वह कुंजी चूक जाता। मोक्ष की आकांक्षा भी मोक्ष में बाधा बन जाती है।

सूफियों की एक दूसरी कहानी है बिल्कुल ठीक इसके समानान्तर। एक सूफी फकीर नदी में स्नान कर रहा है। एक बड़े दार्शनिक ने जाके उससे नदी के किनारे खड़े होकर पूछा मैं कई दिनों से तुम्हारी तलाश करता हूं, लोग कहते हैं तुम्हें मुक्ति का राज मिल गया, मैं पूछने आया हूं। आज मैं मौके पर आया हूं, तुम नदी में स्नान करते हो, तुम मिलते ही नहीं, तुम कहां जाते हो, क्या करते हो, तुम्हारा कोई पता ठिकाना नहीं, जहां खोजने जाता हूं, वहां पता चलता है तुम कहीं और चले गये हो। जहां जाता हूं पता चलता है तुम कहीं और चले गये आज ठीक वख्त पर पकड़ लिया है। नदी के किनारे यह खड़ा है उसने पूछा मुक्ति का राज क्या है? उसका यह कहना था कि फकीर जैसे एकदम मर गया और नदी उसे बहा ले गई। उस दार्शनिक ने कहा

यह बड़ी भूल हो गई, क्या मैंने ऐसी बुरी बात पूछी थी कि इस आदमी के प्राण ही निकल गये और यह फिर हाथ से निकल जाये और अब इसे कहां पाऊंगा यह तो मर ही गया। वह वापिस लौट आया, जीवन भर इसके संबंध में बड़े विचार करता हुआ, बड़े सिद्धान्त शास्त्रों के उद्धरण पीछे दोहराता हुआ, समझाता हुआ कि आत्मा तो अमर है, दुःख की कोई बात नहीं और यह फकीर तो ज्ञानी था लेकिन कुंजी चूक गई। जब उसने कभी वर्षों बाद किसी दूसरे फकीर से पूछा कि मेरी कुछ समझ में नहीं आया कि वह आदमी इतना बड़ा ज्ञानी था कम से कम उत्तर देके तो मरता, इतना तो कर ही सकता था कि दो शब्द कह देता लेकिन मैंने प्रश्न किया उसने उत्तर भी न दिया और नदी की धारा उसे ले गई, हुआ क्या एकदम से? भला चंगा था, ऐसा मेरा प्रश्न सुनते ही क्या हुआ? उस फकीर ने कहा नासमझ वह बोला और तू सुन न पाया, उसने कहा और तू समझ न पाया, उसने सारी बात कह दी, यह तरकीब है, नदी की धार में मर जाओ और बह गया। जब तक तुम जिन्दा हो धार से लड़ते हो, उसका विरोध करते हो संघर्ष करते हो क्योंकि संघर्ष में अहंकार निर्मित होता है, जीत हार जहां, वहां अहंकार को मजा है, जब तुम मर जाते हो नदी की धार बहा के ले जाती है। उस आदमी ने दो बातें कह दीं कि तुम मृतवत हो जाओ और जीवन की धार को बहने दो तुम बाधा मत दो, तुम पहुंच जाओगे उस महासागर में जिसकी तलाश है। 'मरना' और 'बह जाना' दो सूत्र हैं। इस कहानी को सोचना मत बस सुनना और गिरके मर जाना, पिंजड़े में बैठ के सोचके दार्शनिक मत बनना नहीं तो चूक जाओगे। इसे सोचना मत, यह कुंजी है, घुमाना, ताला खुल जायेगा। भोजन करते वक्त ऐसे भोजन करना जैसे तुम नहीं हो, चलते वक्त ऐसे चलना जैसे तुम नहीं हो, बोलते वक्त ऐसे बोलना कि न बोलने के बराबर है, सिंहासन मिल जाये तो ऐसे बैठ जाना जैसे कि मजबूरी है बैठ गये, सिंहासन हो जाये तो ऐसे उतर आना जैसे अपनी कुर्सी से नीचे उतर आते हो, काम में लग जाते हो। नहीं हो, उठना बैठना सब करना लेकिन ऐसे हो जाना जैसे शून्य हो, जल्दी ही पिंजड़े का द्वार तब खुला पाओगे। तुम्हारी भीतरी शून्यता ही खुला द्वार है और तब जहां भी तुम हो वहीं आकाश है, वहीं मुक्ति है।

★

अनमोल मोती

अहंकार :

सम्यक शिक्षा अहंकार से मुक्तिदायी होनी चाहिए।
अहंकार नरक का मार्ग है।
अहंकार से बड़ा न दुःख है न दारिद्र है और न दुर्भाग्य है।
राष्ट्रीय अहंकार सामूहिक पागलपन है।
अहंकार दुख को छिपाने की कोशिश है।
अहंकार तोड़ने वाली इकाई है।
अहंकार छोड़ें तो ही ज्ञान से छुटकारा हो सकता है और अहंकार जाये तो ही प्रेम के और परमात्मा के द्वार खुल सकते हैं।
अहंकार दुनिया से जीत ले तो फिर दूसरी दुनिया को जीतने की आकांक्षा शुरू हो जाती है।
अहंकार मात्र छाया है।
आत्मा और अहंकार के बीच चुनाव है।
आत्मा और अहंकार के बीच सारा विकल्प है।
आत्मा और अहंकार के बीच जीवन की सारी व्यथा, सारी पीड़ा है।
जो अहंकार की तरफ जाते हैं वे भटक जाते हैं।
अहंकार से जो बंध जाते हैं वे आत्मा से वंचित रह जाते हैं।
अहंकार को देखने की प्रक्रिया का नाम ही ध्यान है।
मंदिर में बैठने वाले अहंकार से मुक्त नहीं होते।
स्वर्ग में जाने की कामना रखने वाले अहंकारी ही हैं।
अहंकार द्वार है अन्धकार का और प्रेम द्वार है प्रकाश का।

★

प्रेम :

जहाँ भय है वहाँ प्रम असम्भव है ।

जहां प्रेम है वहां आनन्द पैदा होगा । वहां शक्ति पैदा होगी, वहां स्वर्ग के द्वार खुलेंगे क्योंकि सब प्रेम की संतति है ।

प्रेम के केन्द्र का अन्तिम परिणाम विमुक्ति है ।

सत्य का प्रेम से सम्बन्ध हो सकता है लेकिन भय से नहीं ।

प्रेम परमात्मा का द्वार है ।

भीतर प्रेम है तो बाहर प्रभु है ।

प्रार्थना तो प्रेम और आनन्द से स्फुरित हो, तो ही सार्थक हो सकती है ।

प्रेम सम्राट बना देता है ।

बच्चों को महत्वाकांक्षा नहीं, प्रेम सिखाइये ।

बड़ी शक्ति खतरनाक है, उन हाथों में जिनके पास प्रेम न हो ।

प्रेम शून्य व्यक्ति का शक्तिहीन (नपुंसक) होना अच्छा है ।

प्रेम पूर्ण व्यक्ति के हाथ में शक्ति हो तो जीवन विकसित होता है ।

जीवन को मंदिर बनाना है तो आधार प्रेम के रखने होंगे ।

जहां प्रतियोगिता हो वहां प्रेम कैसे हो सकता है ?

प्रेम का हमेशा मतलब होता है पीछे खड़ा हो जाना ।

जब प्रेम की दिशा में चित्त प्रवाहित हो जायेगा तो परमात्मा से ज्यादा निकट कोई भी नहीं है ।

प्रेम शून्य व्यक्ति के हाथ में शक्ति हो तो जीवन एक कब्रिस्तान बनेगा ।

विज्ञान तोड़ता है, प्रेम और धर्म जोड़ता है ।

प्रेम परमात्मा पर पहुंचता है और विज्ञान परमाणु पर पहुंचता है ।

प्रेम कोई कृत्य नहीं है, प्रेम आपका प्राण बने, तभी सार्थक है ।

प्रेम आनन्द में प्रतिष्ठा देता है ।

प्रेम में जो खोता है उसे आत्मा का स्मरण हो जाता है ।

प्रेम परमात्मा की सुगन्ध है और जो प्रेम को पा लेता है, वह धीरे-धीरे सुगन्ध के मूल स्रोत को पा लेता है ।

प्रेम से तो विवाह निकल सकता है लेकिन विवाह से प्रेम नहीं निकल सकता।

प्रेम का जन्म होता है स्वतन्त्रता में।
प्रेम तो व्यक्ति का अपना आत्मदान है, बन्धन नहीं।

प्रेम के बिना किसी व्यक्ति के जीवन में आत्मतृप्ति उपलब्ध नहीं होती।
विवाह सामाजिक संस्कार है, प्रेम प्रकृति का दान है।
प्रेम जो है वह व्यक्तित्व की तृप्ति का चरम बिन्दु है।

प्रेम जीवन में न हो तो मस्तिष्क रुग्ण होगा, चिंता से भरेगा, तनाव से भरेगा।

प्रेम परमात्मा की व्यवस्था है और विवाह आदमी की व्यवस्था है।
प्रेम से रिक्त लोग ही युद्धों को पैदा करते हैं।
प्रेम है प्रारम्भ, परमात्मा है अन्त।
प्रेम की सरिता है और परमात्मा का सागर है।
सेवा तो प्रेम की सुगन्ध है।
प्रेम में जीवन शुरू हो तो परमात्मा में पूर्ण होता है।
प्रेम बीज बने तो परमात्मा अंतिम वृक्ष की छाया बनता है।
प्रेम गंगोत्री हो तो परमात्मा का सागर उपलब्ध होता है।
मैत्री प्रेम से बहुत गहरी बात है।
प्रेम बांधता है, मैत्री मुक्त करती है।
प्रेम एक दान है, भिक्षा नहीं।
प्रेम आन्तरिक सम्पदा है।
प्रेम भिखारी नहीं है, सम्राट है।
अहंकार द्वार है अन्धकार का और प्रेम द्वार है प्रकाश का।

○ राकेशकुमार घोष
जीवन जागृति केन्द्र,
मुंगेर (बिहार)

बस तू ही

प्रभु, जल प्रेम बरसाओ,
जीवन के फूल सरसाओ।
लगा हृदय अब तांसे,
नहीं मन है अब दुनियां में।

जगा कर ध्यान की ज्योति,
दिलाए जो अमूल्य मोती।
उन्हें अब छोड़ नहीं सकता,
प्रभुसे मन तोड़ नहीं सकता।

कीर्तन में मस्त हैं होते,
रहें जागे या बस सोते।
ध्यान बस तेरा रहता है,
नहीं कुछ 'मेरा' लगता है।

तेरे विचार सुन-सुन के,
हुआ प्रसन्न गुन-गुन के।
उन्हें घर-घर है पहुंचाना,
यही गंगा है बहाना।

□ जगदीश आर्य
लाडनूं (राजस्थान)

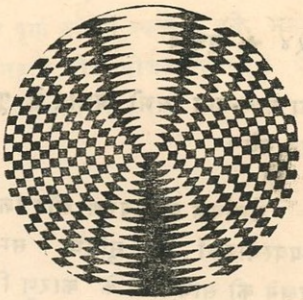

ध्यान-पथ शिविर

'गंगानाथ'

की गतिविधियां

□ संकलन : स्वामी धर्म रक्षित
सलुम्बर (राजस्थान)

प्रभु की अनुकम्पा अपार है। पहले तो स्वयं भगवान श्री गांव-गांव, नगर-नगर घूमते-फिरते और शिविर लेते। अब उनके संन्यासियों की टोलियां जगह-जगह शिविर आयोजन कर लेती हैं। भगवान श्री ऐसे शिविरों में अदृश्य रूप से अवश्य पधारते हैं। ऐसा एक शिविर अभी राजस्थान के चित्तौड़गढ़ दुर्ग पर हुआ और दूसरा ये बड़ौदा, रजनीश प्रेम प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित हुआ, जिसे जीवन में भुलाये नहीं भूलेगा, क्योंकि लगता ही नहीं कि भगवान श्री हमारे बीच नहीं थे।

ज्योंही मैं गंगनाथ पहुंचा तो लगा कि पिता के पास आया और गर्मी का ज्यों ही अनुभव हुआ कि मां नर्मदा अपनी बांहें फैलाये बुला रही है अपने सीने से लगाने को। शिविर का यह स्थल बहुत ही रमणीय है। शिविरार्थियों के ठहरने की व्यवस्था बहुत ही श्रेष्ठ थी और भोजन की व्यवस्था बढ़िया। भोजन वितरण सेल्फ सर्विस के कारण अनूठे प्रकार की थी। व्यवस्थापकों को भी परेशानी नहीं हुई क्योंकि आधे से पौन ही घंटे के बीच सभी साधक अपना चाय-भोजन निश्चित समय पर ले लेते थे।

इन गर्मी के दिनों में यह शिविर इतना अच्छा रहा कि जिसकी आशा कम थी, लेकिन सभा मंडप का प्रमुख कृपानिधान यहां का बरगद का वृक्ष था जो ३०-४० वर्गमीटर के दायरे में फैला हुआ है, जहां १५०-२०० साधक आसानी से ध्यान साधना कर सकते हैं। साथ-साथ नीम, पीपल आदि वृक्षों की छाया और पक्षियों

का नाच-गान सभी प्रकार से पूरक बन गये।

नैसर्गिक वातावरण और शिविर व्यवस्थापकों की सुविधा सम्हाले रखने की सावधानी के कारण किसी प्रकार की तनाव की स्थिति न रही। विशेषत: श्री चन्द्रकान्त भाई और श्री रविशंकर भाई दोनों ऐसे हंस-मुख व्यक्ति रहे जो किसी को कभी कोई शिकायत का मौका ही नहीं देते। ज्योंही शिविरार्थी स्थल पर आ पहुंचते, बड़ी आत्मीयता के साथ मिलते।

इस शिविर का महत्व बहुत ही ज्यादा रहा क्योंकि स्वयं भगवान श्री के निर्देश से ही स्वामी चैतन्य भारती जो शिविर के मार्गदर्शनार्थ आये थे। साथ मा योग भारती का भी सहयोग था। चैतन्य भारती जी का स्वयं का व्यक्तित्व ही झलकता है कि भगवान श्री जैसे उनकी आंखों से झांक रहे हों। स्वामी जी ने बड़ी स्वस्थता और सहजता के साथ शिविरार्थियों के साथ एकरूपता बनाई।

स्वामी चैतन्य भारती खड़े रह कर, ऊंचे हाथ रखे जब प्रार्थना ध्यान करवा रहे हों—तब देख पाया कि स्वामी जी विलीन हो गये हैं और भगवान श्री त्राटक ध्यान करवा रहे हैं। मैं उस समय उसकी ऊर्जा में ऐसा जुड़ा रहा कि कहना मुश्किल है कि मैं पूर्णत: सजग अवस्था में था। ध्यानपूर्ण दशा में रोम्रां—रोम्रां नहा गया। जब चरणों में समर्पित हो गया तब ही फिर स्वामी जी को देख पाया।

शिविर में प्रमुख बात यह रही कि सक्रिय ध्यान में पूरी स्वतन्त्रता रही। पूना में जैसे बंधा-बंधा और हुं-हुं की चोट और विरेचन भीतर करना होता है ऐसा न होने के कारण सभी शिविरार्थियों ने खुल के ध्यान किया। शिविर में प्रतिदिन ५ ध्यान और २ प्रवचन के अलावा साधकों की अपनी ओर से स्नान-ध्यान भी बन पाया—जो कोई भी नहीं चूकता था।

शिविराध्यक्ष स्वामी चन्द्रकान्त भारती की स्फूर्तिली धूमधाम, श्री कनककान्त देसाई का भोजनशाला में प्रेमपूर्ण भाव से परोसना, रसोई-घर में मा योग शांता और कुमुद बहेन देसाई की ध्यानपूर्ण निगाहबानी समग्र वातावरण को आनंद से भर रहे हैं। खास तौर से शिविर व्यव-स्थापक श्री चन्द्रकांत भाई सभी से प्रतिपल सम्पर्क बनाये रखते थे और सुविधा का ख्याल करते रहते थे।

अन्त में साधकों को नर्मदा में नौका-विहार भी करवाया। मैं खुद शिविर में ३-४ दिन के लिए आया था मगर वातावरण ही ऐसा रहा कि मैं पूरे दिन के लिए रुक गया। फलतः हम सब पूर्ण रूप से ध्यान में डूबे, नर्मदा में नहाये और भोजनतृप्त रहे। प्रभु की अनुकम्पा अपार है।

म न न जीवनोपयोगी (आध्यात्मिक हिन्दी मासिक) मनन

वार्षिक मूल्य ६ रु. ☐ द्विवार्षिक मूल्य ११ रु. ☐ त्रिवार्षिक मूल्य १६ रु.

दुरंगे ४८ पृष्ठ

मनन का प्रत्येक अंक :

★ संत विचारकों व विद्वानों की वैज्ञानिक ढंग से लिखी आध्यात्मिक रचनाओं को प्रकाशित करता है। ★ वेदान्त और धर्म की गहन गुत्थियों को सुलझाने की सीधी और साफ विधियों को उजागर करता है। ★ मानव को उसकी दिव्य सत्ता की ओर उन्मुख करने वाला क्रांतिदूत। ★ पारिवारिक तथा खेल-कूद, ज्ञान-विज्ञान का अनूठा समन्वय।

● पांच ग्राहक एक साथ बनाकर भेजने वाले को मनन के १२ अंक मुफ्त।

सम्पर्क करें : तुलसी मानस प्रकाशन,

गुप्ता मिल्स इस्टेट, रे रोड, बम्बई ४००–०१० फोन : ३९१८३१

रजनीश : एक विश्राम

★

अनंत **सत्ता** सतत प्रणाम ।
वर दो कर्म करूं निष्काम ।।

जीवन को जानूं भीतर—
सुन पाऊं अन्तस के स्वर ।
क्षण-क्षण पावे सुधि तव नाम ।।

पहुंचूं वहां बस मैं न रहूं—
अलिप्त हो सुख-दुख न सहूं ।
"बस हूं" में मेरा हो धाम ।।

मिट जाए सब विषय विकार—
करुणा की हो छल छल धार ।
रजनीश - एक, एक - विश्राम ।।

○

माधव जैन 'अन्तस'
बैतूल (म० प्र०)

जम्हाई क्यों ?

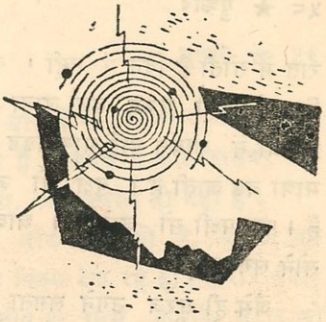

भगवान श्री द्वारा गीता अध्याय १७ के ६ वें प्रवचन के संदर्भ में दिया गया एक पूर्ण वैज्ञानिक प्रश्न का उत्तर

□ संकलन : साधु ईश्वर समर्पण
बम्बई

प्रश्न :

जम्हाई : यानि शरीर के लिये इसका क्या उपयोग है। क्योंकि वह तमस की शरीरगत प्रक्रिया ही है या हमेशा मन के ऊबने का सूचक है।

भगवान श्री :

समझना पड़े। जम्हाई या नींद पैदा होती है। शरीर में कार्बन डाय आक्साइड की मात्रा बढ़ने से। जब नींद आने के करीब है, तो तुम्हारी श्वांस की प्रतिक्रिया में परिवर्तन होता है। साधारणतः जब तुम जागे हो, तब तुम ज्यादा आक्सीजन लेते हो, उसकी जरूरत है जागने के लिए। तुम दौड़ रहे हो अगर, बहुत काम में लगे हो, तो बहुत जोर से श्वांस लेनी पड़ती है। क्योंकि शरीर बहुत सी आक्सीजन जलाता है, तो और आक्सीजन की जरूरत है, तो दौड़ने में तुम्हें जोर से श्वांस लेनी पड़ती है। खाली बैठे हो तो शरीर उतनी आक्सीजन जलाता नहीं, क्योंकि खाली बैठे हो। श्वांस का कोई उपयोग ज्यादा नहीं है। जब सोने जा रहे हो, तब आक्सीजन बहुत कम चाहिये शरीर में। इसलिये श्वांस धीमी हो जाती है। और शरीर के भीतर कार्बन डाईआक्साइड इकट्ठा होने लगता है। जितनी मात्रा कार्बन डाईआक्साइड की भीतर इकट्ठी होगी, उतनी गहरी नींद आयेगी। जितनी ही कम मात्रा इकट्ठी होगी उतनी ही उथली नींद आयेगी और अगर मात्रा इकट्ठी ही न हो तो नींद आना मुश्किल हो जायेगा। इसलिये तो सारी प्रकृति

रात में सोती है दिन में नहीं। क्यों कि जैसे ही सूरज ढल जाता है, हवाओं में कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा बढ़ जाती है। वृक्ष सो जाते हैं। पशु-पक्षी सो जाते हैं। आदमी सोने लगता है।

जैसे ही सूरज उगने लगता है, सूरज के साथ आक्सीजन की मात्रा बढ़ती है। सारे वृक्ष, पशु-पक्षी उठने लगते हैं। नींद यानि कार्बन डाई आक्साइड की एक खास मात्रा जरूरी है। और जागना आक्सीजन की एक खास मात्रा जरूरी है। इसलिये कभी कभी तुमने खबर अखबारों में देखी होगी कि एक ही कमरे में, सर्दी के दिनों में, कि पहाड़ी इलाकों में बहुत से लोग सो गये और मर गये। क्यों कि बहुत से लोगों के सोने से इतनी कार्बन डाई आक्साइड इकट्ठी हो गई कि द्वार दरवाजे तो बन्द थे कि नींद तो नींद मौत आ गई। या कमरे में तुम सब तरफ से दरवाजा बन्द कर लो और आग जलाकर सो जाओ तो भी मौत हो सकती है, क्योंकि आग आक्सीजन को जला डालती है, और कार्बन डाई आक्साइड को पैदा कर देती है। और अगर कार्बन डाइ आक्साइड की मात्रा ज्यादा हो जाये, तो नींद इतनी गहरी हो जाये तो नींद इतनी गहरी लग जाए कि फिर खुलेगी ही नहीं।

अगर आक्सीजन की मात्रा बहुत हो जाये तो तुम सो नहीं सकोगे। इसलिए रजसगुण का व्यक्ति सो नहीं पाता है, क्योंकि वह इतना दौड़ता है जीवन में, इतना भागा, इतना आपाधापी करता है कि उसकी श्वांस की प्रक्रिया आक्सीजन के साथ एक निश्चित अनुपात बना लेती है। सोने भी जाता है तो भी उसकी श्वांस की प्रक्रिया वही बनी रहती है, उसका वह अभ्यासी हो गया, वह शिथिल नहीं हो पाता।

बौद्ध भिक्षुक विपत्सना नाम का ध्यान करते हैं। उस ध्यान में श्वांस पर ध्यान रखना पड़ता है चौबीस घण्टे, जब तक होश रहे। बौद्ध भिक्षुओं की नींद बहुत कम हो जाती है। एक भिक्षु को सीलोन से मेरे पास लाया गया, वह तीन साल से सो ही न सका था, वह बिलकुल पागल हुआ जा रहा था, वह पागल हो ही चुका था, चिकित्सक हार गये थे। लेकिन किसी चिकित्सक ने यह तो पूछा नहीं कि तुम भीतर क्या करते हो? उन्होंने ट्रंक्वलाइजर दिये, और बड़े डोज दिये, सब किया लेकिन उसको नींद न आई। उसको मेरे पास लाया गया। उसको मैंने पूछा कि तुम विपत्सना तो नहीं कर रहे हो? तो उसने कहा, विपत्सना तो

कर ही रहा हूं, क्योंकि बौद्ध भिक्षु हूं।

विपत्सना ऐसा ध्यान है, कि जब तुम श्वांस पर ध्यान रखते हो, श्वांस जब भीतर गई तो तुम भीतर जाते हो, श्वांस बाहर गई तुम उसके साथ बाहर जाते हो, चेतना श्वांस के साथ डोलती है। इस चेतना के जोड़ के कारण श्वांस बहुत गहरी हो जाती है। और इसका अभ्यास अगर गहरा हो जाये तो नींद खो जायेगी, इतनी भी खो जा सकती है, बिलकुल नष्ट हो जाये। वह आदमी बिलकुल पागल की अवस्था में था। मैंने कहा, तीन महीने के लिये तू विपत्सना छोड़ दे। फिर धीरे-धीरे शुरू करेंगे, लेकिन अभी तो छोड़ ही दे। तीन महीने विपत्सना छोड़ देने से कोई चौथे, पांचवें सप्ताह नींद का आगमन शुरू हो गया, तीन महीने पर वह पूरी तरह सो रहा था।

तो जब तुम नींद के करीब पहुंच रहे हो, थक गये दिन भर दौड़ कर तो शरीर इकट्ठी करता है आक्सीजन। तुम्हें बिस्तर पर चले जाना चाहिये। अगर तुम नहीं जाते किन्हीं कारणों से, जैसा कि मनुष्य नहीं जाता, कोई जानवर नींद नहीं करता। क्योंकि जब उसे नींद आती है तब वह सो लेता है। सिर्फ आदमी करता है। जम्हाई आदमी लेता है, या आदमी के द्वारा पाले गये जानवर लेते हैं। जंगल में कोई जानवर नहीं लेता, कोई सवाल ही नहीं है।

नींद आने को है, लेकिन तुम बैठे फिल्म देख रहे हो। शरीर तैयार है नींद के लिए, क्योंकि शरीर को फिल्म से कोई लेना देना नहीं है। तो कार्बन डाई आक्साईड इकट्ठा हो गया है और तुम जबरदस्ती अपने को जगा रहे हो। तो कार्बन डाई आक्साईड झटके से बाहर निकलता है, वही जम्हाई है। इसलिये तुम पूरा मुंह बा देते हो। और उस पूरे मुंह से पूरी कार्बन डाई आक्साईड बाहर निकल जाती है और आक्सीजन भीतर चली जाती है। वह शरीर की इमरजेन्सी है। संकटकालीन कृत्य है। क्योंकि इतनी कार्बन डाई आक्साईड है और तुम जगने की कोशिश कर रहे हो।

तुम धर्म सभा में बैठे हो, या तुम भजन कर रहे हो, या तुम ध्यान कर रहे हो, शरीर सोना चाहता है। शरीर के खिलाफ जब तुम कुछ करोगे तो शरीर तो तैयारी कर रहा है सोने की और तुम सोने नहीं जा रहे हो, तो शरीर क्या करेगा, उसने कार्बन डाई आक्साईड इकट्ठी कर ली, वह उसे फेंकेगा बाहर, कार्बन डाई आक्साईड बाहर फेंकने से नींद पैदा होती है, जम्हाई पैदा

होती है। ऐसी जम्हाई बिना नींद के कभी-कभी पैदा होती है, जब तुम ऊबे हुए हो, लेकिन प्रक्रिया वही है। जैसे कि तुम किसी को सुन रहे हो और ऊब गये हो सुनते-सुनते, तुम धर्म सभा में बैठे हो, कोई समझाये जा रहा है, और तुम सुनना भी नहीं चाहते और छोड़ने की भी हिम्मत नहीं करते, क्योंकि लोग क्या कहेंगे, हट भी नहीं सकते, जा भी नहीं सकते, तो तुम क्या करोगे? ऐसी हालत में, ऐसी कोई चीज सुन रहे हो जो तुम नहीं सुनना चाहते, या तुम थक गये हो, या तुम्हारी समझ के बाहर है या तुम्हारी बुद्धि के ऊपर है, वह तुम्हारी पकड़ में नहीं आ रही है। जब भी ऐसा होता है, तब भी तुम्हारी श्वांस धीमी हो जाती है। वह उसके पीछे कोई कारण है।

किसी छोटे बच्चे को गौर से देखो। अगर तुम बच्चे को कोई चीज समझाना चाहते हो और वह नहीं समझना चाहता तो दो काम करेगा, एक तो वह पीठ पीछे को तरफ अकड़ा लेगा और श्वांस धीमी कर लेगा, अगर वह नहीं मानना चाहता तो उसकी श्वांस और उसके शरीर के ढंग को देख कर समझ सकते हो कि वह मानने को राजी नहीं है। हो सकता है तुम्हारे डर से सुन रहा है, लेकिन मानने को राजी नहीं।

जब भी तुम किसी चीज को भीतर जाने नहीं देना चाहते, तब तुम श्वांस को धीमा कर देते हो, क्योंकि श्वांस से चीजें भीतर जाती हैं। जब तुम किसी चीज को भीतर ले जाना चाहते हो, तब तुम गहरी श्वांस लेते हो। क्योंकि श्वांस से चीजें भीतर जाती हैं। जब तुम किसी चीज को भीतर ले जाना चाहते हो, तो रीढ़ सीधी हो जाती है। जब तुम किसी चीज को भीतर नहीं ले जाना चाहते तो तुम्हारी रीढ़ भीतर की तरफ झुक जाती है। जब तुम किसी चीज को बहुत ही आग्रह पूर्वक भीतर ले जाना चाहते हो तो तुम आगे को झुक आते हो।

श्वांस की प्रक्रियाएं तुम्हारे मनोभाव पर निर्भर होती हैं। अगर तुम अपने प्रेमी के साथ बैठे हो तो तुम गहरी सांसें लोगे। अगर तुम दुश्मन के पास बैठे हो तो तुम श्वांस सधी हुई लोगे, धीमी लोगे। क्योंकि दुश्मन तुम्हारे चारों तरफ जो तरंगें फेंक रहा है, वह तुम्हारी श्वांस से भीतर जा सकती है। जब तुम बगीचे में आते हो तो तुम गहरी श्वांस लेते हो। जब तुम किसी दुर्गन्ध भरी गली से निकलते हो, तो तुम श्वांस रोक लेते हो, तुम नाक पर हाथ रख लेते हो। क्योंकि श्वांस के साथ

दुर्गन्ध भीतर जाती है, सुगन्ध भीतर जाती है। श्वांस के साथ तमस् भी भीतर जाता है, शब्द भी भीतर जाता है। श्वांस के साथ साधु भी भीतर जाता है, असाधु भी भीतर जाता है। श्वांस सेतु है, तुम्हारे भीतर ले आने ले जाने का। इसलिए जब तुम किसी दुश्मन के पास खड़े हो, तो तुम्हारी श्वांस अकड़ जाती है। जब तुम कोई ऐसी बात सुन रहे हो, जो तुम्हारी समझ में नहीं आती, या तुम सुनना नहीं चाहते, या जबरदस्ती आ गये हो, तब तुम्हारी श्वांस धीमी हो जाती है और कार्बन डाई-आक्साईड इकट्ठा होने लगता है।

जब बहुत कार्बन डाईआक्साइड इकट्ठा हो जाता है तब शरीर को उसे बाहर फेंकना पड़ता है। क्योंकि उसे अगर शरीर न उलीचे तो तुम यहीं सो जाओगे, वह घबड़ाहट है, तो शरीर उसे उलीच देता है। इसलिए सभाओं में, या किसी उबाने वाले आदमी की बातचीत सुन सुन कर तुम जम्हाई लेने लगते हो या पत्नी पति को सुना रही है, अपना राग रो रही है; जम्हाई लेता है, वह यह कहता है कि कृपा करो, उसका पूरा शरीर कह रहा है कि नहीं सुनना है, लेकिन वह यह कह भी नहीं सकता, लेकिन शरीर से प्रगट कर रहा है। या कोई मित्र आ गया, बकवासी है, तुम्हारा सिर खा रहा है, शरीर जम्हाई लेने लगता है। शरीर उसे खबर देने लगता है कि अब जाओ भी।

मैंने सुना है अलबर्ट आईन्स्टीन एक मित्र के घर भोजन के लिए गया था, वह भुलक्कड़ था, जैसा कि बहुत बड़े विचारक अक्सर हो जाते हैं। जितना बड़ा विचारक हो, उतना बड़ा भुलक्कड़ हो जाता है। और जितना बड़ा ध्यानी हो उतनी ही उसकी स्मृति सध जाती है। विचारक इतना भुलक्कड़ हो जाता है, क्योंकि इतना कूड़ा-करकट सम्भालना पड़ता है उसको। ध्यानी की स्मृति संयत हो जाती है, कि वह भूलता ही नहीं। वह याद नहीं रखता किसी को, फिर भी भूलता नहीं। और विचारक याद रखने की कोशिश करता है तो भी भूल-भूल जाता है, क्योंकि इतनी चीजें सम्भालता है, ध्यानी कुछ सम्भालते नहीं। वह खाली ही रहते हैं। सब अपने से समझा लेता है।

आईन्स्टीन अपने मित्र के घर बैठ कर खाना खाया, पीना चला, गपशप हुई। आईन्स्टीन बार-बार अपनी घड़ी देखता है, परेशान है, और जम्हाई ले रहा है, और मित्र भी अपनी घड़ी बार-बार देखता है और जम्हाई ले रहा है। बारह बज

गये रात के। अब मित्र घबड़ा गया कि ये जायें तो हम सोएं, पत्नी भी बेचैन है, बार-बार भीतर-बाहर जाती है, क्या करना ? और आईन्स्टीन जैसे बड़े आदमी को यह कहा भी नहीं जा सकता कि अब आप जाइये। यह तो सौभाग्य है कि वह आया, अब उसे जाने को कैसे कहें ?

आखिर, आईन्स्टीन ने ही मित्र से कहा, कि जम्हाई देख कर ऐसा लगता है कि अब आपको नींद आ रही है, जाइये भी सोइये भी, उसने कहा, अब जायें कैसे, आप जायें सोयें तब मैं सोऊं मेहमान जाए तो मेजवान। आईन्स्टीन घबड़ा कर खड़ा हो गया और उसने कहा, हद हो गई मैं समझ रहा था अपने घर में हूं और तुम कब जाओ कि मैं सो जाऊं। मैं बड़ा सोच रहा हूं कि घड़ी देखता हूं तो भी तुम्हारी समझ में नहीं आती, जम्हाई ले रहा हूं तो भी तुम्हारी समझ में नहीं आती और इसे देखकर और भी चकित हूं कि तुम भी घड़ी देखते हो, तुम भी जम्हाई लेते हो फिर भी उठते नहीं हो, कहते भी नहीं बनता कि अब जाऊं ?

जम्हाई भाषा है। वह यह कह रही है कि या तो यह बात तुम्हारे लिए नहीं है, बहुत कठिन है, या बहुत ऊबाने वाली है, रसपूर्ण नहीं है, या तुम इस बात को जानते हो ही पहले से, या दुबारा सुन रहे हो, इसमें कुछ सार नहीं है। जम्हाई भाषा है। लेकिन कारण एक ही है कि चाहे नींद की वजह से आये, चाहे ऊब की वजह से दोनों ही कारणों में फेफड़ों में कार्बन डाई आक्साईड की मात्रा जरूरत से ज्यादा हो जाती है जो घातक है। अगर सो जाओ तो ठीक है, अगर न सोओ तो उसे शरीर को बाहर फेंक देना पड़ता है इसलिए जम्हाई आती है।

जम्हाई का कोई संबन्ध तमस् से नहीं है। हांलाकि तामसी आदमी को ज्यादा आयेगी। राजसी आदमी को कम आयेगी। सात्विक को शून्यवत हो जायेगी, बहुत मुश्किल से आयेगी, जब कि कोई असभ्य स्थिति हो जाये, तभी सात्विक को भी जागना पड़ता है। कितने भी सात्विक तुम हो, घर में आग लगे तो भी तुम्हें जागना पड़ेगा। तुम सात्विक हो और पत्नी मर रही है, तो उसके बिस्तर के पास बैठना पड़ेगा ऐसी स्थितियों में ही, अन्यथा सात्विक को साधारणतः जम्हाई नहीं आती। तमस् में बहुत ज्यादा आयेगी क्योंकि वह आदमी चौबीस घण्टे सोई हालत में ही है। उसको जागना कष्टपूर्ण है। राजस् को बहुत बार आयेगी क्योंकि वह सोने को तैयार नहीं,

बहुत काम करने हैं, नींद का दुश्मन है। जितना काम हो सके उतना अच्छा। क्योंकि उतने काम को, उतने समय को बचाना हो जायेगा, उतने समय में कुछ महत्वाकांक्षा पूरी कर लेंगे। सात्विक की न तो कोई महत्वाकांक्षा है जिसके पीछे दौड़े इसलिए जब नींद आती है, वह सो जाता है। जब भूख लगती है, वह खाना खा लेता है।

रिझाई से किसी ने पूछा कि क्या तुम्हारी साधना? तो उसने कहा, जब भूख लगती है तब खाना खा लेते हैं, जब नींद आती है तब सो जाते हैं बस यही। सत्य को उपलब्ध व्यक्ति ऐसा ही जीता है। दुर्घटनास्वरूप कभी जम्हाई आ सकती है अन्यथा कोई कारण नहीं है।

★

अनमोल वचन

★ प्रार्थना से यही कहीं ज्यादा उचित है कि हृदय हो और शब्द न हों, बजाय इसके कि शब्द हों और हृदय न हो।

★ संतोष हमारे लिए क्षितिज रेखा की भांति है, सदा आगे दिखाई पड़ता है।

★ ज्ञान के मार्ग में विश्वास की वृत्ति सबसे बड़ा अवरोध है।

★ शोषण के लिए विवेक बाधा है, इसीलिए विश्वास का विष पिलाया जाता है।

★ प्रार्थना मांग नहीं है। वह प्रेम है। वह आत्मदान है। प्रार्थना स्तुति नहीं है। वह तो कृतज्ञता की अत्यन्त निगूढ़ भाव-दशा है। और जहां भाव की प्रगाढ़ता है वहां शब्द कहां?
प्रार्थना वाणी नहीं मौन है। वह शून्य में समर्पण है। वह शब्द नहीं शून्य का संगीत है। ध्वनियां जहां समाप्त होती हैं, वहीं वह संगीत प्रारम्भ होता है।

□ संकलन : *रामनाथ शर्मा*
ताला, सतना (म० प्र०)

श्री रजनीश के प्रति

△

मैं, कल रात
तुम्हारे पास आने को हुआ था, प्रभो !
तुम्हारे ऊपर गुस्सा पड़ने...
क्योंकि मैं बड़े संकट में था,
तुम दुनिया भर के प्रश्नों के उत्तर
देते फिरते हो
फिर मुझे क्यों नहीं देते
सिर्फ एक प्रश्न का उत्तर ?
हां,
मैं, कल रात
तुम्हारे पास आने को था
तुम्हारे पैर दाबने, तुम्हारे तलवे चूमने
क्योंकि मैं बड़े संकट में था
'और कुछ' से वह दूर ही नहीं होता
न कुछ करने से,
न कुछ पढ़ने से,
न कुछ लिखने से,
यहां तक कि तुम्हें—
सुनने से भी नहीं ।

▽

स्वामी अगेह भारती
जबलपुर

उद्बोधन

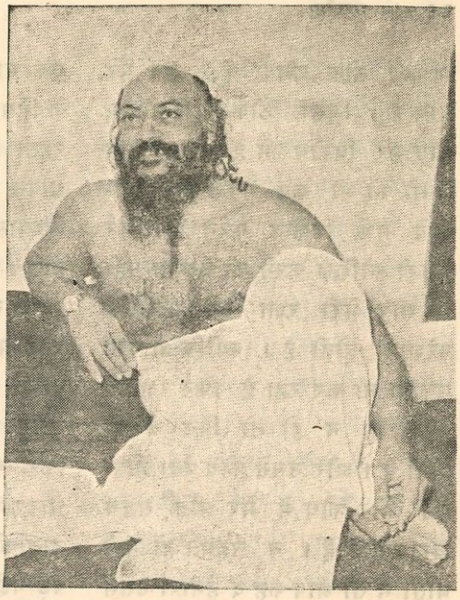

□ संकलन : एन० जी० वरवारिया

अहमदाबाद

मेरा कोई अनुयायी नहीं

मुझसे जो भी संबंधित है, कोई भी मेरा अनुयायी नहीं, उससे बहुत परेशानी होती है। मेरा कोई भी अनुयायी नहीं है यह बहुत साफ समझ लेना जरूरी है। ज्यादा से ज्यादा मेरी और आपकी हैसियत मित्रों की हैसियत है, उससे ज्यादा नहीं। इसलिये मुझसे विरोध हो सकता है और आप मेरे साथ हो सकते हैं। किसी बात में विरोध हो सकता है, किसी बात में सहमति हो सकती है और आप मेरे साथ हो सकते हैं। सब बातों में विरोध हो सकता है, एक बात में सहमति हो सकती है तो कोई अड़चन नहीं है। इतनी बात पर साथ चल सकता है।

अनुयायी के साथ दिक्कत हो जाती है। अनुयायी को सब बातों में सहमत होना पड़ता है। उसे अड़चन होती है। तो आपको जाहिर होना चाहिये कि आप मेरे मित्र हैं, अनुयायी नहीं। तो जिस बात में

आपको ठीक लगता है, आप मेरे साथ हैं। जिसमें ठीक नहीं लगता, आप मेरे विरोध में हैं। यह आप किसी को भी कह सकते हैं। इसलिये मुझे डिफेन्ड करने की गैर जरूरी कोशिश करने की जरूरत नहीं कि आप मेरी रक्षा करें। क्योंकि परेशानी होती है। क्योंकि आपका मन ही ना कर रहा है फिर रक्षा? और रक्षा न हो तो फिर बैचेनी होती है। और उससे क्रोध पैदा होता है। और क्रोध में मेरे प्रति संबंध खराब होते हैं। न सहमत हों मेरी बातों में तो आप कह दें हमारा उससे कोई संबंध नहीं। इसलिये मेरी रक्षा में कोई दलील देने की, कोई बात करने की कोई चिन्ता लेने की जरूरत नहीं है। जो बात आपको मेरी ठीक लगती है उसकी पहुंचाने की फिक्र करें।

जीवन जागृति केन्द्र भी मित्रों का केन्द्र है, अनुयायीओं का नहीं। उसमें वे लोग हो सकते हैं जो मुझसे अनेक बातों में सहमत नहीं हैं जिस बात में वे सहमत नहीं, वे उसको नहीं पहुंचायेंगे। जिसमें सहमत हैं उसको पहुंचायेंगे। यह बहुत साफ होना चाहिये। ताकि हम उसमें परेशानी में नहीं पड़ते हैं अन्यथा हम परेशानी में पड़ते हैं। और चित्त को तकलीफ होती है, और दुख होता है। हम एक भाव बना लेते हैं फिर उस भाव के हिसाब से मेरे प्रति आपकी चेष्टा रहती है कि मैं वैसा करूं जैसा आपने भाव बना लिया। मेरा कोई विश्वास नहीं, मेरा कोई भरोसा नहीं। मैं कल क्या करूं उसका कोई पक्का नहीं। कल क्या कहूं उसका कोई पक्का नहीं। इसलिये मेरे बाबत कोई धारणा बनाना ही नहीं भूलके भी। क्योंकि धारणा बनाने से फिर कष्ट होता है। आपने एक धारणा बना ली और कल मैंने कोई बात की जो उस धारणा के प्रतिकूल पड़ गई तो अड़चन आती है। धारणा बना ली इसलिये अड़चन आती है। जिंदगी बहुत बड़ी है और जिंदगी के सारे पहलुओं पर मुझे कुछ न कुछ आज नहीं कल कहना है। कौन कितने दूर तक चल सकेगा? यह बहुत मुश्किल है। उसकी फिक्र ही मत करें। जितने दूर आप मेरे साथ चल सकते हैं, उतने दूर तक हमारा साथ है। उसके आगे मुझसे कुछ लेना देना नहीं है।

मेरे बाबत धारणा मत बनायें। एक धारणा पक्की करने से होता क्या है कि धारणा जैसे पक्की की, फिर आप अपेक्षा करते हैं मुझसे कि आपकी धारणा के अनुकूल मुझे चलना चाहिये। उसमें अड़चन होती है। मैं किसी की धारणा के अनुकूल

चल नहीं सकता। मुझे खुद भी पक्का पता नहीं कि कल मैं कैसा चलूंगा। उसका कोई हिसाब नहीं है मेरे पास। हिसाब तो कोई करता नहीं हूं। कोई बात सोच के कभी करता नहीं हूं कि उसके लिये मैंने कोई पहले से सब तैयार करके सोच कर रखा हुआ है। उसके लिये मेरी कोई तैयारी नहीं है कि कोई यह कहेगा तो मैं यह कहूंगा। मेरी कोई तैयारी नहीं है। मैं बिलकुल निपट खाली आदमी हूं। सामने बात आती है, कर लेता हूं। फिर भूलकर मैं सो जाता हूं। इसलिये मेरे पास कोई हिसाब नहीं है। कन्सीस्टेन्सीका भी कोई पक्का नहीं है। चीजें तो जो कह रहा हूं सब कन्सीस्टेन्ट हैं क्योंकि मैं ही उनको कह रहा हूं। कल जो मैंने कहा, आज जो मैंने कहा, उन दोनों के बीच कोई भीतरी सेतु है क्योंकि मैंने ही कहा है। लेकिन किसी धारणा में बांधना बहुत मुश्किल है उनको। धारणा में बांधने की फिक्र नहीं करनी चाहिये।

यह सारी बातें मेरे बाबद बहुत स्पष्ट होनी चाहिए। मेरे प्रति कोई श्रद्धा नहीं, कोई आदर नहीं, कोई ऐसा भाव नहीं जिससे आपको बेचैनी होने लगे कि हमारा श्रद्धाभाव गड़बड़ हो रहा है, वह बनाना ही नहीं। बनाने से दुःख होता है।

बस, मुझसे आपका सम्बन्ध एक रास्ते पर चलते हुए मित्रों का है। कितनी दूर आप चलते हैं फिर आपका ठहराव आ जाता है। आप रुक जाते हैं, नमस्कार हो जाते हैं। मैं आगे बढ़ जाता हूं। इतना ही स्पष्ट रहे तो ही हम सही ठीक ढंग से साथ में चल सकेंगे। जो जितनी दूर चल सकेगा, चलेगा। उसके लिए उसका धन्यवाद है। उसके आगे नहीं जा सकता है, उसकी बेचैनी है, उसकी परेशानी है। मेरी भी परेशानी है। मैं वहां रुक नहीं सकता हूं। यह सारी गड़बड़ पैदा होती है वह इसलिए कि जो दूर तक मेरे साथ चला कुछ दिन तक, अगर उसने श्रद्धा का भाव मेरे प्रति बना लिया तो श्रद्धा का भाव बहुत खतरनाक है। बहुत मंहगा सौदा है। सौदा इसलिए मंहगा है कि मेरे प्रति श्रद्धा बना ली और जहां मैंने कुछ ऐसा काम किया या कुछ ऐसी बात की कि आपकी श्रद्धा टूट गयी, तो जैसे ही श्रद्धा टूटती है, तो आदमी ठीक उल्टे पेनडुलम पर पहुंच जाता है। श्रद्धा टूटी तो अश्रद्धा पर आता है। बीच में नहीं रुक सकता, फिर मित्र टूटता तो दुश्मनी आती है। बीच में नहीं रुकता कोई। आपकी श्रद्धा कभी भी टूट सकती है। तो जो कल मेरे साथ था, वह कल मेरा दुश्मन हो

सकता है। और फिर जब वह दुश्मन हो जायगा तो जिस भांति वह मेरी सारी बातों के लिये कल तक कहता था—ठीक है, उसी तरह कहेगा ये सारी बातें गलत हैं। वह मंहगा पड़ता है। वह मुझे रोज अनुभव होता है। तो उसमें तो फिजूल परेशानी हो जाती है। जितनी बात मेरी ठीक लगती हो, उतनी ठीक। श्रद्धा वगैरह बनाने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि श्रद्धा कभी भी अश्रद्धा बन सकती है। मोह कभी भी घृणा बन जाता है। लगाव कभी भी दीवाल बन जाता है। उसमें बांधने की ही जरूरत नहीं है।

न मुझे कोई पंथ खड़ा करना है, न कोई पार्टी खड़ी करना है। इसलिए मेरे प्रति आपका वैसा कोई भी कमिटमेंट नहीं। यह आपकी मौज है कि आपको मेरी बात अच्छी लगती है। आप दो कदम मेरे साथ चल लेते हैं। आगे नमस्कार हो जाती है। बात खत्म हो जाती है। फिर और आगे लेना-देना नहीं है। कभी आपको फिर लगे आप फिर आ जाते हैं। जो बात आपको मेरी अच्छी लगती है, आप चार मित्रों में बांट देते हैं।

★★

वैज्ञानिक ढंग से वैचारिक क्रांति

मैं एक वैज्ञानिक ढंग पर आपसे वैचारिक क्रांति से ज्यादा और कुछ भी नहीं चाहता हूं। उस क्रांति से फिर जो भी होना होगा, वह अपने आप हो जायगा। जीवन जागृति केन्द्र और भी जिस तरह से मित्र इकट्ठे होकर जो भी काम करें, उनके सामने एक ही ख्याल होना चाहिये कि जीवन के प्रत्येक तलों पर क्रांति चाहते हैं मुल्क में। विचार का जन्म चाहते हैं। विचार बन्द हो गया है हजारों साल से। विचार होता ही नहीं। किसी बात पर कोई विचार नहीं होता। वह विचार की धारा अवरुद्ध है, वह खुल जाय। बस इतना काम है।

और उसमें दो बातें हैं। आपके व्यक्तित्व में कितनी शांति आ सके इसकी फिक्र आपको करनी है। अपने आसपास कितनी क्रांति की खबर पहुंचा सकते हैं यह आपको फिक्र कर लेनी है। अगर यह फिक्र आपकी

शांति में बाधा बनती हो तो उस फिक्र को मत करें, छोड़ दें, अपनी शांति की फिक्र करें। वह ज्यादा मूल्यवान है। जिस दिन आपको लगे कि मेरी शांति में कोई बाधा नहीं बनती, बल्कि—और जिस दिन आप अनुभव करेंगे आप ऐसा ही पायेंगे, जिस दिन आपको शांति को, आपको लगेगा कि कोई बाधा नहीं बनती किसी दूसरे व्यक्ति को बांट देने में, जिंदगी की बदलाहट कोई चेष्टा करने से मेरी शांति में कोई फर्क नहीं पड़ता, उस दिन आपकी शांति सिर्फ शांति नहीं रहेगी, आनन्द भी बन जायेगी। शांति तभी आनन्द बनती है, जब वह बंटना शुरू हो जाती है। उसके पहले वह आनन्द नहीं बनती। शांति तो एक बिलकुल निगेटिव स्थिति है। शांति नकारात्मक स्थिति है। शांति का मतलब है कि ठीक, मैं शांत हूं। कोई दुख नहीं, कोई पीड़ा नहीं। लेकिन जब शांति को आप बांटना शुरू करते हैं, तब पहली दफा वह पाजिटिव बनती है। तब पहली दफा वह विधायक होती है और आनन्द का रूप लेती है। शांति जब बहती है तब आनन्द बनती है। उसके पहले आनन्द नहीं बनती।

इसलिये तो महावीर-बुद्ध जंगल में जाते हैं। और जब शांत हो जाते हैं तो फिर वापिस बस्ती में लौट आते हैं। ताकि वहां बांटे शांति को तब वह आनन्द बनेगी, नहीं तो वह आनन्द बनती ही नहीं। जब शांति मिल गयी तो बस्ती में लौटने की बुद्ध या महावीर को, क्राइस्ट और मुहम्मद को जरूरत क्या पड़ती? शांति की कीमिया जो है, वह यह है कि शांति तो अकेले में मिल सकती है लेकिन आनन्द, वह सबके साथ ही बनता है। इसके पहले वह आनंद नहीं बनती। आनन्द अकेले में अनुभव नहीं होता। आनन्द सबके बीच में अनुभव होता है। जब हम बांटते हैं, किसी को साथ लेते हैं, तब आनन्द अनुभव होता है। आपको खाना खाना है शांति से, तो एक कोने में अकेले खा सकते हो लेकिन आनन्द से खाना हो तो दस मित्रों को बुलाना होगा। शांति से खाना है तो एक कोने में बैठ जाइये और खा लीजिये। वह शांति से खाना हो जायेगा। लेकिन आनन्द से खाना है तो दस मित्रों को बुला लीजिये। तब वह खाना आनन्द बनेगा—जब बंटेगा। तो वह तो, जैसे-जैसे शांत होंगे वैसे-वैसे स्मरण आना शुरू होगा।

कैसे इस बात को फैलाना है वह आपको सोचना चाहिये। और मैं जानता हूं कि जब भी कोई बात मूल्य की हो तो वे मित्र अपने आप

मिलने शुरू हो जाते हैं जो उसे फैला देते हैं। किसी विचार को फैलाने के लिए कभी भी कोई बहुत चेष्टा नहीं करनी पड़ती। मेरे मन में तो कोई चेष्टा ही नहीं है। अपनी बात कह देता हूं। मुझे लगता है कि यह बात में कोई बल होगा तो दस मित्र जरूर इकट्ठे हो जायेंगे जो उसको फैला देंगे।

अन्तरतम् की गहराई से आने वाले काव्य के महासर्जक

स्वामी योग प्रीतम का

भगवान श्री रजनीश महाकाव्य

अब प्रकाशित होकर उपलब्ध है।

प्रकाशक :
अर्चना प्रकाशन
१ मेहरा हाउस, काला बाग,
अजमेर (राजस्थान)

प्रमुख उपलब्धि स्थान :
श्री रजनीश आश्रम
१७, कोरेगांव पार्क
पूना १ (महाराष्ट्र)

मिलें मुल्ला नसरुद्दीन से

[भगवान श्री द्वारा मुल्ला के चरित्र से जीवन के मार्मिक रहस्यों का उद्घाटन ।]

मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी ने मुल्ला को समझाया—देखो, एक बात याद रखो—बार-बार अपने मन में दोहराते रहो कि मैं शराब पीना ही नहीं चाहता हूं ।

इससे कुछ भी नहीं होता—नसरुद्दीन बोला—क्योंकि मैं जानता हूं कि मैं कितना झूठा हूं ।

★

मुल्ला नसरुद्दीन ने लाटरी के एक-एक रुपये वाले दो टिकिट मोल लिए, जिनमें से एक पर उसे एक लाख रुपये का इनाम मिला । लेकिन जब उसके मित्र उसे बधाई देने आए तो वह बेहद उदास बैठा हुआ था । कारण पूछने पर उसने कहा—पता नहीं, मैंने दूसरे टिकिट पर पैसे क्यों बरबाद किये । इनाम तो एक पर ही मिल जाता ।

★

मुल्ला नसरुद्दीन का एक परदेशी मित्र उससे मिलने आया था। लेकिन मुल्ला की पत्नी बीच-बीच में बोलकर उसे मुल्ला से बात ही नहीं करने दे रही थी, तो उसने पूछा—

मुल्ला, यह लबार औरत कौन है ?

यह श्रीमती मुल्ला नसरुद्दीन हैं—मुल्ला ने कहा।

वह मित्र पछताया और बोला—माफ कीजिएगा। मेरी बड़ी भूल हुई।

नहीं, नहीं, आपकी क्या भूल ? नसरुद्दीन बोला—भूल तो मेरी हुई है।

★

एक अधेड़ अवस्था की स्त्री मुल्ला नसरुद्दीन के पास पहुंची और बोली—मुल्ला, अपनी किसी दवा से मेरा चेहरा सुन्दर बना दीजिए। और बताइए कि आपकी फीस क्या होगी ?

मुल्ला नसरुद्दीन ने स्त्री का चेहरा गौर से देखा और कहा—कार्य अति कठिन है। भगवान से ही टक्कर लेनी है। फिर भी मैं कोशिश करूंगा। हां, फीस होगी पांच हजार रुपये।

स्त्री आश्चर्य से बोली—मुल्ला, यह तो बहुत ज्यादा है। कोई सस्ता नुस्खा नहीं है ?

मुल्ला बोला—है क्यों नहीं ? है। आप घूंघट काढ़ना शुरू कर दीजिए।

★

बड़ा ही रहम प्यासे पे हुआ है

स्वर-लहरी : बागेश्वरी

माटी की गागर ने सागर को छुआ,
देखो ऐ गागर सागर हुई है।
क्या ढूंढ़ती थी, क्या हाथ आया—
सूरज की किरणें उजागर हुई है।।

दुख दूर हो गए, सुख दूर हो गए,
कमल पर खड़े हम, बिन्दु नए हुए।
चली नाव भवसागर से बिदा ले—
उसकी कहानी खतम जो हुई है।।

बवंडर में भटका, मरुस्थल का प्यासा,
दो बूंद मिलने की, थी नहीं आशा।
बड़ा ही रहम प्यासे पे हुआ है—
भीतर ही रिमझिम वर्षा हुई है।।

□ *माधव जैन 'अन्वस'*
बैतूल (म० प्र०)

प्यार में...स्वीकार में

★

फैल जाऊं जिन्दगी के इस तरल विस्तार में
खेल जाऊं जिन्दगी यह—प्यार में, स्वीकार में

एक मधु संगीत की अनुगूंज-सा तन-प्राण में
या कि कवितानन्द बन कर हर हृदय में मिल सकूं
चेतना के फूल का हो यह खिलन कुछ इस तरह
गन्ध बनकर मैं जगत के इस चमन में हिल सकूं

जागरण के पंख से उड़कर चखूं सौन्दर्य-रस
जो प्रतिक्षण बह रहा है इस मधुर संसार में

घाट का पत्थर नहीं मैं हूं प्रवाहित चेतना
भूमि है अज्ञात, बहने का मजा कुछ और है
मोह का बन्धन नहीं हूं, मैं असीमित प्यार हूं—
ईश की जो चन्द्रिका है या मधुरतम भोर है

सृष्टि का यह श्रेष्ठतम वरदान मिल जाये मुझे
नृत्य बन जाऊं अलौकिक मैं सहज आभार में

□ *स्वामी योग प्रीतम*
भीलवाड़ा (राज०)

सद्गुरु

संकलन
स्वामी नरेन्द्र बोधिसत्व, पूना

श्रद्धा का केवल इतना ही अर्थ है कि जिससे हम ले रहे हैं उससे हम पूरा लेने को राजी हैं। उसमें हम कोई जांच-पड़ताल न करें। इसका मतलब नहीं है कि जांच-पड़ताल की मनाही है। इसका केवल इतना ही मतलब है कि जितनी जांच-पड़ताल करनी हो कर लेना। लेकिन जांच-पड़ताल जब पूरी हो जाए और गुरु के पास पहुंच जाएं तो चुन लें कि यह रहा गुरु, तब फिर जांच-पड़ताल बन्द कर देना और पात्र को नीचे रख लेना। अब सब द्वार खुला छोड़ देना ताकि गुरु सब मार्गों से प्रविष्ट हो जाए।

शिष्य, इसलिए अलग शब्द है, उसका अर्थ विद्यार्थी नहीं है। शिष्य विद्यार्थी नहीं है, विद्या नहीं सीख रहा है। शिष्य जीवन सीख रहा है और जीवन के सीखने का मार्ग शिष्य के लिये विनय है। यह सूत्र विनय सूत्र है। इसलिए महावीर ने कहा है कि जो मनुष्य गुरु की आज्ञा पालता हो, उनके पास रहता हो, गुरु के इंगितों को ठीक-ठीक समझता हो, तथा कार्य विशेष में गुरु की शारीरिक अथवा मौखिक मुद्राओं को ठीक-ठीक समझ लेता हो, वह मनुष्य विनय सम्पन्न कहलाता है। शिष्य का लक्षण है ह्यूमिलिटी, हम्बुलनेस, झुका हुआ होना—समर्पित भाव। जो गुरु की आज्ञा पालता हो—गुरु कहे बैठ जाओ तो बैठ जाए, गुरु कहे कि खड़े हो जाओ तो खड़ा हो जाए।

इसका अर्थ आज्ञा पालना नहीं है। आज्ञा पालने का अर्थ तो है जहां आपकी बुद्धि इंकार करती हो।

वायजीद अपने गुरु के पास गया तो गुरु ने कहा कि वस्त्र उतार दो, नग्न हो जाओ, जूता अपने हाथ में ले लो, अपने सिर पर मारो और पूरे गांव का एक चक्कर लगाओ। और भी लोग वहां मौजूद थे। उनमें से एक मनुष्य के बर्दाश्त के बाहर हुआ।

उसने कहा कि यह क्या मामला है ? कोई अध्यात्म सीखने आया है कि पागल होने। लेकिन बायजीद ने वस्त्र उतारने शुरु कर दिये। उस आदमी ने कहा कि ठहरो भी, पागल तो नहीं हो। और बायजीद के गुरु को कहा कि आप यह क्या करवा रहे हैं। जरा ज्यादा, थोड़ा ज्यादा हो गया। फिर बायजीद की गांव में प्रतिष्ठा है, क्यों उसकी प्रतिष्ठा धूल मिलाते हो ? लेकिन बायजीद नग्न हो गया और उसने हाथ में जूता लेकर गांव का चक्कर लगाया।

बायजीद अपने को जूता मारता जा रहा है, गांव में भीड़ इकट्ठी हो गई। पागल हो गया है बायजीद। लोग हंस रहे हैं। किसी की समझ में नहीं आ रहा है कि वह क्या कर रहा है। वह सारे गांव में घूमकर अपनी सारी प्रतिष्ठा धूल में मिला आया। मिट्टी होकर वापस लौट आया। गुरु ने उसे छाती से लगा लिया और कहा कि बायजीद, अब तुझे कोई भी आज्ञा न दूंगा। पहचान हो गई। अब काम की बात शुरु हो सकती है।'

आज्ञा का अर्थ है जो एबसर्ड मालूम पड़े, जिसमें कोई संगति न मालूम पड़े, उसे भी मानना क्योंकि जिसमें संगति मालूम पड़े, आप मत सोचना कि आपने आज्ञा मानी, आपने अपनी बुद्धि को माना है।

मैं आपसे कहूं कि दो और दो चार होते हैं, यह मेरी आज्ञा है। आप कहें कि बिलकुल ठीक है, मैं मानता हूं कि दो और दो चार होते हैं। आप मुझे नहीं मान रहे हैं, आप अपनी बुद्धि को मान रहे हैं और मैं कहूं कि दो और दो पांच होते हैं और आप कहें कि हां, दो और दो पांच होते हैं तो आज्ञा है। बाइबिल में एक घटना है—एक पिता को आज्ञा हुई कि वह जाकर अपने बेटे को फलां वृक्ष के नीचे काटकर बलिदान कर दे। उसने अपने बेटे को उठाया और फरसा लिया और जंगल की तरफ चल पड़ा। सोरेन कीर्कगाड ने इस घटना पर बड़े महत्वपूर्ण काम किए हैं, बड़े गहरे काम किए हैं। यह बात बिलकुल फिजूल है क्योंकि सोरेन कीर्कगाड कहता है कि उस पिता को यह तो सोचना ही चाहिये था कि कहीं यह आज्ञा मजाक तो नहीं। यह तो सोचना ही चाहिए था कि यह आज्ञा अनैतिक है कि पिता बेटे की हत्या कर दे। लेकिन उसने कुछ न विचारा, फरसा उठाया और बेटे को लेकर चल पड़ा। यह हमें भी लगेगा कि जरूरत से ज्यादा बात है। लेकिन कीर्कगाड कहता है कि यह सारा परीक्षण पहले कर

लेना चाहिये।

एक बार परीक्षण पूरा हो गया हो तो छोड़ देनी चाहिए सारी बात। अगर परीक्षण सदा ही जारी रखना है तो गुरु और शिष्य का संबंध कभी भी निर्मित नहीं हो सकता। महत्व-पूर्ण वह सम्बन्ध होना चाहिए। वक्त पर खबर आ गई कि हत्या नहीं करनी है। फरसा उठ गया था और गला काटने के करीब था। लेकिन यह गौण बात है। वापस लौट आया है पिता अपने बेटे को लेकर लेकिन अपनी तरफ से हत्या करने की आखिरी सीमा तक पहुंच गया था।

यह घटना तो सूचक है। शायद ही कोई गुरु आपको कहे कि जाकर बेटे की हत्या कर आएं। लेकिन घटना में मूल्य सिर्फ इतना है कि अगर ऐसा भी हो तो भी आज्ञा पालन शिष्य का लक्षण है। पहले ही सूत्र के हिस्से में आज्ञा को इतना मूल्यवान क्यों कह रहे हैं? आपकी बुद्धि जो-जो समझ सकती है, इस में वह जैसे-जैसे आप भीतर प्रवेश करेंगे, उसकी समझ स्थिर होने लगेगी। और अगर आप यही भरोसा मानकर चलते हैं कि मैं अपनी बुद्धि से ही चलूंगा तो बाहर की दुनिया तो ठीक, लेकिन भीतर की दुनिया में प्रवेश नहीं हो सकेगा। भीतर तो घड़ी-घड़ी मौके आएंगे कि गुरु कहेगा कि करो। तब आपकी बुद्धि बिलकुल इंकार करेगी कि मत करो; क्योंकि अगर ध्यान की थोड़ी गहराई बढ़ेगी तो लगेगा कि मौत घट जाएगी। अब आपका कोई अनुभव नहीं है। जब भी ध्यान गहरा होगा तो ही मौत का अनुभव होगा, ऐसा लगेगा कि मरे। गुरु कहेगा कि मरो, बहो। मरोगे ही न, मर जाना।

आपकी बुद्धि कहेगी अब यह क्या हो रहा है। अब आगे कदम नहीं बढ़ाया जाता। बेटे की हत्या करना भी इतना कठिन नहीं, अगर खुद के मरने की भीतर घड़ी आये तब। बेटा फिर भी दूर है। बेटे की हत्या करने वाले बाप मिल जाएंगे। ऐसे तो सभी बाप थोड़ी बहुत हत्या करते हैं लेकिन वह अलग बात है। बाप की हत्या करनेवाले बेटे मिल जाएंगे। एक सीमा तक सभी बेटे बाप से छुटकारा चाहते हैं। वह भी अलग बात है। जब ध्यान में ऐसी घड़ी आ जाती कि शरीर छूट तो न जाएगा, सांस बन्द तो न हो जाएगी तब आपकी बुद्धि कोई उपयोग की नहीं क्योंकि आपका कोई भी अनुभव न रहेगा। वहां गुरु कहता है कि ठीक है, हो जाने दो बन्द सांस। उस वक्त क्या करेंगे अगर आज्ञा मानने की आदत न बन गई हो। अगर गुरु के साथ असंगत में भी उतरने

की तैयारी न हो गई हो तो आप वापस लौट आएंगे, आप भाग जाएंगे। उस वक्त तो मृत्यु को एक किनारे रखकर गुरु जो कहता है वही ठीक। और बड़े मजे की बात है कि मरेंगे नहीं बल्कि ध्यान में मृत्यु घटेगी। इससे ही आप पहली बार जीवन का स्वाद, जीवन का अनुभव कर पाएंगे। लेकिन उसके लिए आपकी बुद्धि कोई भी सहारा नहीं दे सकती।

आज्ञा का अर्थ है असंगत घटनाएं घटेंगी साधना में, जिनके लिए बुद्धि कोई तर्क नहीं खोज पाती। तब कठिनाई शुरू होती है। तब संदेह पकड़ना शुरू होता है। लगता है कि इस आदमी से बच जाओ, इस आदमी से भाग जाओ। तब बुद्धि बहुत उपाय करेगी कि यह आदमी गलत है इसकी बात मत मानो। तब बुद्धि ऐसी पच्चीस बातें खोज लेगी कि यह आदमी गलत है इसलिए यह बात मानना भी उचित नहीं है, छोड़ दो। इसलिए महावीर कहते हैं कि जो मनुष्य गुरु की आज्ञा का पालन करता हो, उसके पास रहता हो, पास रहना बड़ी कीमती बात थी, पास रहना एक आंतरिक घटना है, शारीरिक रूप से पास रहने का उपयोग है, लेकिन आत्मिक रूप से, मानसिक रूप से पास रहने का बहुत उपयोग है, यह जो जीवन की आत्यंतिक कला है, इसे सीखना हो तो गुरु के इतने पास होना चाहिए जितने हम अपने भी पास नहीं हैं। जैसे कोई आपकी छाती में छुरा भोंक दे तो गुरु का स्मरण पहले आये और बाद में अपना कि मैं मर रहा हूं। यह अर्थ हुआ पास रहने का। पास रहने का मतलब है एक आंतरिक निकटता। अपने से भी ज्यादा भरोसा, अपने से भी ज्यादा स्मरण। ये जो घटनाएं हैं पास होने की, निकट होने की, यह शारीरिक तल पर भी बड़ी मूल्यवान हैं। इसलिए गुरु के पास शारीरिक रूप से रहने का एक बड़ा अर्थ है।

क्या अर्थ है इस पास होने का? इस पास होने का एक ही अर्थ है कि मेरे 'मैं' की जो आवाज है वह धीरे-धीरे कम हो जाए। हम जब भी बोलते हैं तो 'मैं' हमारा केन्द्र होता है। गुरु के पास रहने का अर्थ है 'मैं' केन्द्र न रह जाए, गुरु केन्द्र हो जाए। महावीर के पास दस हजार साधक साध्वियां हैं। उनका अपना होना कोई भी नहीं है। महावीर का होना ही सब कुछ है।

बुद्ध गांव के बाहर ठहरे थे। हजारों भिक्षु भिक्षुणियां उनके पास हैं। गांव का सम्राट उनसे मिलने आया है। पास आकर उसे शक होने लगा। आम्रकुन्ज है। उसके बाहर

आकर उसने अपने वजीरों को कहा कि मुझे शक होता है कि इसमें कुछ धोखा तो नहीं है; क्योंकि तुम कहते थे कि वहां हजारों लोग ठहरे हुए हैं लेकिन आवाज जरा भी नहीं हो रही है।

उसने अपनी तलवार बाहर खींच ली। उसने कहा कि इसमें कोई षड्यन्त्र तो नहीं। उसके वजीर ने कहा, आप निश्चिन्त रहिए, वहां सिर्फ एक ही—सिर्फ एक ही आदमी बोलता है, बाकी सब चुप हैं। बुद्ध के सिवा वहां कोई बोलता ही नहीं और जंगल में शान्ति है क्योंकि बुद्ध नहीं बोल रहे होंगे।

मगर वह जो सम्राट था, उसका नाम था अजातशत्रु। नाम भी हम बड़े मजेदार देते हैं—जिसका कोई शत्रु पैदा न हुआ हो। हालांकि शांति में भी उसे शत्रु दिखाई पड़ते हैं, सन्नाटे में भी। लेकिन वह तलवार निकाले हो गया। जब उसने देखा कि हजारों भिक्षु बैठे हैं चुपचाप, बुद्ध एक वृक्ष की छाया में बैठे थे। तब उसने तलवार भीतर की। उसने बुद्ध से पहला प्रश्न यही पूछा कि इतनी चुप्पी, इतना मौन क्यों? इतने लोग हैं कोई बातचीत नहीं, कोई चर्चा नहीं, दिन-रात ऐसे ही बीत जाते हैं।

बुद्ध ने कहा कि ये लोग मेरे साथ होने के लिए यहां हैं, अगर ये बोलते रहेंगे तो अपने ही पास होंगे। ये अपने को मिटाने को यहां आये हैं ये यहां लेने नहीं, बस इस जंगल में जैसे मैं ही हूं और सब मिटे हुए शून्य हैं। ये अपने को मिटा रहे हैं। जिस दिन वे पूरे बिखर जाएंगे उस दिन ही ये मुझे पूरा समझ पाएंगे और जो मैं इनसे कहना चाहता हूं वह इनके मौन में ही कहा जा सकता है और अगर शब्द का प्रयोग करते हैं तो यही समझाने के लिए कि कैसे मौन हो जाएं। शब्द का प्रयोग करते हैं मौन में ले जाने के लिए।

फिर मौन का उपयोग करेंगे सत्य में ले जाने के लिए। शब्द से सत्य में ले जाने का कोई उपाय नहीं। शब्द से मौन में ले जाया जा सकता है। बस शब्द की इतनी ही सार्थकता है कि आपके मन में इतनी समझ आ जाए कि चुप हो जाना। साइलेन्स का यह अर्थ है।

सारिपुत्र बुद्ध का खास भिक्षु था। जब वह स्वयं बुद्ध हो गया तो बुद्ध ने उससे कहा कि सारिपुत्र, अब तू जा और मेरे संदेश को सब लोगों तक पहुंचा। सारिपुत्र उठा, नमस्कार करके चलने लगा। आनन्द बुद्ध का दूसरा शिष्य था, उसे अब तक ज्ञान नहीं हुआ था, उसने बुद्ध से कहा कि इस भांति मुझे कभी दूर मत

भेज देना। मुझे कभी ऐसी आज्ञा न देना कि मैं दूर चला जाऊं। मैं तो समीप ही रहना चाहता हूं। बुद्ध ने कहा कि तुम समीप नहीं हो इसलिए समीप रहना चाहते हो। सारिपुत्र कहीं भी रहे वह मेरे समीप ही रहेगा। बीच का फासला अब कोई फासला नहीं। सारिपुत्र जाकर गांव-गांव, जगह-जगह संदेश देता रहा। लेकिन रोज सुबह वह उठ कर जिस दिशा में बुद्ध होते, उनके चरणों में सिर धरता। उसके शिष्य पूछते कि सारिपुत्र, अब तो तुम भी स्वयं बुद्ध हो गये—अब तुम किसके चरणों में सिर रखते हो? अब क्या है जरूरत? सारिपुत्र कहता कि जिनके कारण मैं मिट सका, जिनके कारण मैं समाप्त हुआ, जिनके कारण मैं शून्य हुआ। तब दूसरे शिष्य कहते कि बुद्ध तो यहां से बहुत दूर हैं, यहां से चरणों में किये गए तुम्हारे प्रणाम कैसे पहुंचेंगे तो वह कहता कि अगर वे दूर होते तो मैं उनको छोड़कर आता ही नहीं। छोड़कर आ सका इसी भरोसे कि अब कहीं भी रहूं, वह मेरे पास हैं। एक सम्बन्ध है बाहर का जो शरीर से आता है। शरीर कितना भी निकट आ जाए तो भी फासला बना रहता है, शरीर के साथ कोई निकटता होने ही नहीं पाती। कितना ही निकट ले आओ, आलिंगन कर लो किसी का, फिर भी बीच में फासला बना ही रहता है।

दो शरीर कभी एक नहीं हो पाते हैं। शरीर का होना ही पार्थक्य है। फिर एक और आंतरिक सामीप्य है। सारिपुत्र उसी की बात कह रहा है। वह कह रहा है कि अब फासले टूट गए हैं। अब कोई स्पेस, कोई जगह बीच में नहीं है। अब मैं नहीं हूं, बुद्ध ही हैं या कहें कि बुद्ध हैं, मैं नहीं हूं। एक ही बात है।

इससे ज्यादा एक बड़ी घटना और घटी कि कहते हैं कि महाकश्यप अपने ही पैर छू लेता था। लोगों को बहुत अजीब लगता होगा। महाकश्यप बुद्ध का दूसरा शिष्य था और सारे शिष्यों में अद्भुत था। महाकश्यप अपने ही पैर छू लेता था और लोगों ने उससे कहा कि तुम यह क्या करते हो? तो वह कहता कि बुद्ध के चरण छू रहा हूं। लोग कहते कि यह पैर तुम्हारे हैं। महाकश्यप ने कहा कि अब उनसे इतनी निकटता आ गई है कि वे भीतर ही हैं। पैर उनके ही हैं। महाकश्यप कहता है कि मैं किसी का भी पैर छुऊं, वे बुद्ध के ही पैर हैं। इतनी समीपता भी बन सकती है। इसलिए महावीर कहते हैं कि उनके पास रहता हो, उनके निकट होता हो, इस निकटता में भौतिक निकटता ही अंतर्निहित नहीं है। ★

तुलसी मानस प्रकाशन की उपलब्धियां

हरिकिशनदास अग्रवाल द्वारा लिखित

संक्षिप्तरूप में आधुनिक ढंग से आध्यात्मिकता की ओर प्रेरित करने वाली जीवनोपयोगी पुस्तकें

१. संसार का सार (हिन्दी में) ३–००
२. ज्ञान साधना : ३–००
३. विज्ञान से ज्ञान : १–००
४. वेदान्त-नवनीत : ३–००
५. वेदान्त का सरल बोध : २–००
६. आध्यात्मिक पिक्टोरियल (हिन्दी व अंग्रेजी) : ४–००
७. आध्यात्मिक डायरी १९७४ ६–००
८. आध्यात्मिक चित्रावली (हिंदी-इंग्लिश) पाकेट बुक ६–००
९. मुमुक्षु (शिक्षाप्रद उपन्यास) ५–००
१०. मन की शांति (पद्य) : अंग्रेजी 'पीस ऑफ माइंड' का हिन्दी अनुवाद ४–००
११. हमारी परंपरा : २–००
१२. आराम सुख शांति और आनंद : १–००
१३. Ease Peace Happiness and Bliss (English) 0–25
१४. अपनी ओर इशारा : १–००
१५. व्यवहारिक जीवन और परमात्मा : १–००
१६. श्मशान यात्रा : १–००
१७. मेरे १०८ गुरु : ३–००
१८. सजगता : १–००
१९. अविरोध-निरोध और स्वबोध : २–००
२०. वेदान्त का वैज्ञानिक मनन: २–००
२१. चिंता और निश्चितता : २–००
२२. मन के पार : विकट प्रश्नों पर आचार्य श्री रजनीश जी के उत्तर : १–००
२३. घर-घर की समस्या : २–००
२४. पीस आफ माइन्ड : (अंग्रेजी में) ५–००
२५. क्वायटर मोमेन्ट्स : (अंग्रेजी में) : २–००
२६. मनन योग्य बातें : १–००
२७. उनके सान्निध्य में : २–००
२८. जाग रे जाग ४–००
२९. जाग्रत-जाग्रत : ०–५०
३०. आधुनिक वेदान्त : २–००
३१. आंखों देखी २–००
३२. बात-बात में बात ३–०० (आध्यात्मिक उपन्यास)
३३. अध्यात्म–नवनीत २–००
३४. साधना शिविर ३–००
३५. ज्ञान प्रेम १–००
३६. 'मनन' आध्यात्मिक मासिक वार्षिक शुल्क : ६–००

ग्राहक एवं एजेन्ट्स एवं पुस्तक विक्रेता पत्र-व्यवहार करें

तुलसी – मानस – प्रकाशन

अन्तर्गत विभाग केबल मार्केटिंग कम्पनी

गुप्ता मिल्स स्टेट, रे रोड, बम्बई–१०

श्रीरजनीश आश्रम, १७, कोरेगांवपार्क, पूना १

भगवान श्री के प्रवचन तथा
समाधि साधना शिविर

११ जुलाई से २० जुलाई तक : पिब पिव लागी प्यास (दादू वाणी)
समाधि साधना शिविर हिन्दी भाषा में

२१ जुलाई से १० अगस्त तक : गीता अध्याय १८ पर (हिन्दी प्रवचन)

११ अगस्त से २० अगस्त तक : दि फर्स्ट प्रिंसपिल (झेन कहानियां)
समाधि साधना शिविर (अंग्रेजी में)

□ साधना शिविरों में शामिल होने हेतु पूर्ण जानकारी के लिए उपर्युक्त पते पर मा योग लक्ष्मी से सम्पर्क स्थापित करें। □

समर्पण योग शिविर

★ गुरु पूर्णिमा महोत्सव ★

दिनांक २१ जुलाई से २३ जुलाई तक

स्थल : मधुबन माधवपुर (घेड), तहाया : केशोद (सौराष्ट्र)

प्रवेश शुल्क : समर्पण।

साधक अपना बिस्तर साथ लावें। वर्षा में साधकों को पर्णकुटी में प्रकृति के सान्निध्य में रहना होगा और २० जुलाई की शाम तक माधवपुर पहुंच जाना जरूरी है। भोजन की व्यवस्था मा अन्नपूर्णा की ओर से रहेगी।

पत्र-व्यवहार हेतु सम्पर्क : स्वामी कृष्ण जरथ्रोस्त
(धीरू भाई दवे, राजकोट)
मार्फत : रूपम साइकिल स्टोर्स,
हरीश टाकीज के सामने
पोरबंदर (गुजरात)